

परमपंदित श्री देवचद्रजीकृत आगमसारोद्धार.

्रतथा

अध्यात्मगीता.

कुतरिवजयनी (अमीकुतर) कृत टवासह

शा छानळाल लक्ष्मीचद-घढुना

शा प्रेमचद दल्सुलभाइ-पादराना

एमनी द्रव्य स्हायथी

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्री अध्यात्मझानपसारक महळ

यक्षील भीवनलाल दोमचद—पादरा
१९९८ सन १९२२

वकील मोहनलाल हीमचद स पादरा ( गुनरात )

छाती प्रसिद्ध €यें

पुस्तक मळवाने देवाण --

चडीदरा-िवापुरामा स्हाणामित्र रहान प्रसमा विरलमाइ भारतराम टकरे प्रकाशको माने ता २६-५-१९ ना रोग

## प्रस्तावना.

अन्यात्पज्ञानरसीक द्रव्यात्योगना समर्थ ज्ञाता श्रीभद्द टेवचद्रजी महाराजनुं नाम भाग्येज कोइ जैनधी अजाण्यु हुन्ने, आगम ज्ञाननी कुचीश्य आगमसार नामनी ग्रय तेओशीए सवत १७७६ ना फागण मासमा मोटाकोट-मरोट-मां चोमासु रहीने बनावेल से अर ग्रथनी उत्तमता ग्रथ पोतेज सिद्ध करे से तेनी

प्रस्ता करवी ते सीनाने गील्ट करवा जेउ छै ने ग्रंथ वाचवार्थी जणाइ आउद्ये आ ग्रंथ अभ्यात्महानरसिक श्रीमद् युद्धिसागर सुरिजी महाराजना सदुपदेशयों वह तालुकै पादराना

भा छगनलाल छक्ष्मीचद ता पादराना ज्ञा

छपाबी तेनी १०००) नकल भेट तरीके आपी इती तमाम नकल खपी जवापी अने तेनी वर्णा मागणी चाउ रहेवायी उक्त सुरिमी महाराजना सदपदेशभी तेनी आ धीजी आहती

वेमचद दलमुखभाइए सं १९६७ नी सालमां

इन्डा थवापी महके आ अर्ता उपयोगी प्रयनी बीजी आहुनी बहार पाडी छे ते माटे ते चने प्रहस्थीने थर्यबाद घरे छे आ प्रथ मकरण रस्ताकर पहेला भागमा छपायलो छे तेमां तथा पहेली आहुतीमा

पोतानाम खर्चे छपावचा सदर पने ग्रहस्थीनी

मितपापुना तथा गुणस्थानक विचार नामना अगत्यना विषयो छपायला नहोता पण ते पछी श्रीमद्व देवचद्रती महाराजना बनावेला सुरतना श्री मोहनलालनी महाराजना भंडार-माधी वे पतो न ४०९-५६३ नी मळी तथा प० श्री लाभविजयजी पासेथी एक पत तेमज

पादराना भडारमाथी एक प्रत मळी ते चारे प्रतोमा आ ग्रथना पृष्ट ५५ नी पहेळी ळीटीथी

तमाम ग्रयो छ्पाववानी महती करता आगम्-सार ग्रथनी घणी मतो भेगी करी जैमा

शरु घतो प्रतिमापुजानो तथा पृष्ठ २०४ थी शरु घतो गुणस्थानक विचार ए यने विषयो दाखळ हता तेषी आ ग्रंपमां ते जे ते स्थळे दाखळ करी लेवामा आयेला छै पादराना

भडारनी पत तथा प लाभविजयजी वाळी मत तैओशीना पादराना सग्रहमां मोजुद छे

मत तैआश्रीना पादराना सग्रहमाँ मोजुद छै हारुनी मोपनारीना लीधे आ ग्रंथनी विशेष लाभ लेवाय तैरला माटे महळना नियम मुजन पहतर्थी ओछी मात्र र ०-६ ० किमत राखवामां आवी छे आत्माधीं जनी तेनो सारी रीते लाम छेत्रे पवी आजा है आगपसारनी पहेली आहतीमां श्रीमङ देवचद्रजी महाराजनी बनावेळ अध्यान्मगीता ग्रथ टवा सह टालल कर्यो हती पण हालमा सदर ग्रथ खपर श्री इत्यरविजयजी अपर नाव अमीक्वरजी माहाराजनी बनायेली ट्वो मर्जा आववायी ने ते विस्तारपुर्वक उत्तम रीते लखायला होबाधी तेटबो आ अथमी दाखल करवा अमारा परीपकारी गुरुमहाराज श्रीमद सरिजी महाराजे मेरणा करवाथी

पहतर किंमत ०-१०-० आनेल छता तेनी

ते दाखल करेल छैं ने ते एक बखत अवस्य वाची जवा आग्रहपुर्वक भलामण छे आ ग्रंथ छपाववामां जमेटाना शेठ फ़ुलभाइ मानभाइ जेओ आत्महाननी रुची

तेमज गाम उछदनी बाइ माणेक ते जा नेमचद मोतीचदनी दीकरीए रु ५०) अपिला है तेमनी आभार मानवामां आने है छैबटे आ उपयोगी ग्रथ बहार पाडवा

वाळा है तेओए र १००) आपेला है तैमनो

माटे मेरणा करनार परम प्रज्य गुरुश्री युद्धिसागरसूरिजी पाहाराजनी उपकार मानी

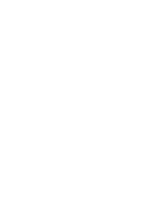
आ प्रस्तावना पूर्ण करवामा आवे छे

पादरा-अक्षय ] वकील मोहनलाल रुतिया १९७८ हैं। मचद



शुद्धिपत्रक.					
र्वह	र्गिटी	अशुद्ध	शुद्ध		
16	१३ गुण	अनता छे	गुण एक छे गु अनता छे	ণ	
18	५ पर्या	व छे	पर्याय छे ते अनेव	5-	
२३	९ नधी		पणुछे नथी, एमन अ	<b>!-</b>	
			काशास्तिकायने वि		
			आकाशनाज म्ब : व्यादिक चार		
ţ.,			पण वीनामा प	च	
*			द्रव्यना नधी		

३० १४ द्रव्यक्षेत्र स्वक्षेत्र



	रर	
९१	५ एग	एम
९७	१४ ( छेडे उमेर्यु )	एम नयचकमारमा
		क्छु छे
९८	११ नैगमें	शुद्ध नैगमे
१०३	१० निर्गुणगो	निर्गुणनो
१०६	२ माटे	माटे
११०	२ परद्रव्यना	परद्रव्यना
113	११ युगगत	युगपत्
११५	१२ रह्यों छे	ग्ह्यो छेतथा अव
		र्मास्तिकायनो एक
		प्रदेश रह्यो छ
११५	१४ कोइ द्रज्य	को इद्रव्य को इद्रव्य
११६	७ धर्मास्किय	धर्मास्तिकाय
१२४	९ सागरोपमना	सागरोपमत् छे तेना

रेश्र १३ तेहनी पहनी	१ ४ ६ १ ६ ७ १ ६ ७ १ ६ १ २ १ १ २ १ १ २ ६ १ २ ६ १	११ पोपान १ उसमा ८ तना ७ पारिश्रत १ ९ ६ १ १ ९ देश ११ तेडनो ११ अध्याङ ७ प्रम्य	
	348	७ धन्य	अन्यापक
१५४ ७ धन्य अध्यापक	.,,		
२६४ ७ घन्य सम्य २६१ ७ मन			
२६४ ७ घन्य सम्य २६१ ७ मन			

શ્રી અધ્યાત્મન્નાનપ્રસારક મહળ તરફથી મીમદ્ ખુદ્ધિસાગરમુરિજી મન્યમાળામા પ્રગઢ થયેલા મન્ધા

કિ મત સ થાક 48 ૧ ક્દ લાજન સગઢ લાગ ૧લે৷ ૨૦૦ 0-6-0

× ૧ અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમાળા 204 0---× ૧૧ ભાજનસ ગ્રહ ભાગ ૨ જો ૩૩ ૬ 0 (-0

× 8 લાજનસચઢલાય ૩ જી ૨૧૫ o 2-0 × ૪ સમાધિ શતકમ 95.0

0--2--0 × ૫ વ્યનુલવ પશ્ચિથશી. 0-/0 286

૬ વ્યાત્મપ્રદીપ 0- ( 0 P # 3 × ૭ લાજનસમદ લાગ ૪ શે. ૩૦૮ 0 4-0 ૮ પરમાત્મદર્શન 835 0 12 0

× ૯ પરમાતમજ્યોતિ 400 0 12 0 ×૧૦ તત્ત્રમિદ २३० 0-8 3

× 11 શુષાનુરાગ (આદૃત્તિ બીજી) ૨૪ ૦-૧--૦

× 1ર-13 લજનમગઢ બાગ પંગે

તથા જ્ઞાનદીપિત

₹ × ૧૪ તીર્થય અનુ વિમાન (આ બીજી) દે જ ૦ ૦ × १५ मध्यातम सजनसमद १६० ० १०० × ૧૬ ગામમાધ 9-8-0 × १७ तरम्यानदीपिश्च १२४ •-१-० ૧૮ ગલુનીસગઢ ભા. ૧ ૧૧૨ ૦-૩ • × ૧૯⊶૧૦ શ્રાવાધર્મસ્વર≀ ભાગ ૧–૨ (आरति त्रीक्) ४०-४०-१-० × २१ क्षेत्रन पह समेद कांत्र हो। २०८० १२ • રક ચાેગદોષક 306 . 15. २४ केन जैनिकासिक रासभाणा ४०८ १-०-० × > ૫ મ્યાનન્દ્રધન પદસગ્રેય બાવાથ સદિન × ૨૬ અલ્લાભ શાન્તિ (આયૃતિનીજી) દુરર ૦ > ૦ २७ हाज्यसम्बद्ध साथ ७ मे। १५६ ०८० × २८ कैनधमनी आयीन अने अनी ચીન સ્થિતિ Woz.

a				
× રઢ કુમાગ્યાય ચરિત્ર (હિંદી) ર				
ટ૰. થી ઢ૪ સુખસાગર ગુરગીતા	300 6 % 0			
aપ ષડ્દ્રવ્ય વિચાર	२४० ०४०			
× ३६ विलापुर द्रतात	60 0-8 0			
૩૭ સાળરમતી કાવ્ય	464 0 3 0			
૩૮ પ્રતિજ્ઞા પાનન	૧૧૦ ૦૫૦			
૩૯-૪૦-૪૧ જૈનગ=૭૫ત પ્રનાધ				
સ ધપ્રગતિ જૈનગીતા	900			
૪૨ જેન ધાતુપ્રતિમા લેખ સગ્રહ	100			
४३ भित्रभैत्री	• < 0			
× ૪૪ શિષ્યાેપનિષદ્	०२०			
ે ૪૫ જૈનાેપરિષદ્	86 0-5-0			
૪૬-૪૭ ધાર્મિક ગદ્યસગ્રહ તથા પત્ર				
	७७६ ३-००			
	608 300			
	१०२८ २००			
૫૦ કર્મયાગ	१०१२ ३००			

पर आत्मतात हर्न न पर भारत सदकार विदाण 112 -- 10 0 પેક શ્રીમદ<sup>ેટ્</sup>વચદ્ર <del>થા</del> ૨ 116 0 100 પેજ ગલ્લી સમદ બાર 1200 360 ५५ कमें प्रकृतिगृह्यापातर 180 020 પર સકગીત સહની સચહ ( · . . . . ५७-५/ आममसार अने अध्यात्म 160 0 2 . × આ નીશાની વાળા ઘથા સીલકમા નથી No 0-1-0 विषरना पुरुषके। भगवान देवाल વકીય <sub>માહન</sub>યાલ હીમચદ (शुक्रशत ) ४ हरा

### ॥ श्रीसर्वज्ञाय नगः ॥

ા અપ 🛙

## ॥ श्रीमत्पंडितश्रीदेवचंद्रजीकृत ॥

### आगमसार.

भन्यजीवने प्रतियोपमा निमित्ते मोक्ष-मार्गनी वचनिका फडे छे तिहा प्रथम जीम अनादिकालनो मिन्यात्वी हतो ते काललन्धि पामीने त्रण करण करे छे तेना नाम-पहेलु यथागृहत्ति करण, बीजु अपूर्व करण, अने

शीज अनिवृत्ति करण.

# तेमां पहेल प्रधापरित परण कहे हैं । झानारमणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ दिनीय,

आगमसार

फोडाबोटी सागरोपमकी स्थिति छे. नेमा अगणोतेर खपावे, यारी एक कोंडाको क्षेप राखे । एवी रीते एक आयुक्त वर्जा वामी साते कर्मनी एक्पल्योपमना असर्य भागेन्यून एक कोडाकोडी सागरीपम

s अतमप, प चार पर्मनी त्रीस कोडाकोडी

सागरोपमनी स्थिति छे, तेमार्था औगणतीस कोडाकोडी खपारे अने एक कोडाकोडी वार राखे, तथा ? नायकर्थ, ? गातकर्थ, प

कर्मनी रीस कीडाकोडी सागरीपमनी स्थि

डाकोटी राखे, अने मोहनीय कर्मनी सिर्

छे, नेमाथी ओगणीस सपाने अने एक क

स्थिति राखे, एवो ने वराग्यरूप उटासी परिणाम तेने यथाप्रहत्तिकरण कहिये ए पहेछ करण, सर्वसन्नी पर्चेट्रीजीव अनन्तीवार करे छे हवे बीज अपूर्वकरण कहे है ते एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिमाँ हैथी एक मुहर्त्त अने अनादि मिथ्यात्व ने अनतानुप-**धीआनी चोकडी ते रापायवाने अज्ञान हैय** ते डांडबु, अने ज्ञान उपादेय एटले आदर्जु, ए बाँडारूप अपूर्व कहेता पहेला त्रयारे न आब्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्व करण कहीये, ए तीजु करण ते समकितयोग्य जीवने भाग हो त्रीज अनिष्टत्ति करण करे छे ते-मुहर्तेरूप स्थिति खपात्राने निर्मेछ शुद्ध

भागममार

## कित पामे मिथ्यात्वनो उटय मटे त्यारे जीवे

अनिर्दात करण किर्देग ए करण कीर्पार्था गृहीमेंद्र ययो कहींच उक्तें अवस्पत्रनि कुकी "जा गही ता पहन । गही तामय छेओ भवेत्रीओ ॥ अनिअहिकरण पुण । मनताई स्वाहेजीव ॥ २ ॥ उत्तर देस देहुं लिय च । विज्ञात पार्थे पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य पण हव ॥ विज्ञात स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य स्वाहेजीव ॥ प्रमुख्य स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य स्वाहेजीव ॥ प्रमुख्य स्वाहेजीव ॥ २ ॥ प्रमुख्य स्वाहेजीव स

उपश्रम समकित पाये, पत्री जे परिणाम ते

उत्तसप्तम्म रुहर् जीवी ॥२ ॥ एम मिथ्या-त्यनी उदय मञ्जापी जीव सपक्ति पामे, ते समिक्तिनी सहहणाना वे भेद छे, एक ध्य बहार समक्तित सहहणा, बीजी निश्चय सप

वहार समक्तित सदहणान व भद छ, एक व्य बहार समक्तित सदहणा, वीजी निश्चय सय सदहणा टेयशी-रिहत देवाधिदेव, अने गुर जीगमनार-

मुसाधु ने मूंबो अर्घ कहे ते; तथा प्रम केव-होनो परप्यो ने आगममां सातनय नथा एक प्रत्यक्ष पांचु प्रशेष ए ये प्रमाण अने चार निसेष करी सदहे, एपी महहणा ते व्यवहार समित्रत कहिये ए पुण्यमु कारण तथा अर्म प्रगट करबानु कारण हो एपी गिच ज्ञानिवना पणाचणा गींगोने उपजे.

त्रीञ्ज निथयसमाकित ते आवी गीत जे निथय देन ते आपणीम आत्मा जीन निष्यत्रवरूपी सिद्ध ते सगदनयनीमचागतेपता, तथा
नेश्रयमुमतेपण आपणी जात्मान सत्रत्रमणी,
भने निश्रयमं ते आपणी जीतनी स्वगावन
रे पनी सहरणा ते मोसनु कारण उत्केमके
नियं संरप आरण्या निना क्रिके

एवी श्रद्ध सददणा ते निश्चयसम्बित इने गाननु स्वरूप कहे छे ते शानना है

भेट छे एक व्यवहारज्ञान, बीजु निश्चयज्ञान, तेमी अन्यमतिना सर्वशास जाणवा अथवा जैनागमम ये स्था ने एकगणितात्रयोग है क्षेत्रमान, वीजो चरणकरणात्रयोग ते किया

विधि, त्रीनी धर्मप्रयात्त्रयोग ए त्रण अनुयी गत जाणपापण ते सर्व व्यवहारज्ञान है अयवा अन्तरस्पयोगविना ने मत्रना अ करवा ते पण ध्यवहारहान कहियें

हवे निश्चयज्ञान वे छ द्रव्य सथा सेना गण अने प्याप सर्वने जाणे तेमा बाच अजीव

छ ते हेय-कहेतां छाडवायोग्य जाणी अने एक जीवड्रव्य ते निश्चचेंकरी



् आगमतार अचेतन, नाजो अस्ति, चौथो गतिसहायपुण वीजा अर्थाहितरायना पण चार गुण है एक अर्थी, योजो अचेतन जीजो अक्रिय, अने चौथो स्थितसहायगण जीजा आसा-

शास्तिकाषद्रव्या। चार गुण छे एक अरपी,

बीनो जनतन, तीनो अतिय, चोयो अवसा हना बानगुण हन काल्ट्रव्यना चार गुण कह छे एक अर्था, तीनो अंचतन, त्रीनो अक्तिय, चोयो ननापुराणवर्षनाल्सण हवे पुट्रल्डव्यना चार गुण कहे छे एक स्वा, बीनो अन्तन, तीनो सहिय चोया मिन्न

विसरणरप पूरणभटन गुण हव जीवहन्यना १९ गुण यह छे पर अनवज्ञान, बीजी १ प्रेन, बीजी अनत्ववारित, चीथी आगमसार ९ अनततीर्घ, ए छ द्रव्यना ग्रुण कया ते निस्य-अप्र छे

हवे ७ द्रव्यना पर्याय कहे है अर्मास्ति-

कायना चार पर्याय छे एक खन, तीजो देश, त्रीजो मदेश, चोनो अगुरुळगु अन्मास्ति-कायना चार पर्याय एक स्त्रा, बीजो देश, त्रीजो मदेश, चोषो अगुरुळधुः शुक्ळड्ड्यना

चोयाँ स्पर्ध अगुरुलधुमहित; तथा आकाशा-स्तिकायना चार पर्याय एक स्वरं, बीजी देश, बीजो मंदेश, चोथी अगुरुलपु; काल-

चार पर्याय एक वर्ण, वीजी गव, वीजी रस.

न्व्यना चार पर्याय एक अतीन काल, बीजो अनागत काल, त्रीजो वर्षनाच काल, चीधो अगुरुलपु; अने जीव द्रव्यना चार पर्याय

आगमसार एक अन्यानाथ, तीजो अनवगाह, त्रीजे

अमृत्तिक, चोषो अगुरुलघ् ए उ इच्पन पर्याय वना

4\$

हवे छ इच्यना गुणपर्यायनु सामर्म्यप् कहे छ अगुर ल्घुपर्याय सर्वद्रव्यमा सरीखो छै अने अस्पीसुण पाच उच्यमा छे एक

पुट्रखद्रव्यमा नथी, नथा अचेतनगुण पाँच द्रव्यमा छे एक जीवहच्यमा नथी, अने स-कियगुण जीव तथा पहल ए वे इब्यमां छे

गुण एक वर्मास्तिकायमा छे, जीवा पाच इच्पमां नयो. वली स्थिरसहायगण एक अधर्मास्तिकायमा छे बीजा पाच इच्यमा नथी,

अवगाहनाग्रुण ते एक आकागद्रव्यमा

याकी चार द्रायमां नधी. तथा चलणसहाय-

आगंप्रसारः २१ छे, बीजा पाच इच्यमा नथी; अने वर्तनागुण ते एक काल्द्रच्यमान छे, बीजा पाच इच्यमां नथी; तेमन मिल्रणतिखरणगुण ते पुहलमां छे, बीजा इच्यमा नथी तथा ज्ञान—चेतना गुण ते

ए मूलगुण कोइ इन्यना कोइ इन्यमा मिले नहीं एक धर्म बीजो अपमें, त्रीजो आकाश, एत्रण द्रव्यना त्रण गुण तथा चार पर्याय सरिखा छे अने त्रण गुणें करी तो कालद्रव्य

एक जीव द्रव्यमा छे, पण बीजा द्रव्यमा नथी

हवे बलो अग्यार वोले करी छ द्रन्यना गुण जाणपाने गाथा कहे छे परिणामी जीव ग्रुचा, सपएसा एग

लित्त किरिआय। निश्च कारण कत्ता,सद्याख

पण ए समान छे

### MINISTER T इयर अप्यवसे । र ।

अर्थ-निश्यनयथी जाप जापणा स्त्र भाव अप दृष्य परिणायी अ अने व्यवहारन यथी जीव दश पुरुष प इटप परिणामी हैं त्या एक प्रमे, बीना नामे, बीनो जाराय

अने चाथा जारू प चार दृष्य अपरिणामी हें तथा छ द्रव्यमा एक जीव द्रव्य ने जीन छे, बीजा पान दृष्य अजीन हे तथा छ दृष्य

या एक प्रहर स्पी है जने पाच द्रवय अस्पी

हे हा हायमा पाच हत्य समदेशा है, अने

पक् काल इत्य अवदेशा छ तेमा एक उपा स्तिराय पानी अवमास्तिराय ए व इन्य असंख्यात मदर्शा छे अने एक आफागद्रव्य

की छै जीन द्रव्य असरयात मदेशी

छे, पुरुष्रमाणु \* अनतप्रदेशी छे, परमा-णुओ अनता छे एम पाच द्रव्य सप्रदेशी छे

अने छहो काल अभदेशी छे छ द्रव्यमा एक धर्मास्तिकाय, वीजो अधर्मास्तिकाय, त्रीजो आकाशास्तिकाय ए प्रण ते एकेक इच्य छे, तथा एक जीव इच्य र्वीजो 9द्रल द्रव्य त्रीजो कालद्रव्य ए त्रण

अनेकअनेक हैं, ह द्रव्यमा एक आकाशहब्य र्सन छे, अने बीजा पाच द्रव्य क्षेत्री छे: ं निश्चयनयर्था छ द्रव्य पोतपोताना कार्ये सदा मन्तें छे माटे सिक्रय है; अने व्यवहारनवधी जीव अने प्रदूल ए ने द्रव्य सक्तिय छे, तेमा पण पुद्रल सदा सिकय छे, अने जीव द्रव्य

प्रत्लास्तिकायना स्कन्बो पर्यायो अनन्तप्रवेशी छे.

#### आगममार

12

तो सतारी धड़ो सिक्रव छे, पण सिद्धअव-स्थार्य धड़ो समारी द्विया करवाने अकिय दे, तथा बाडीना चार डाय तो अकिय छे; निश्चपनपर्धी छ इच्च निस्य छे ध्रव छे, अने

उत्पाद्रव्ययें करी अनि यापे पण छे तथा व्याद्यास्त्रय जोर अने पुद्रल ए वे द्रव्य अ-नित्य छे, वाक्षीना चार द्रव्य नित्य छे, ययपि पर्ताद्रव्ययुव्यये सर्व यदाथ परिणमे छे नोषण एक वर्ष, वीजी अवर्ष, तीजी आकात्र.

उ उत्थमा पर जार द्वाय नकारण छे अने पाच उच्य कारण छे केमक पाचे द्रव्य भोगमा आंदे छे माटे कारण वहिये.

चोधो पाल, ए चार इच्य सहा अवस्थित हे

ते माटे नित्य उद्या



कद्यां तथा घणी मतोमा तो सक्ष्मे पटर्छ छै ने छ द्रव्यमां एव जीव द्रव्य बारण छै.

पाच द्रव्य अकारण छे ए पण बात धर्णी रीते मलती छे माटे ने बहुझून कहे ते खर मारी बारणा पमाणे जीवद्रव्य कारण अने पाच द्रव्य अकारण एम समवे हे" निश्रं यनपर्धा छए द्रव्य कर्चा छे अने व्यवहारनर्थे एक जीवद्रव्य कर्चा छे दाकी पाच द्रव्य अक्रता छे. छ द्रव्यमां एक आराशद्रव्य सर्वेद्यापी छे, अने पाचद्रव्य लीव द्यापी छै छण द्रव्य एक स्ट्रेशमा एक्टा रहा। उ पण एक बीजा साथे मनी जाय नहीं ष छ द्रव्यनो विचार करो

े पुरेषा दृष्यमा एक नित्य, बीजो

सत्, छहो असत्, मातमो वक्तव्य, आठमो भवक्तव्यं, ए आठ आठ पक्ष कहे छे, धर्मास्तिकायना चार गुंठा नित्य छे तथा पर्यायमा बर्मास्तिकायनो एक खब नित्य छे बाकीना देश मदेश तथा अग्ररूछप पर्यायं अनित्वं छे अवर्षास्तिकायना चार गुण तथा एक लोकममाण खध नित्य छे अने एक देश, वीजो भदेश, जीजो अगुर-लघु ए त्रण पर्याय अनित्य छे तथा आफा-शास्त्रिकायना चार गुण तथा लोकालोकप-माणखध नित्य छे अने एक देश, बीजो मदेश, त्रीजो अगुरुलघु ए पर्याय अनित्य छे<sub>ं</sub>तथा कालद्रव्यना चार ग्रणः ी

### 20

अने चार पर्याय अनित्य छे. पुद्रल द्रव्यना ' चार गुण नित्व अने चार पर्याय अनित्य छे जीवद्रव्यना चार ग्रुण तथा त्रण पर्याय नित्य छे अने एक अग्रुरलघु प्याय अनित्य छे

ए रीते नित्यानित्यपक्ष कहारे इवे एक अनेकपक्ष कहे छे एक धर्मा-स्तिमाय बीजो अवमोस्तिमाय ए वे द्रव्यनी म्बन को मामाश्रमाण एक छे अने गुण अ-

नता छ पयाय अनता छे पदेशअनता छे े अने रू छे, काल द्रव्यनो वर्तनास्य गुण

है, पर्याप अनता है, केमके समग्र

नक छे पर्यायअनता छे प्रनेश असन्त्वाता छे, तेण करी अनेक छे, आक्राशहच्यानी लोकालोकमणाणस्य एक हो अने गुण अ-

आगसमार, अनता छै अनीत काछ अनंताममय गया

अने अनागतकाळे अनना समय आउदी तथा वर्त्तमानकाठे समय एक ठेमाटे अनेक पक्ष छे पुहलद्रव्यना परमाणु अनता छै ते एकेक परमाणुमा अनवागुण पर्याय है अने सर्वे परमाण्यमा पुत्रखपुण ने एकन छै माटे एक छे जीबद्वत्य अनना है एकेका बीतमा भदेश असम्याना उंतथा गृण अनना छे पर्याय अनता है ने अनेरपणु है पण जीविन तव्यपणु सर्वजीवनु वक्समीयुं उमाटे वक्षपणु रेहहा शिष्य पुरे रेते सर्व जीव **ए**व सरीला है ना मायनाजीव सिंड परमान्द मभी देखाय छै जन संवार्गजीय

पड्या दुःखी दखाय ३ अने ते सर्वे छुदा जुदा देखाय है ने केंस<sup>7</sup> नेहने गुरु उत्तर वहे ठे के निश्रयनये तो सर्व नीत्र, सिद्ध समान उ माटेज सर्व जीव वर्षे खपावीने सिद्ध थाय ठे तेपी सर्व जीवनी सत्ता एक ठै फिर शिष्य प्रुठे छे क जा सर्व जीव सिद्ध समान कही छी तो अभव्य जीव पण सिद्ध समान छे एम देर्यु (दर्यु) अने ते ती मोक्षे जवा नथी, तहने ए उत्तर जे अभव्यमा

आगमसार

20

परावर्त्त वर्ष नथी तवी मिद्र थता नथा माटे तेनो एहवोज स्वभाव है जे मोश जहूज नवी

अने भव्यजीवमा पराचर्च वर्ष छ मारे कारण

सामग्री मिले पलटण पामे, सुपक्षेणि चडी

मोश फरी सिद्ध थाय पण जीवना सुरय

आठ फ़ब्क मदेश जे छे ते निश्चयनपयी भव्य तथा अभव्य सर्वना सिद्ध समान छे माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरीखी छे केमके ए आठ मदेश्चने विलक्ष्कल कर्म लागता नथी ते "श्ची भावाग्राग सबनी श्वी सिलागाचार्य छत टी- फ़ाज़ लोकविजयाध्ययने मथमोदेशके साख छे तिशयी सविस्तरपणे जोड़ "

हमें सत् तथा असन् पक्ष कहे छे. ए छ इन्य ते स्वद्रन्य, स्वस्तेम, स्वकाल, अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे अने परद्रन्य, परसेन, परकाल तथा परभावपणे असत् एटले अछता छे तेनी रीत बताबवाने अथे छए उन्यना इन्य सेन काल भाव कहिये छॅथे पर्मास्तिकायनो मृल्युण चल्ला सहाव-

## રૂર कागमसार पणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनी युळगुण स्थिति सहायपणी ते स्वद्रव्य, आकाशास्ति

कायनो मृत्र गुण अवगाइपणो ते स्वह्रव्य, बद्रव्यनी मूळ गुण वर्षनालक्षणपणी ते इच्य, तथा प्रहलनो मृलगुण पुरणगलन-ते ते स्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनी मुलगुण

नारिक चेननारक्षणपणी ते स्वद्रव्य ए उच्यनी स्वद्रव्यपणी कही

हवे स्वक्षत्र ते द्रव्यनो मदेशपणी छे ते

ानाडे डे तिहा प्रकथर्माहितकाय, बीजी नथमंस्तिमात्र ए वे द्रव्यनो स्वक्षेत्र अस्रव्य

भटेश छे भने आफाशदृष्यनो स्वक्षेत्र अनत

भदेश छे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्र समय छे प्रदृ-

लद्रव्यनो स्वभेत्र एक परमाणु छ ते परमाणु

अनेता छे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असेरपाता भदेश छे

हवे स्वकाल ते छए द्रव्यमा अगुरुळघु-नोज छे अने ए छ द्रव्यना पोतपोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो एटळे पर्पास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल

भारतकापमा पातानाम द्रव्य सन् काल भार छे पण बीजा पाच द्रव्यना नयी. तथा अप्रमास्तिकाय द्रव्य मध्ये पण स्वद्रव्याटिक चार छे पण बीजा पांच द्रव्यना नधी काल द्रव्यमा कालना द्रव्यादिक चार छे गीजापाच

द्रव्यना नथी अने पुद्रलना द्रव्यादिक चार ते पुद्रलमान छे पण बीजा पाच द्रव्यना नथी रया जींब द्रव्यना स्वद्रव्यक्तिक चार ते जीवमा छे पण बीजा पाच द्ववया नथी

## ने इच्च ते सुण पर्यापपन, इच्पयी अंपेड-

ઝઇ

पर्याय होय ते द्रव्य पहिंचे तथा स्वर्धनेती आयास्वत्वणो ते क्षेत्र पहिंचे अन खत्याद व्यवनीवर्त्तना ते काल पहिंचे तथा विशेष

AUNGHU

गुण परिणति स्वभाव परिणति वयाय अधुन्ते ते स्वभाव कहिये च रांते छ ए इन्च स्वगुणे सत् छे अने पर गुणे असत् छे हवे बक्तन्य संधा अवकन्य पुत कहे छें

हरें वक्तन्य नेपा अवकट्य पक्ष कहें हैं ए छ द्रव्यमी अनता सुणयपीय ते वक्तन्य एटले पचने फहेंबा योग्य छे अने अनना सुणयपाय ते अवकट्य एन्डे वचने क्या

गुणपपाय ते अवक्तव्य प्रश्छे वचने क्या जाय नहीं एवा छे तिहा क्वली भगवते समस्त भाव दीठा तेने अनतमे भागे ने यक्तव्य पुरुष्ठे कहेवा योग्य हता ते कहा। वर्छी तेनी अनतमी भाग श्रीगण पर स्त्रमा गुंध्यी तेना असर यातमे भागे हमणा आगम रहा छे ए आउपस कहा

इहा १ भेद स्त्रभाव, २ अभेदस्त्रभाव ३ भव्यस्यभाव ४ अभव्यस्वभाव ५ परम-स्वभाव ए पाच स्त्रभाव कहेवा तेमा द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्वस्वकार्यने करवे करी मेद स्वभाव छे अने अवस्थानपणे अभेद स्वमात्र छे अणपलटण स्वभावे अभव्य स्वभाव छे तथा प्रलटण स्वभावे भन्य स्वभाव के अने दृष्यना सर्व धर्म ते विशेष धर्मने अ-ह्ययायीज परिणमें ते मार्ट हो परम स्वभाव फ़िर्चे ए सामान्य स्त्रभात्र जाणवा हवे नित्स तथा अनित्य पश्ची चौभंगी

जापावी

35

उपनी ते यहे छे एक जेनी आदि नथी अनै

अत पण नवी ते अनादि अनत पहेली भागी

अने जेनी आदि नधी पण अत है ने अनादि

सांत बीजो भागो तथा जेनी आदि पण है

-भागमार

त्रीजो भागो रही जेहने आदि उँ पण अन नथी ते सादि अन्त नामे चोषो भागो

इवे ए चार भागा छ इन्यमा फलाबी देखाडे है जीव द्रव्यमा ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनत है नित्य है, अने भव्य जीवने वर्म साथे सदार नथा संसारीपणानी आदि नधी पण सिद्ध याय तेवार अत आध्यो तेथी ए अनादि सात भागी है, अने देवता तथा

अत परले हैरेडो पण है ते साहि सात

नारकी मधुखना भर करवा ते सादि सांत मांगो है अने जे जीव कर्म खपात्री मोक्ष गया तेनी सिद्धपणे आदि ठे अने पाछो ससारमा कोइ काळे आवव नयी माटे अत नयी तेथी ए सादि अनत भांगो छे ए जीत द्रव्यमा चौभगी कही 'जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनत छे जीवने कर्म साथे सयोग ते अनादि सांत ठे केमके केबारे पण कर्म छटे ठे - ' इवे धर्मास्तिकायमा चार गुण तथा ख-

यपणो ते अनादि अनत छै अने अनादि सात भांगो नयी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुरुष्ठ ए ,सादि सांत भागो छै तथा सिद्धना जीवमां वर्मास्तिकायना ने प्रदेश रहा। छैते प्रदेश आश्रयीने सादि अन्त भागो छै एवीन शीते अपर्मास्तिकायमा पंण चौभैगी

₹6

जाणरी अने आकाश द्रव्यमा गुण तथा म्बेर्ष अनादि अनंत छ बीजी भागी नधी अने ? देश २ मंदेश तथा ३ अगुरलिय सादि सोत

हे तथा सिंद्धना जीवनी साथ सर्वर्ध ते सार्दि अर्नत है पद्रल द्रव्यमां गुण अनादि अनत है

जीव पुदुगलनी मंबन्व अभव्येन अनादि अनत छै \* भेव्ये जीवने अनादि सान है प्र-हर्जना खप सर्व सांदि सांत छे जे खप बा याँ ते स्थिति प्रमाणे रही खरे छै वली नग

चत्राय छै माटे सादि अनेत भागो प्रहेलिमा नथी

\* एसतिवणे जाणगी-आ शब्दो जुनी प्रवंपां हो

कालद्रव्यमा गुण चार अनादि अनत है, पर्यापमा अतीतकाल अनादि सात है अने वर्तमानकाल सादि सात है, अनागतकाल सादि अनत है ए कालतु स्वरूप ते सई उपचारधी है ए रीते कालद्रव्यमा चौभगी कही

इंबे इन्य क्षेत्र काल तथा भावमा चौ-भंगी रहे है जीर इन्यमा स्वद्रन्यथी ज्ञाना दिक गुण ते अनादि अनतं हेस्यक्षेत्र जीवनीं प्रदेश अर्सल्याता है ते सादि मातं है तसीदकें उद्देशनापणे फरे है ते पाट अथवा अवगाइना माटे सादि सात है पण उतीपणे तो अनादि अनत है स्वकाल अगुर छछने गुणे अनादि अनंत है अने अगुर छछ गुणनो उपनारी

आगमसार ₹0 तथा विणश्चे ते सादि सांत छे तथा स्वभाव (सर्वे भाव ) गुण पर्याय ते अनादि अनत

छे जने भेदा तरे अगुरलघु ते सादि सांत छे. धर्मास्तिरायमां स्वद्रव्य जे चलण सहाय

ग्रण ते अनादि अनत छे अने खरोत्र अस-रयात प्रदेश लोक प्रमाण छे ते अवगाहनाएणे

सादि सांत छे स्वकाल ते अगुरुलघु गुणे

फरी अनादि अनत छे अने उत्पाद व्यय ते सादि सांत डे स्त्रभाव ते चार गुण अगुरुलघ

अनादि अनत 🥇 १ स्वथ २ दश ३ मदेश ते अवगाहनाने ममाणे सादि सात है एम अध-

मीस्तिकायना पण दृष्यादि चार भागा जाणवा

तथा आकाशास्त्रिकायमा स्वद्रव्य अवगाहना-दान गुण ते अनादि अनत छे अने द्रव्यक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनत प्रदेश ते अनादि अनत **ठे स्वकाल ते अगुरुलघुगुण सर्वथापणे अनादि** अनत है अने उपजरे तथा विणसवे साहि सात ठे राभावते चार गुण तथा खय अने अगुरुलघु ते अनाडि अनत 🤼 तथा देश पदेश ते सादि सात है ते आजाश द्रव्यना वे भेद ठै एक चोटराज लोकनो खार लो-कामाश ते सादि सात है बीजो अलोमाश-नो सघ ते सादि अनत है \*

<sup>\*</sup> चडराग लोक्नो स्वय छोकाकारा सादि सांत छे ते आवी रीत ने लोक्ना मध्यमार्गे आठ रचक प्रदेशपी माडीने सादि छे जिहा चडदराज छोक्नो अत आवे तिहा सात तया चडदराज छो कनो छेछो प्रदेश मूक्तीने पठे अलोकनी सादि

35

आगामार

कार इन्यमा स्वइच्य ने नवा प्रसाणवः र्चना गुण ते अनादि अनत है स्वक्षेत्र समय (काठ) ने सादि सान छ केमने वर्तमान समय एक है से मादे तथा स्वकात ने अनाहि अनव है स्त्रभाव ते गुण चार अने अगुरुन्यु

थनादि अनत है अतीत काल अनादि सीन 🕏 अन पर्नमानकाछ सादि सात् 🕏 अनागत काल सादि अनत उ पुत्रल द्रव्यमा स्वडव्य ते द्रव्यपूर्ण जि

पूरणगलन धर्म त अनादि अनन्त है अने स्वक्षेत्र परमाणु ते साहि सात है स्वकाल स्थिति अगुरत्यपु गुण ते अनादि अनत उ छवी पण अजोरनो अन नयी मारे सादि अनन

नशु है

**33** िअगुरुलघुनो उपन्यो विणसयो ते साटि सात ं 🧦 स्वभावते गुण चार अनाढि अनत है ं प्रणांदि पर्याय चार एटले वर्ण गव रस स्पर्श

आगमसार

ंत साहि सात है ए द्रव्याहि चारमा चीभगी कर्हा हेर्ने छ द्रव्यना सरन्थ आश्री चौभगी कहे है, तिहा प्रथम आकाश द्रव्य है तेमा अलोकाकाशमा कोड द्रव्य नथी

अने लोकाकाशमा उ द्रव्य है, तिहा लोका काश द्रव्य तथा बीज अर्मास्तिकाय द्रव्य अने त्रीज्ञ अधर्मास्तिकाय द्रव्य ते अनादि अनत सन्धी है ने ब्लोकाकाशना एकेक मदेशमा धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो एकेक पटेश रयो रे ते पण कित्रारे निरेडसे नहीं नाई

अनादि अनत संपर्धी छ आकाश खेत्र छोड सर्व अने जीव द्रव्यना अनादि जनत सव्य

आगमसार

ठे, अने सतारी जीव कर्म सहित तथ

लोरना मदेशनो साहि सात सवन्ध<sup>7</sup> छोकान सिद्ध क्षेत्रना सिद्ध जीवीनी आकार मदेश माथे मादि जनन सपन्य है, स्रीका

काम अने पुरुष द्वायती अनादि अनत स बन्ध है, आकार पहेंचनी साथे प्रदल पर माणुनो साढि सात सर-व ठे एव आरा

इन्यनीपर वर्मास्तिकाय तथा अधर्मास् कायनो पण सर्व सपन्य जाणवो जीव अ

धुद्रलना सपन्यमा अभव्य जीवने पुरुष अनादि अनन सम्बद्ध है, क्यके नम्हण जीव

कर्म कियारे रापशे नहीं माटे, अने भ

जीवने कर्मने लागत अनादि कालने है पण ो कियारेक इटशे माटे भव्य जीवने पुरुष सम्ब अनादि सात है तथा निश्चयनपेकरी र्छ इच्प स्वभाव परिणाम परिणम्या छे ते परिणामीपणो सदा शाधतो रे ते माटे अ-नाडि अनत है अने जीव तथा प्रद्रल बेष्ट इध्य मिल बन भाव पासे है ते पर परिणा-मीपणो है ते परपरिणामिपणो अभव्य जी-पने अनादि अनत है अने भव्य जीवने अनादि सात रे अने पहलनो परिणापी र्षणो ते सत्ताये जनाडि अनत है अने पुट्ट-क्रिनो मिल्बो विज्ञहबो ने साहि सात ठै (परेंदे जीप इच्य पुरुष साथे मिल्यो सक्तिय हैं अने पुहल कर्मधी रहित धाय तेवार जीव

52

क्रिय है

इस्प अकिय उ अने पुरुष इस्प सदा स

द्य एफ, अनेर-पमधी निश्चय ज्ञान

गीणपणे अने मधानपणे उच्यती गुण सत्तानी प्रदेते द्रव्यानिक नय रहिये तैना दन भेद डे, सर्वे इ.प नित्य डे, इच्याधिक २ अगुरू लयु अने खेत्रना अपेक्षान कर मृत्र गुणने पिटवणे बहे ते एक इच्चाधिक ३ क्षानादिक ाणे सर्व जीप पर सरीरता है माटे सर्वने

महेवाने नय पढ़े है, सर्व इब्यमा अनेक स्त्रभार है, ने एक बानधी पद्मा जाय नहीं

मारे माहीमाह नये वरी सक्षेपपण कहे हैं,

निहां मूल नयना वे भेद है. एक इन्यार्थिय नीजो प्यायायिक, तमा उत्पाद च्यय प्याम आगमानाः ३७ एक जीन कहे, स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत् द्रव्यार्थिक जेम सत्वक्षम द्रव्यवम् / द्रव्यमा कोना योग्य सुण जनाकाः कः ते वक्तव्य द्रव्यार्थिक ६ आन्मान अवाकी करेगो ने

इच्यार्थिक ५ आत्मान अज्ञानी फहेगो ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक ६ सर्वे द्रव्य गुण पर्याय सहित है एम कहेंचु ते अन्त्रय द्रव्यार्थिक ७ सर्व जीत द्रव्यनी मूळ सत्ता एक छै ते पर-महत्यार्थिक नय ८ सर्वे जीवना आठ प्रदेश निर्मत्र है ते शुद्ध इत्यार्थिक नय १ सर्वे जीरना असरयात पटेश एक सरीखा ঠे ते सत्ता द्रव्यार्थिक नय, १० गुणगुणो द्रव्यः ते परमभावब्राहरा स्ट्यार्थिस जीम आत्मा ज्ञान-त्प ठे इत्यादिक ए इच्चार्थिक नयना दम भेद कह्या

इट आगमसार

हत प्यायाधिक नयना छ मेद कहे छे जे प्यायन ब्रहे ने प्यायधिक नय पहिंचे, नेना छ भेट टेर ट्रन्य पर्याय ने जीवने भक्तपणु कहेर, २ ट्रन्य स्थान प्याय ने उट्यमु प्रदेशभान, ३ मुण प्याय ने एक

गुणशी अनेरना थाय जेम वर्षाधर्मादिहन्य पेताला चलण सहसाराहि गुणधी अनेर्क जीव तथा पृहल्ते सहाय बरे, ४ गुण व्य-जन पर्याय ने एर गुणना यणा भेड हैं ६ स्वभाव प्याय त अमुरल्यु पर्यावधी जाणनी ए पाच प्याय सर्व द्रव्यमा है अने छड़ी विभाव पर्याय ने जीव पुहल ए वे द्रव्यमा

े तिहां जीव ने बार गतिना नवा नवा भव ते त जीवमां विभाव पर्याय कथा शुहरूमां संघपणु ते विभाग पूर्वाय जाण्यो

भागमसार

हवे पर्यायना जीजा उ भेड कहे है रे अनाहि नित्य पर्याय ते जेम शुक्ट द्रव्यनो मेरु प्राप्ता, र सादि नित्य पर्याय ते जीव

मेर प्रपुरा, २ सादि नित्य पर्याय ते जीन इन्पनु सिद्धवणु, ३ अनित्य पर्याय ते समय समयमा इन्प नपने निणन्ने ठे, ४ अशुह्र अनित्य प्रणीय ने नद्रम मरण थाय के तेपे

समयमा इन्य उपने निणन्ने ठे, ४ अशुरू अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे तेणे करो कहेनु, ५ उपानि पर्याय ते कमे सनन, ६ शुद्ध पर्याय को मृल पर्याय सर्वे इन्यना

६ शुद्ध पर्याय न मृत्र पर्याय सत्र उच्यना एक सरीसा ठे ए पर्यायाधिकतु स्त्ररूप कह्यु इसे सात नय कहे ठे १ नगम, २ अप्रह, ३ च्याहार, ४ ऋजु सृत्र, ५ शब्द, १ समिभिस्ड, ७ एव भृत-ए सात नयना ाम जाणना, तैना पहेलो नैगम नय कहे ठे. नना एक गमा ते नगम कहिये शुणनो एक
आश उपन्यो होष ता नगमनय कहिये हृष्टा<sup>न</sup>
जेम काइक मनुष्पने पान्नी नगनाम मन्
ययो, ते पार्ने जगलमा ल्वाक्ट लेगा चाल्यो,
रस्तामा कोइक मनुष्प मस्या तर्णे पून्यु है
वया जाय है, तक्षा तेले कनु ने पान्नी लेग जान हु त पार्ली तो हुनी पटा नर्थी प्रमान विवा मनमा चित्रवी ते थड एम गण्यु तेव निग

**आगमसार** 

नप्, सर्वे जीवने सिद्ध समान कहे, वेश सर्वे जीवना आठ रचक प्रदेश निर्माष्ट्र सिर्म रूप ठे तेथी एक अशे सिद्ध ठेत साटे सिर्म समान सर्वे जीव कथा ते नैगम नपना ज भेट छे ! जानीत नेगम २ अनागत नैग ३ विमान नेगम, ए नेगम नय कयो.

हवे संग्रह नय कहे हैं सचाग्रहे ते सग्रह चे एक नाम की ताप सर्व एक प्रमाण दक्ति सहित आद है। नगर ४० १५६६ - व द्यान्त-नम फाइह एव प प्रमान हालप फरवाने अवें पोताना घरना वारणे वेजीने चाकर पुरुषने कहा ने दातण लड़ आयो, ते वारं ते चाकर मनुष्य पाणीनो लोटो तथा रमाल अने दातण एम सर्व चाज लड़ आव्यो हो शेंट तो एक दावण नाम लटने मगाव्यं इत पण सर्पनो संग्रह करी चाकर लड़ आव्यो तैपन इच्य एचु नाम ऋषु तो इच्यना गुण पर्याय सर्व आन्या ए संग्रह नयना वे भेट **छै एक जे द्रव्यपणी सामान्यपणे बोलता** भीत तथा अभीव द्रव्यनो भेद पड्यो नही ते पेडेटो सामान्य सब्रह, तथा पीतो विशेषताने अमीकार करें है, के जीव द्रव्य एस क्यु ती अभीव मर्व क्ल्या ने विशेष सब्रह हवे व्यवहार नय क्टें के बालस्वरूप टेस्सेन भदना बेडेचण करें अने जे बाहेर

55

देखना गुणनज माने पण अतरम सचा न माने पटले प नपमा आचार दिया गुरु प अतरम पिणामनो उपयोग मधी नेपन नेपम स्था सग्रद नय है गाने स्प्र प्राचना परिणाम निना अदा तथा सचा शाही है, तेम इहा करणी ग्रुट्य है ते व्यवहारनमें (पणे) भीउनी व्यवस्था अनेस महारे ठ तिहाँ नेपम तथा सग्रद नये करां सर्व नीय सचार

एक रूप रे पण व्यवहार नयथी जीवना वे

भेट है एक सिद्ध, बीना ससारी. ते पली संसारी जीवना वे भेट है एक अयोगी चींटमा गुणडाणात्राला तथा त्रीना सयोगी .ते सयोगीना वे भेद एक केवली वीजो छग्न-स्य, छत्रस्थना वे भेट एक क्षीण मोही बारमा गुणठाणे वर्चता मोहनीय कर्म खपान्यु ते. बीजो उपशान्तमोहते उपशान्त मोहना बली वे भेद, एक अक्रपायी उग्यारमा गुण-गणाना जीव, बीजा सकपार्याना वे भेद है. , एक सुक्ष्म कपायो दशमा गुणटाणाना जीव बीना बाटर कपायी वे बाटर कपाधीना ्चली ने भेद ठेणक श्रेणि प्रतिपन्न, बीजा श्रीण रहित ते श्रेणी रहितना वे भेट एक अपपादी नीजो प्रमादी ते प्रमादीना वे सेद विरतिना वे भेद, एक विरति परिणामि अम र्यामा अविरति परिणामि, अविरतीना वे भेद णक अभिरति समकाति बीजा अभिरति मि-श्यास्त्री ते मिथ्या पाना वे भेड, एक भव्य

वीजा अभ"प ते भव्यना व भेट एक मुविभेटी

एक निरति परिणामि वीजी देश निरति, देश

योजा ग्रर्था अभेदी (अभेन् ग्रन्थि) एवी रीत ने जीव जेनो देखाय तेने तेवा माने प व्यवहार नय है, एमन पहलना भेद करवाते षह है पुरुष दृष्यना ने भद्र है एक प्रमाणु

धानो स्वथ, खाना प भट एक जीवने लाग्या ते जाव सहित, नाजा जीव रहित त घडो

मधुरा अजीवनी स्वथ, ६व जीव सहित खधना ए भेट दे एक सुश्य खत्र बीजो बादर राज.

इहा प्रभागां विचार लखींये छैंपे, तिहा पुरल्नी वर्गणा आठ रे १ औटारिक वर्गणा २ वैकिय वर्गणा ३ आहारक वर्गणा

४ तेजस वर्गणा ५ भाषा वर्गणा ६ श्वासी-

आगमसार.

स्त्रुप्त वर्गणा ७ मनो वर्गणा ८ कार्मण वर्गणा-ए आट वर्गणाना नाम कहा वे परमाणु भेटा थाय त्यारे द्वगणुकत्वथ कहेवाय जग परमाणु भेटा थाय तेवार ज्यणुकत्वथ थाय एम सर्याता परमाणु मिट्टे सर्याता-शक्तव थाय तेमज असर्याते असर्याता-

णुक्तस्य थाय. तथा अनता परमाणु मिले अनताणुकस्यथ याय ए न्या ते सर्घ जीवने अग्रहण योग्य ठे, अने जेवारे अभन्वथी अनतगुण अभिक परमाणु भेला थाय तैवारे आदास्कि शरार हत्या योग्य वसर्णा याप

षमज भौजारिकधी अनतगुणा अधिक

वगणामां दल भेला थाय तवारे वैक्रिय वर्गणा थाप, रहा वेदिय धरी अनुत्रमुणा परमाष्ठ मिले तेबार आहारक वर्गणा थाय एम

ए चार गणा बाहर है तेमा पाचवर्ण-वे गन्ब-पाच रस, भाट स्पर्श ए बीस गुण है, तथा ? भाषा २ श्वासी द्वास ३ मन ४

सातमा मनावर्गणाथा आउमी कार्मण वर्ग णामां अनतगुण परमाणु अधिक छे इहा ? आदारिक, २ विक्रिय, ३ आहारक, ४ तैनस,

सर्व वगणाना एउउची जनतगुणा अस्कि पम्माणु मिले तेवारं त नर्गणा थाय एटल पट रीवी बाजी बर्गणा, बीजीबी बीजी एम

वे गन्ध, पाचरस-चार स्पर्श-ए सोल गुण छै, अने एक परमाश्रमा एक वर्ण-एक गध-एक रस-वे स्पर्श ए पाच गुण है. एम पुहल लघना अनेक भेद ठे ए व्यवहार नयना छ भेट छै ? शुद्ध व्यवहार ते आगला गुणटाणानु छोडयु अने चपरना गुणठाणानु ग्रहण करन् अथना ज्ञान-दर्शन-चारित्र गुण ते निश्वयनय एकरूप उ पण ते शिष्यने समजात्रवाने जुढा जुदा भेढ कहेना ते शुद्ध व्यवहार छे २ जीवमा अज्ञान राग द्वेप लाग्या 🕏 ते अशुद्धपणु 🕏 माटे अशुद्ध व्यवहार ३ जे पुण्यनी किया करवी ते थ्रभ रुपबहार, ४ जेथकी जीव पापरप

कार्मण ए चार वर्गणा सूक्ष्म रे एमा पाचत्रण

है पण जांव अनानपण आपणा परी जाण्या हो ने वपचरित व्यवहार ६ प्रांगितिक परि-महा यपि जीवधी जुदी है तीपण परिणा-पिरुपार लोलीवने परडा मिली रखा है तैने जीव आपणा परी जांगे है ने अनुप्यस्ति व्यवहार जाण्या ए व्यवहार तय क्यां हो कन्न स्मानपनी विचार कहे है. जे अतीत कार अने बनागत बालनी अपेसा

न बरे पण उत्तिमान राजे के उस्तु केया गुण परिणामे वर्ते ते यस्तुने तेउन परिणामे माने भारे ए नय परिणामग्राही है जैब कोटक

अग्रुभ वर्ष वृद्दे त ६ अ ग्रुभ स्पारहार धन-घर-प्रदेव मन्यूभ सर्वे आपनाधी सुदा सुदा

54

जीन गृहस्थ ठे पण अतरग साबुसमान परि-णाम है तो ते जीवने साधु कहे अने कोइक जीव साधने वेषे छैपण मनना परिणाम

विषयाभिलाप सहित छै तो ते जीव अवतीज ें एम ऋज सूत्रत मानव छे ते ऋज स्त्रना वे भेड ठे एक सूक्ष्म ऋजु सूत्र ते एम कहे ने सदाकाल सर्व वस्त्रमा एक वर्त्त मान समय उत्ते है एटले जे जीव गया काले अनानी हतो, अने अनागत काले अज्ञानी भावे अज्ञानी धरो एम चेहु कालनी अपेक्षा

न करे पण एक वर्त्तमान ममये जे जेवो तेने तैंको कहे ते सक्ष्म ऋतुसूत्र कहियें अने महोटा वादपरिणाम ग्रहे ते स्वूल ऋजु सूत्र नय जाणवी एटले रुज़ सूत्र नय क्यों

## हो शब्दनय कहे ए जे बस्त ग्रुणवर्त

पथवा निर्मुण ते पस्तुने नाम प्रद्वी पोला-

वेय ने भाषा वर्गणाधी झाद पर्णे वचन गोचर थाय ते शब्दनय ने कारणे अरूपी इच्य वचनधी बहेवा ते शन्दनय कहि**ये इहाँ** 

ने शब्दनी अर्थ होषत पणों ने वस्तुमा वस्तपणे पासियेत बारेते प्रस्तु श्रान्द्रनय यहिमें जेम घटनी चेष्टाने बचनो होय ते घट ए शब्दनपमा व्याकरणधी नीपना अने

आममार

वीजा पण सर्वे शब्द लीवा ने शब्दनपना

चार भेट ठे १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ अने भार चार निश्लेपाना पण एडिज

? पदेलो नाम निक्षेपो ते आफार तथा

आगमसार ५१ गुणरहित वस्तुने नाम करी बोलाववो ज एक लाकडीनो कटको ल्ड्ने कोटके तेड्ने जीव एवु नाम कष्टु ते नाम जीव जाण उ जम काली टोरीने सापनो उन्हियें करी था। इस्तु

काली दोरीने सापनी उद्धियें करी वार्ने हणे तेहने सापनी हिंसा लागे ए नाम सर्प थय एरीज रीत नाम तप अथवा नाम सिन्ह जेम वड ममुराने सिद्धाट एम कही बोलाों ठे ते नाम निक्षेषो कहिये ए सूत्र साख ठे. ' ? स्थापना निश्तेषी करे है जे कोडक वस्तुमां कोइक वस्तुनो आकार देग्यीने तेहने ते पस्तु कहे जेम चित्रामण अथवा काष्ट्र पा-पाणनी मूर्चि तेने घोडा-हाथीनो आकार छै तो ते घोडा-हाथी कहेगाय ते स्थापना जा-णती. ए स्थापना निक्षेपो नाम निश्चेप सहित

६२ आगमसार होष जेम स्थापना सिद्ध जिनमतिमा मधुस है सहार म्थापना पण हाथ अने असहाय स्था पना पण हाए अने असहाय स्था पना पण हाए अन्निमा ते में ही परहीप समुखन रिपे औं जेह हहानी जिन मितमा ते कुनिम ते स्थापना जाणवी

सापु रह नहीं कारणक स्थापना ह्यां 'ते ते ह्यां तुरुष जाणवी तेमन जिन प्रतिमा जिन समान जाणवी टरा घोडक अज्ञानी जीव करे छे जे, स्थापनाया झानाडि गुण नधीतेथी स्थापनाने मानवी पूजवी नहीं तेने उत्तर करे

ठ के स्थापना रूप स्त्रीमा र्खापणाना गुण नथी तो पण त रिकारनु कारण थाय ठे तेपन निनमतिमा पण भ्याननु कारण ठेजाने

जेम चित्रामनी खी जिहा माडी होय तिही

जे एम पुठे क हिंसा थाय है अने भगनते तो इयाने धर्म कहा है तेहने एम कहेरू ने पर-देशी राजा केक्षी गुरुने वादवाने अथे वीजे दीवर्से मोहोटा आहरथी आव्यो त वटनामा हिंसा थर पण लाभ कारण गणता जोटो न यगो बीजो महिनायजीय छ मित्र मतिषोध-वाने प्रतलीनो द्रष्टान्त कद्यो.ते हिंसा वो घणी थर पण ते छाभना कारणमा गणी छै पम भाव शुद्ध होय तिहां हिंसा लागती नयी, अथवा कोडक एम कहे है जे अमे आएणे स्थानके बेटा नमुध्युण कहिसु अमने लाभ यासे ते रारो पण भगवती सुत्रमा भगवानने षदनाने अधिकारे तो तिहा जड बदना कर-बानु फल मोडु कयु है तथा निक्षेपाने अधि-

आगेमसार कार कत् जे भाव निक्षेपी एकली थाय नक पण स्थापना तथा द्रव्य ए त्रण मिल्या भन नितेषो थाय गाट स्थापना अवश्य मानवी

हा ने स्थापना न माने तेने कहिये ने चित्रा मनी मूर्चि व हिसाना परिणामधी फांडे वेहन हिमा लागे है तेमन जिनवरना ध्याने जिन मतिमा पूजता लाभ थाय है एम युक्ति करती तथा आगमनी पाखे पण जिन मतिमाने जिन

समात्र माने ने आरायक अने जे जिन वि माने न माने तेगे स्थापना निक्षेपो उधार्य

अने स्थापना जयापी तो द्रव्य तथा भाव हि

सेपो स्थापना विना जाय नहीं माटे द्रव्य त भाव पण उथाच्या एम त्रण निक्षेपा उथाप

ते मारे सिद्धान्त उथाप्यात माटे ने जिन

'तिमाने नहीं माने ते विराधक जाणवों तथा कोई पूठे जे मतिमानो पूजा तो पहेला आसत्र मध्ये ळखी ठे तेने कहींये जे तुम्हे मुपाबाट बोळो जो, इहा मश्र व्याकरण सूत्रमा पाठ इस ठे नहीं तिहा पाठ ठे ते लिखीये जे।।

अविजाणओ परिजाणओ विसयहेड इमेहिं

आगमसार.

कारणेहिं कि ते करीसण पोरकरणी वा विव-पणीक्रवसरतलाग चितिवेति खाति आराम विहार, धूभ पागार, दार गोपूर अट्टालगच-रीय सेतुसकमपासायिकष्पभवणघरसर्गिले-णआवणचेइयदेवकुलचित्तसभाषवाआयतणव-सई भूमिपरमडवाणकएईसिति=इहा पाच था-वरना पाच आलावा छे तेहने छेडे कोहा, माणा, माया, लोभा, हिंसा, रती इत्यादि

पाट है ते जे जीव इहीना सवान्ते माटे चेईअ पदेना जिपालिक करे ते आश्रासाने ए पाट ठै पण पूजाना पाड नधी ते सृपान्ये (शा माटे) वानो छा, तथा मक्ष व्याकरण-सूत्रे पाने सपरद्वारे ने जालायों है ने लिखींप छे रावगयानि आयरीय उवज्ज्ञाय सेंद माहमीप नवसि सिस युद्ध गुळ गण सन चेडेंपरे निज्यस्टी बयावद्य अनस्सीओदसर्वि हमहुनिहरूरेई एआलावे आचारम ममुखचेईय महेता जिनमतिमानो वयावच करे निहर्नराना

अर्थी अणस्मीओ फहेनां जस फोर्तिनी बाछा रहितपको वैयावय दश अवार तथा अनेक प्रवारनो करे, दहां चईय कहेता मनिमा छे तो खोडी कन्यमा स्वामाने करो छो ? तथा बीने

आगमसार

, पक्षे प्रच्यो जे अहिसाना ६० नाम कहा है, अभञ्जोसहस्सविञ्जनायाओञ्जरकाय वित्तीपूर्या विमलपुशा निम्मलकरीति एव माइणीनिय-गुणनिम्पियाइ पञ्जयनामाणिष्ट्रतिअहिंसाए ॥

तिहां प्रतिमा तथा पूजानी नाम नथी तैहनी 'उत्तर तिहा अहिंसानी नाम जाणी तेहनी अर्थ देवपुजा है पुजा एहवी दयानी नाम है ती

अजाण्योद्रमस्ये मरपणा करो छो ? तीज प-जातो श्रीअरिहत प्रतिमानी ते तो विनय नथा गैयातच ते अस्भितर तपना भेट ठै ते तप

मोक्षनो मार्ग है अ उत्तरा ययन सूत्रे २८ मे अध्ययने तपने मोलना न्यार कारण कथा ते मध्ये गण्यो छै तथा तो पस्ये पुछन्यो ने बो-

लनी खनर न हुने ते विचारी बोलीये, तथा

श्राप्तक कोणे देहरां कराव्यां ? तथा प्रतिष् पृजी ? तेहनो उत्तर श्रीममवायागमृत्रे तथ नर्रामुत्रे सर्व आगमनो नृष ठेतेमस्य ए पा

आगमसार

ठै तिहा उपासकदशानी नोध छै ते आलाब ठ त रुखीए उँ सेन्ति उनासगदसाओ उवा सगन्सामृण समणोत्रासमाण नगराईचण्डाणार चइआइ वणसदाइ समोसरणाइ रायाणीञ म्मापियरा वस्मायरिया धम्मकहाओ इहलोह जा पारलाईया इड्डिनिसेसा भोगापरीआड छ-नपरिगाहोआ तरीवहाणाइसील्वयगुणवेर-मणपचारताणपोसहोत्रतासपिहवञ्झणापहिमा ओ उत्रसम्मसलिहणाओं भत्तपचरकाणइयाउ

वगमण देवलोगममण सुकुलपचायापुणनोहिन लाभो अतकिरायाआघरिष्ट्रति ए पाउ है।

40

आगममार. ५९। इहां चेड्याटशब्द देहरा तथा जिन प्रतिमा

जाणत्यो, इहा चेइय पहनो अर्थ तीजो धाये नहीं, जे बननो अर्थ करे तेतो उद्यानत्रनख-बनो पाट जटो ठे तोह साधुनो अर्थ करे ते धम्मायरीया ए पाट जटो ठे हाननो अर्थ करे ते मुयए पाट जटो ठे तेवाटे चेडय धाटे

निनमितिमानो अर्थ छै तथा तुम्हे पुछो ने द्वारका राजग्रहमें देहरा तथा मितमानो पाठ किहा छै १ तेहनो उत्तर नदीसृत्रे अस्तुत्तरो बबाद तथा अतगडना नोपनो पाठ जोज्यो। तथा तुम्हे क्रहेम्यो टतला बोल उपासकट्या-प्रमुखे दीसता नथी तेहनो उत्तर ने नटी तथा सम्बायागमे ने पाठ तेहनो कोण उत्थापी

शके ते जोज्यों। तथा प्रजन्त जे किणे आवके

याँदवा गया 🕆 तनारे क्यवस्टिम्मा क्षया पछी घरे आया साहमीवरूळ करीने दीक्षा

नेवा निक्रन्या नेवारे न्हाया फपवस्तिकस्मा ण पाठ छ, इत्यादिक आप अप देशनी पूना न वरे गात्रज न पृत्र, अस्टित देवनेत्र पुने, तथा कार पहेंच्ये पर्यपन्तिकमा पाड क्टीयाम ममुख अीर धानर हे तैयां स्वाना उ पा जेही वासुदे माने त तेहने पुत्रे तथा देवदत्त वारम कीम छुना करी हुने तेनी यात्रक्ते मात्रीत पुता करायी तो कां न क्रे ? आज पण बाउक पुना करता नीसे हैं तो क्याजीनम्मा ए पारनी घीनी अथ द्याने वरो छो १ तथा दीसा महोन्छत्र चणा दीसे उपण निद्या दहरा मतिमानी पाउ नथी

माधुने बहाराववा रहा नथी तो देहरा करा यता तो घरे स्थाने रहे ? जने पहला देहरा पतिमा छै तैतो नदीसूत्रे आगमनोयनो पाउ जोस्ये तो सर्वे समो पडशे तथा तम्हः पुजय ने तीर्थम्स्प्रहस्यपणे छता साघ साची श्रात्रक श्राविकाए बाद्या नथी तैनो उत्तर घणाव बांचा है. ते पाड हातासूत्रमा है तथा समें छरयो जे प्रतिमा एकेन्द्रिदछ रे तेहबो ' बचन संसारनो जेहने भय न हो ते बोले ? ने कारणे श्रीभगवतीजी तो जिणपहिमा कही बोलात्री ठै. देहराने सिद्धायतन कही बोलाब्यो तो तुमे फटोर बचन स्याने नोलो छो ? तथा हुमें दिसी बदना करों छो ते द्रीसी तो अजीव

तैहनो उत्तर जे टीक्षाने उतावला थया तैवा

5 5 तो कीम बादा छो ? तिहा तुमहे करेस्यों <sup>है</sup> भाम्हास मनमें वा सिद्ध है तो जिनपहिम

आगमसार

तथा आणट आवर काइर साउने पटिलाभ्य नयां ते मारे हुन्मे साधनी बीरराज्यामे दी

बादता पिग अमारा मनगा सिद्ध है तरा,

ब्रम ये गुरनी पारनी आगातना टालवी बद्दी है, ने पाट अजीन है तेवीण सर्ने गुरती

बहुमान ७, प्रतिभाने बहुमाने सिद्धनी बहु मान ३ तथा गुप्रयोगभागादि जिननी दाहा

ठ ते प्रत्नाप पूजनीय छ तेना अजीव स्त्र<sup>ध</sup> ठे तथा तुमे रूप्या ज परदेशा राजाप प्रतिमी

बरणी परे ए स्वा नियम छे ? तथा परडेशीप

केटलोर जीव्या है त त्या सर्व आपक एकम

मान करी <sup>7</sup>त परदक्षा श्रावस थया पर्छी

मानस्यो १ ए विचारी ज्यो ज्यो तथा छख्य है जे सूरीआभे जे प्रतिमा पूजी ते राजधा भीना मगलीक माट पूजा करी वेवो खोड पोलो जो, ए पाठ मुत्रमें नथी सुत्रमें तो पहनो पाठ है "हीपाए सहाप खेमाए निस्ते-साए आणुगानीयचाण भविस्सइ निश्रेयस कहता मोक्षमणी व अर्थ ठै, तथा पन्छा शब्दे में इहलोकनो अर्थ के इम कहे के ते सह के, दर्दर देवताने अधिकारे पन्छा शब्दे आवता भवनो अर्थ ठे तथा आचारागसूत्रे जस्तपू-वियिनो तस्सपछायिनो इहा पूर्व शब्दे पूटलो मत्र पड़ा बच्टे आवतो भव लोबो डै तथा एमवे सम्पितनो लाभ ते घणो है तथा धिंकर वात्राना कलनो पाद उनपाइमध्ये ٤٤ भागमसार तथा पचमहात्रत पाल्यानी पाठ आचाराग म'ये तिहा पण हियार इत्यादिक पाउ ठैत

ये टेकाणे लाभ माना हो तो जिनमतिमा उमे ना स्थान वही छा ? अने दिहा निन मतिमा पृजानी पाप क्वी नभी अने हीय ता देखाडा नुम लिएयु के भगवाँ दिसानी नी यहा छे तेती अमे दिहा प्रहुछ ने हिंसा फ रवी, पण भगवत किसे सूत्रे प्रतिमा पूजानी

ना कही नथा प्रतिमानी १७ मकारनी पृत्र म्रें रही उतथा तुमे पतिपानी पूजा हिसार गणो छो ने इम नधी प्रतिमानी प्रजा न विनय तथा लेयावद्य धर्ममा उत्तथा पूज हिसामे गणी तो डाणागे नदीमें पहती सा

व्यक्ति साधु काढे तेमा हिंसा गणी नहीं, तथ

न ं आगमसार ६७ ज्ञाचारांगसूत्रे तीजा साबु अजाणे पण वर्कः रानी भूळे ऌण बीहरीने पठे जाणे जे ऌ्ण बीहराज्यो ते जाणी ते पोने साय ते पोते पीये

तथा नीजा साधु सभोगीने आपे ते खाये पीए तथा विषमवाटे ोलने रखने लताने ग्राने अवलवी उत्तरे जे पाट आचाराग-स्त्रे है तथा भगवती सूत्रमें साधुना इरस काडे तेहने कियाकर्म लागे नहीं. तथा पहिनायजी पूतलीमें कवल मंत्रया तैमाटे वर्म माटे हिंसा करी तथा सुबुद्धि मतिए पाणी पलटाच्यो ते उर्म माटे करी पिण मद बुद्धी न कहा है भगवतीसुत्रे २५ में। शतक साधु शासन माटे तेजीलेश्या मुक्त तेहने जा-रापक कथो, तथा जंददीपपन्नचीए निर्वाण

महोच्छा वर्षी हे प्रभव्यतिजिणभत्तिए धरमे त्तिए पाउ है इम<sup>े</sup> हेटला पाउ छीखीप् <sup>[</sup> भनेक पाठ है ॥ तथा नदीं सूत्रे के आगर्म फयो ते चत्थापीने ३२ मानो छो ते वेनी आज्ञा है <sup>१</sup> तथा आवश्यक स्**त्रप**टिकमणा विना साधुपणी आवनपणी हुवन नहीं ते तुम्हे आवरयक सुत्रपटिकमणो मानमा नर्था तो श्राप्रक्रपणों ने साधुपणों उस प्राची छा श्रीभगवतीसूत्रे साथु साध्यी श्रापक श्राविषा

पचमआराना डेहडा पर्यंत कथा है ते तुमारी विचरेत आराधक ते तमे कोनी निश्राये

श्रदामें हिवणा साधु सा वी कोण छै <sup>१</sup> तथा सूत्रे आत्रारज स्पाट्याय कुल्नणनीनिश्राय

ो छो <sup>?</sup> ते ल्खिज्यो, तथा श्रीभमनती

स्ते गाया है ॥ पहनोगीयत्यविहारी बीयो-गीयत्यनिसीओभणिओ । इत्तोतइयविद्वारी नाणुझाओजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एहनो अर्थ गीतार्थ होय ते पोते विहार करे अथवा गीता-र्थनी निश्राये विहार करवो एथी तिजा विहा-रनी अरिहते आज्ञा टी री नवां ते माटे तमे किस्या गीतार्थनी निश्राये विहार करो छो ? तथा योग उपायानवहींने सिद्धात भणे तेवण श्रावक जाचारागादिक सुत्र भणे नहीं तै निजीयमा कहा है। ने भित्रसुअन्नत्वीयं वा गारत्थियमा नायण पायज्ञत्त सारज्जति तस्स-चोमासीयपरिहारटाण ने ग्रहस्थने सूत्र वचावे अवत्रा वाचताने अनुमोटे तेहने चारमासनो पाल्यो चारिन जाते तथा मक्ष ज्याकरणसूत

अहरेरिसीयपुणसहन्तुभासियह जस्थदवेहिन गुणेहिपनाहि सम्महि बहुतिहेहि आगमेहि

मर विभक्ति यस जुन भासियह तथा अनुयी-गदारे ७ नव / निक्षेपाकाल तिन, लिंग तीन, जाण्या विना अपदेश देवा ते मारग नयी इत्यादिक अने र बोल है ते गीतार्थनी सवनार्था पामोष इतिभद्र ॥ जे वड श्रीजिन

नामरकाय निवाय उवसम्म तद्धिअ समास सधिपद जोग उणादि सीरीयावीहीणसरघाउ

मतिपानी पूना म ये फूछ पूजानी शका यरि तेहने वहीये जे श्रीरायपसंणासने १७ भे पुनाना पाउ उ पुरकाम्हण १ मोलार्हण <sup>३</sup>

नहबन्नपारहण ३ तथा पुष्कपतिह ४ पुष्कप

५ एतली प्रमा फलनी है तैवारे प्रम

फुलनी ते ममाण छे तथा श्रीभगवतीसूत्रे पण सरीआभनी पेरे पजानी भलागणना पाठ अनेक है तथा ज्ञातासत्रे द्रीपटीने अश्विकारे १७ प्रकारी पुजाना पाठ है समबायागसूते चोत्रीस अतिशयने अधिकारे " जलव थलय भामरदसद्भवन्नेणजाणस्तिहप्पमाणमित्तेण प्रप्फ-पूजीवयार करेड इत्यादि पाठ छे " इहा सम-वार्यांग सूत्रम देवता मनुष्यनो नाम ऋषो नयी तथा श्रीउबपाईसूप कोणिकने अभिकारे श्रीवीर समोसर्वा तेवारे अनेकजन चपाथी निफल्या जे " अप्पेगडयावदणवत्तियाए अ-प्वेगइयापुषणवत्तियाए अप्वेगइयासुयस्या-मो अप्पेगइयाविङलाइ अहाओहेओआई अ-तिणाइगहिस्सामी " इत्यादि पाठ ठे. तिहा 50 प्यणवर्षीयाए त पाउनी अर्थ दीकाम ये पूज न पुष्पमार्राटना उम क्यों हे इहां श्रीतीर्थ

करने पूष्पनी पूजा दीसे है प पाठ श्रीमर्ग वर्तास्त्रे पण 🧓 तथा नदीसूत्रे अतज्ञानने पाउँ जेडम अरिहर्नार्ट भगवरेहि उप्पद्मनाणदसण घेगीं तिल्लकनिरवर्णीय महीअपूर्वपद पाउनी अर्थ टीकाकार पिण महीय शब्दे चवनादि, पुरवर्षि प्रक्तमालादिक करीने ए पाठ अनु-

यागद्वारम ये पण छे इस पुष्कपूजाना अनेक पाउ छै, ते माटे शका न कक्की कली केइक इम महे छ जे फुल एचाता जडे ते चढानवा पण पोते चृटो चढाववा नहीं तेपण अजाण्यु

कहे छै ने "श्रीनीवाभिगमसूत्रे " ततेण से विज्ञणदो मोत्ययस्यणिगद्द पी. २ तिः

હુક

पोत्थयस्यणग्रयति पो २ त्ता पोत्थयस्यण-विहाडेति पो २ त्रा पोत्ययस्यणवारण पो. २ त्ता अम्मियवयसायपिगेण्डेति ध २ त्ता पो-स्थयरयणपडिनिष्यमति पो २ त्ता सीहास-णतोजम्भ्रहेति सी. २ त्ता वनमायसभावोप-रिथमिल्लेणदारणपहिनिग्खमः पु २ त्ता जेणेव णदाप्रमावरणी तेण व उवागन्छति च ? त्रा षटाप्ररखरिण अणुष्ययाणिकरमाणे प्रस्थिमिल्लेण तोर्णेण अणुपविस्ति अ. २ त्ता प्रस्थिमिल्लेण तिसापाणेपडिरुवेण पद्यो-रहति प० २ चा हत्यपाद पराखालेति ह. २ त्ता एगमहसेनरञ्जतामय विमलसलिलपुण्णमत्त-गयमहामुहानिः समाणभिनार पनिण्हति प २ ता नाइतत्थउपलाइपडमाइनावसत्तप्ताउसह- सममार स्सपनार तार गेण्डिन २ चा णदानी धुमस रिणिआ पन्जुनार ४ २ चा जेगेरानिद्धाय-तणे तणवपारास्त्यमणाट तण्णतिनयदेव चनारि मानाणियमारस्सीओजारअण्णेवस्य

U

राणमनगदेशनेशीओं अध्येगतिया उपलहत्य गता जात्र सतसहस्मपत्तहः यगयाः विजयत्त्व पिहजोअणुगन्यद्वा ग इहा प्रच्या चीर्था दे ए आजाव निमयद्वी पान नापटामें उनगीने फुर पूरी त्रीधा तथा सामानिक द्वता तथा वीजे देवताये पिण फूड पोताना हायथी लीवां छे टहा कोइ पूछस्ये जे तिहां कोइ माला नधी

तेमाट पोने लिया तैहनो उत्तर जेमाली नथी पिण देवता चाकर छोक घणा छै, तेहनेज पासे का न मगारे ? जो पुष्प आ-ण्यानो विभि होते तोषण पोताना हाथथी स्रोधानो त्रिषि ठे तैमाटे पोते पावडी सभ्ये उत्तरी स्रीया ठे तथा श्रीरायपसेणीम्रुवे सूरी-आभाषिकार

" ततेण सं सुरियाभेडेवे पोत्यरयणगि-ण्डर, पो र मि सा पोत्यरयण प्रयह, पोत्य रयणविद्वारेड, सा २ पोत्थरयणवाणति, सा २ धम्मियवप्रसाविगण्हड, २ त्ता पोत्यर्यण-, पडिणिजलमति २ त्ता सिहासणाओअञ्चरहेड ? चा वासायसभाओ पुरत्थिविन्लेण टारेण पडिणिकसमइ र त्ता जेणेन णदापोरकरिणि तेणेत्र खवागच्छद २ सा णदापांकखरिणी प्ररिथमञ्जेण तोरणेणतिसोयाणपहिरूपेण व

ोगमसार

घोरहनि २ चा हत्यवायपवन्यालह २ चा आयने पापल पामगडभूक पगसेयमहर्यया । मय विमनमिन्नपुष्ण मत्तायमहागिनिसमा णमगार प्रमण्डित पूर्वोग्हर > चा जाइन-स्यरपञ्चाइत्राप्तसयमहस्मपत्तार्गाग्रहति णदा-था पुरावरिणीओ पशीरहड र सा जजैर सिद्धायतणे तेणेत्र पहारेगमणाच तएण त स्रियामदव चत्तारिसामाणियमाहरूसीओ जार सोल्सभायस्यलद्यसाहस्सीओ अश्येषपद्य स्रियाभिवाण नात त्या वदीओअध्यगद्या वत्पलह् अगया जात्रमत्तसहस्सपनहत्थगया स्रियाभ देशपरुओसमणुगच्छति त्रनेग सृहिन पाभदेववहरोआभिआगिय देवाय देवीओ य

अप्पेगर्याकलसहस्थायाओं जानअप्पेगस्या

देपपिट्टओसमणुगच्छति तेतैण णे सुरियाभेदेव

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जावअण्णेहियन-र्श्हिस्रियाभिवमाणवासीति देवेहि देवीहिय-सद्धि सपरित्रदे सन्बर्धाए जात्र णाडयरवेण जैणव सिद्धाययण तेणेय उवा गन्छः सिद्धाय-णपुरि विवित्लेण दारेण अणुपिसति २ त्रा नेणव निण पहिमाउ तेणेन उत्रागच्छर, निण-पहिमाणआलोए पणामकरेति २ त्ता लोमहन न्यगिग्हड २ त्ता जिणपटिमाण लामहत्थएण पमञ्झह र त्ता जिणपडिमा ग्रीमुरभिणागं शे-दएणण्डाणेति ज्हाणिचा सरसेण गासीसचद-णेणनायाण अग्रस्थित २ ता निणविद्याण-अहिपारिनद्साइ जियलाइ शिवसेइ २ सा

60

रेवाना छ नथा सोहर सहसे जे एनी चुट्टा

नधी सहने पहचा लावा है तहने कहींये हैं, न रजारममें सहने पदचा नाउडीमध्ये रेवेन नहीं, तथा निगाइने अधिकारे निगाइ राजार

नानाना पानरीया पाने पूर्व सीपी नेती रन्क यथ चुना लीघी ते पाठ उत्तरापीमध्ये नोनो भन्याणुनुत्तनिमा शोपछ इसुमानुत्र राहणायगामजरागद्वीयाच तरकचा परेणळवतेश मजरीपत पराल्खयाः पद्यविसेमी फर्भ पहिनियसओपुन्छइ यहे सोरास्वीश्रमधुणा दसाओं फहण संयावेत्याभणई तुर्वहींहैं चुगा मनरीगदीयापच्छसञ्चणगदेतम छन्द्रञो । इही गरीय शब्दे चुड़गानी अर्थ है, तथा की े ने पती देवनाये क्यों छे ते आवर्ष शकस्ता किम करे छे? तथा स्नात कॅम मानो हो ? स्नार नो कलस ढोलो छो तै

टेबतानी करणीज है, तथा सूरीयाभनी पूजानी

भलामण द्रौपदीने पांडे है देवतानी पूजाकरणी तथा मनुष्यनो पाट एकज है तेमाटे देवतानी

करणी आपक करे ए अहाप्रमाण के तथा जे फ़ल चुटवानी ना फहेते वीटना जीपनि

वीलामना माटे तैवारे फुलनी प्रजा किम करी शक<sup>7</sup> अने फुलनी प्रजानो तो सूत्रे पाट है

तथा जे पूजाने हिंसामें गणे तेहने कहीये जे

श्री प्रश्नच्याकरण सूत्रे प्रथम सवरद्वारे अहि-साना ६० नाम कवा ठे विहा पूना वे दया

अवाससार

अगममार उद्दी छ न पाठ लिखीड है अभवसम्बद्धाः

63

तिअनामभा "सरमाण्यसीप्यातिमण्यमा निम्मण्यस्य ज्ञायसार्गणिनयमुणनिम्मपास् पञ्जायनामाणिहित अहिंसाण भगरस्य स्याति पात्रे पूना ते अहिंसाण भगरस्य स्याति पात्रे पूना ते अहिंसाम गणी छै, तो तम्स हिंसामे किम गणी छ। तिमा भगरती स्त्रे " मुभयोगपद्वभणारमा" ए बात्र सुभयोग महन्ति आरमनी ना कही छै

विनय ता गयास्व त तपना मेंद्र छै तप ते मोक्षमार्गम पे श्रीजनस्थ्यमे २८ मे मस्य यो स्थो, त तुम हिमामे स्म यही छा ? तथा निरहारस्य सिद्धोयास्येण महानिज्ञ-रामहापञ्जनमाणभवति " तथाटे सिद्धवैयात्र्य छे, तथा पोह पूछे मे श्रासंक मतिमा िक्हां पुत्री हे १ तेहते देहतो ने श्रीभगवर्तासूत्रे तुर्गाया नगरीने श्रावक पृत्रा करी है वाच पुष्कत्रीये पृत्रा करी है तथा समदायांगसूत्रे हारशागीनी हुडीने जीवकारे उपासकदनानी

आगमसार

८३

हुई मिन दूर्य आवक्ता चेल्य पहनी पाट है ए पाटमें चेल्य वो साधु थाय नहीं, ज्ञान थाय नहीं ने सर्वना पाट जुदा है, तथा नदीसुने पिम पाट हे तथा नदीस य जे आगम कथा है सर्व गार्च ने कार्याच्या भी अनुस्ति

ते सर्व भाने तेज समितिती जाणती श्रीअनुयो गद्वारसूत्रे निर्वुक्तिनी हा करी ठे ने निर्वुक्ति-म य पूजाना अनेक अधिकार छे, तथा

म ये पूजाना अनेक अधिमार छे, तथा तद्रुत्तवाळीवयन्नानी टीकाव ये समवसरणना इत्त्र सचित्त ते उपर साधु सार्त्रा चाळे. भवचनसारोद्धार टीकाय पण ए मत छे. तथा कोड पहेंग्ये जे फुरने बोड (पगववा ) नहीं

64

तेश्न पदाये ने होस्प्रश्नमध्ये पाउ रे वर्ण वसगरोरवहेंदेतिः न्योक पारपार्यते श्राद विनष्टरवे मानपु प्रमाधराणिपर्वने तथा आयपसेनु जिनाह्मगारि एन वमाराज्येशी

अध्ययमध

प्रांत पुरपाथराणि सनि तथा द्रान्भित्रस्ति कृत पूजा पचासक जहाँहईनशीरह ", प गायाना आसपर्धा विग मोया फुलर्ना रा जणाय ठे तथा उमास्यातियाचक छत पूर्वी पटलगापिंग पमन जणाय है 7 स्थापन

इतर भी यायत्रक्षिश ए वे भेदें हैं

द्दीय सथा आज्ञार जावना गुण पण द्दीय अर्र लक्षण होष पण आत्मोपयान न मिले हैं

३ डब्प निषेपो रहे छ जना नाम पण

हैन्य निक्षेयो जाणवो एटले अज्ञानी जीत्र तै तीव स्वरूपना उपयोग निना द्रव्य जीव उै " अणुवओगो टब " इति अनुयोगद्वार वच नान वली कहाँ ठे जे सिद्धान्त बाचता पूछता पद अक्षर मात्रा शुद्ध अर्थ करे छे अने ग्रर प्रेंस सहहे ठे ते पण शुद्ध निश्रये सत्ता ओ-<sup>छर्</sup>या निना सर्वे द्रव्य निक्षेपामा 🗗 जे भाव विना द्रव्यवणो ठेते पुण्य वधनुकारण छै पण मोक्षत फारण नथी एटले जे करणी रूप

ረ፟ዺ

श्रीगर्मसार

कर्ट तर्पस्या करे छै अने जीव अजीव सत्ता ओळखी नधी तेने भगतती सूत्रमा अतती वया अपचरूखाणी कहा छै, तथा जे एऊळी बाब करणी करे ठे अने पोते साधु कहेत्रात्रे हैं से मृपबादी छैं एम उत्तराध्यम सुत्रमा

आगमसार मगु उ "न मुणी रत्नासेण" ए वचते 'त्र णण य मुणी हाइ '' ए प्रजनमी जे ज्ञानस

त मुनि है अने ने अग्नानी ने मिथ्याची है तथा काइक गणिता उयोगना नरक देवता योल अपना यनि श्रावसनो आचार जाणी फटे जे अम झानी छैंथें ते पण झानी नधा पण जे द्रवप शुण पयाय जाणे तेने शानी ह हिय श्रा उत्तरा पर्यो मोभ मार्गे क्यो है गाथा, पय पत्र विद्वाण द्वाणय गुणागण, पन्नवाणय संवेति, नाण नाणी टि दसिय 🎎 माटे वस्तु सत्ता जाण्या निना ज्ञानी नहीं अने नम्तस्य ओलस ते समरीति अने एहवा शत दर्शन विना ने यह के अमे चारितिआ छें त पण मृपाबादी छे, कारण क श्री उत्तराध्यमन

Ć,

तुत्र मचे किंदु ठे जे "नादसणस्मनाण नाणेण दिणान हुति चग्ण गुणा "ण पचन ठेते गाटे आज केटलाक ज्ञानदीन कियानो

आडवर देखांडे ठेते टग ठेतेहनो सग करवो नहीं ए बाद्य करणी अभव्य जीउने पण

یے

आगमनार

आवे माटे ए याद्य करणी उपर राच्यु नहीं अने आतमानु स्वरूप ओल्ट्या विना सामा-यक पढिकमणा पद्यान्वाण करवा ते सर्व इट्यिनितेषामा पुण्याश्रव ने पण सवर नथी श्रीभगवतो सूत्र माचे कर्यु ने का आपा रान्छ मामार्य " ए आछायांची जाणजो तथा जीव स्वरूप जाण्या जिना तथ सयम पुण्य मृक्कति तो देवताना भवन्न कारण ने " पुच्य तथेण

पुन्त सपमेण देवलोए खबनजाति नो चेनण

आय भाववत्तव्ययाए " ए भारावी मगर तीमां क्यों ठे तथा ने नियालीपी आना

4

होन अने शानहीन छ मात्र गच्छनी वाह सिद्धान्त भण है जाने है जन प्रशास्त्रवाण के छेते पण द्रव्य निक्षेषा जाणवा एम में अनुयोगद्वारमां क्य हे ने इमें समण गुणमुक्तीमी छक निरणुरपा ॥ हयाइव उद्दामा ॥ गयाइव नि

द्वसा ॥ घट्टामहातुष्पोठा ॥ पदुरवाडरणा रि णाण आणाए सच्छद विद्वारित्रण उमन फालं आवस्सागस्स उवद्वति ॥ त लोगुर्चा

वर्ध-नेने छ बायनी दया नधी, दानी पर उन्मत्त है, हाथीनी पेंडे निर

आगमसार छे, पोताना शरीरने बोपता मसलता उनले

कपडे शिणगार करी गच्छना ममत्वभारे मा-चंता रोच्छाचारी बीतरागर्नी आज्ञा भानता जे तप क्रिया करे है ते पण द्रव्य निक्षेपामा छै. अथवा ज्योतिप वैद्यक्त करे ठे अने पी-ताने आचार्य उपाध्याय कहेवरातीने लोक पामे महिमा करे ( करावे छै ) है ते पत्रीयध खोटा रूपैया जेवा ठे घणा भव भमसे अव-दनीक छै ए खास उत्तरा ययनम ये अनाथी प्रिनिना अव्ययनथकी जाणती अने सूत्रना ्यर्थ गुरुपुले शिख्या िना तथा नय प्रमाण माण्या विना निश्चय आत्मानु स्वरूप ओल-रुपा निना निर्धुक्ति विना उपदेश आपे ते पाने तो ससारमां गुड्या छ पण ने तेमती

आगमसार पास नेसे 'ठे तेवने पण ससारमा युटावे रे एव मक्ष व्यासर्ग सूत्र नथा अनुयोगद्वा सत्रमा क्यु हे " अञ्जूत्य चेत्र सील सम्<sup>म्</sup>

इत्यादि भी भगवती सूत्रमी पण यस् "मुनत्यो राख पदयो, बीओ निजृत्ति मिसन भणिओ, इतो तर्शणुओगी, नाणुझाओ निणारेहिं " अने केटलाफ एम पहें छैं जै

अमे सूत्र उपर \* अधिकरिये छये तो निर्युक्ति श्री भगवती मूत्रमा "मृतस्पोतिष्ठ परमोत्

मीजानिज्युत्ति मिमओं भणिशी ॥ इत्ती तहप्र

जोगो, नाणुजाआनिणक्रीहि ए एवी रीते आगम् सारनी पृशे जुरी प्रण प्रवोग रुख्यु इतु मार<sup>ी</sup> पण तपन छर्यु छ पण भीना उसले ए भग

बनोनी साल दीवी छै तिहा तो " मतग्वी खनु

ाया दीका प्रमुखतु शुक्राम छे ते पण मृपा-गर्द ठे केममें श्रीमश्रव्याक्तरणमा "वयणितय रुगतिय " इत्यादिक जाण्या विना अने नय नेपेप जाण्या विना जे उपदेश आपे ते मृपा-गर्दी छे एग अनेक सूत्रमा कशु ठे माटे बहु-गुत्र पासे उपटेश सामलवो श्री उत्तरा ययन पे बहुश्वतने मेहनी तथा समुद्रमी अने

निसंपी कवी

भ भाव निसंपी कहे छे जे नाम स्था
ना अने द्रव्य ए त्रण निसंपा ते एक भाव

मो, बीओनिउजुत्ति भित्तओ मणिओ ॥ तर्जीय
विसंसो, एस बिहि होई,अणुओगो ण प्वो पाठ
ते सरो जणाय छे पडें।बहश्रत कहे ते व्वरु

न्परसाहि सोल उपमा दीनी ठे ए इस

## निसेपा विना अध्रद्ध हे जे नाम सथा आसा

लक्षण गुण सहित वस्तु ते भाव निक्षेती क णतो " जबओगी भार " इति वचनात पटे पूजा, दान, शील, तप, किया, शान प सर्व भावनिक्षेपे सहित लाभन कारण है शी कोइ रहेरो जे मनना परिणाम हद करीने

ने करियें तने भाव कहिये एम कहे, छैत जुडा है एवी सुखनी बाहार्थे विश्वास्त्री पण पणा फरे छे त गणतु नहीं इहा सुत्रनी साले वीतरागनी आहाए हेय खपादेयनी परीक्षा

करी अजीवतन्त्र तथा आस्त्रपतन्त्र अने बन्ध तस्य उपर हेय फहेतां त्याग भाव अने जीवना स्वगुण जे सबर निर्नरा तथा माक्ष तस्य अपर

"पादेय परिणाम ते भार कहिचे एडले हपी.

गुण ते इच्यानिक्षेप छे अने अरुपीगुण ते भावतिक्षेप है एटले मन बचन काया लेक्या-दिक्र सर्व दब्य निश्चेषामा है अने ज्ञान दर्शन 'चारित्र वीर्ष ज्यान प्रमुख सर्वे ग्रुण भाव

अग्रोमसार

तथा द्रव्य सहित होय एटडे चार निक्षेपा 🗜 हो चार निक्षेपा पढार्थ ऊपर छगाडी र्दखाडे छै नाम जीव ते चेतना अथवा माचाना

निक्षेपामा के ए भाव निक्षेपो ते नामस्थापना

पक बाणने जीव कही बोलावे है ते नाम निक्षेपे जीय. मर्ति प्रमुख यापिये ने स्थापना नीव एकेदियथी पचेटिय पर्यंत सर्व जीव है पण उपयोग मिल नहि ते इच्य जीव अने मृतिमा, जीव भ्यस्य ओळखी समकितना राटिक ते सर्व द्रव्य ज्ञान जे नवतरातु आण्ये तथा कोडरनु तप एहरू नाम ते नाम

48

तप तथा पुस्तरमा तपनी विभिन्न लेखन यापना तप अने प्रण्यरूप मामरामणादि करतो ते द्राय तथ ज परतस्त्र अपर स्यागत परिणान व भाग तन एम सेवसदिक सर्व

चार चार निरोपा जाणवा तथा श्री अनुय गड़ार माये प्रयु छे-यन " जत्थयज जाणि ना, निरुपेत निरित्रते निरवसेस॥ जन्यय

नाणिज्ञा, चडक्यनिरिद्यम नत्य ॥ १ ।

चार निक्षेता कता पटले शब्दनम कवा 🕠 हा छहो समभिरुद नप यह उ वस्तुना वदलाक सूण प्रगटना है अ फेटलाक गुण मगट्या नथी पण अवंदय मग-टी एहवी वस्तुने वस्तु कह ते वस्तुना नामातर एक करी जाणे जेम जीव चतन तथा जात्मा पहनोक्ष एक अर्थ कहे ते सग-मिरद नय किंदों, ए नय एक अश ओजी वस्तुने पूरेपूरी वस्तु कहे, जेम तेरमा गुण-अण केनळी होय तेहने मिद्ध कहे ए नयना भद विलक्कल नथी ए सम्भिन्द नय कहाँ। हो एवभूतनय कहे है जे वस्तु पोताने गुणे रापूर्ण ठे अने पोतानी जिया कर ठे तेने ते वस्तु कही बोलाो जेग मोक्षस्थानके ने जीव पहोती तेन सिद्ध कहे जेम पाणीधी

आगमनार

\* एकार्यवाची नामीना नामभेदे भिन्न मित भर्व कर छ तेने समिम्बद नय कहे छे.

आगममार भरेलो खीना गावा उपर आपनी जल धारन किया करती गी घटा फहे प एवध्<sup>क</sup> मय यदा

हवे सान नयना द्द्यान्न श्री अनुर्याम द्वारा मूत्रथी लिपिय छिम जेम मोहक पुरुषे र्यात्रा मोहक पुरुष पुछन् के तमे कि यसी छो तपार ते पुरुष वस ह लोकम पसु दु क अशुद्ध नैगम, वर्षी प्रछयु <sup>है</sup>

स्रोपना प्रण भेट है, १ अबोलोफ, र निर्ह रोक अपनियोक तैमा त किहा रहें

तेशर नगमें कहा जे त्रिछालोकमा रहुछ पर पुरुषु जे तिछालोरमा असरयाना ई समुद्र छै तेमा तु कवा द्वीपमा रहे छै तैव निश्च नेतमे क्य जे जन्हीयमा रहुए. जादीपमा खेत घणा है, तेमा तं कया खेतमा रहे है, तेवारें अतिशुद्ध नेगम पोल्यो ने भर-विभेत्रमा रहुछ, ते भरतक्षेत्रना छ खड ठै ते माइला कया खडमा रहे 'डे तैरारें कटा जे मध्यखडमा रहु इ. एम जने पूछता छैल्ले यसु जे आपणा देशमा रहु छ, तेत्रारं फरी पुछयु जे देशमा नी नगरगाम घणा है तो ह किहा रहे है तेयारें कम ने ह अप्रक गाममा रहु हु, ते गाममा बली अमुक्त पाडी त्या अग्रुक चर वताच्यु तिहा सुर्वा नेगम नय जाणती

अने सप्रद नय चाळी वोल्यो ने मारा शोर्ताना शरीरमां वस्र छ, तथा व्यवहारनय-वाळो तोल्यो ने सश्रदे बेंडो छ तेंडळाज निजानामां रहु हु, अने ऋतुमूत्र नपदाने क्यु ने भारा आत्माना असान्याता प्रदेशक क्षु हु बली सन्दन्य कहे ने भारा स्वभावत कृष्ठु, तमन सम्भिटदन्य कहे ने हु भारा गुणमा रहु हु, अने एपभूतनपदानी कहे ने

शुणाम रहु छू, अन परमुगनपरा र नानदर्गन सुणाम वसु छु प दशान पर्यो नेन सर्व यस्तुमा परेषु तथा काटरे महेशामात्र क्षेत्र अगीका वसी पूछयु ने प मदेश कया स-पनो छे तैगार् नगमनय योन्यो जे छए हब्यानो प्रदेश है वसर प्रक्र आसान मदेशमन्ये छ हब्य मेल

छ तेवार मगद नय योज्यो जे कालद्रक्य वे अप्र<sup>3</sup>नी छेते माटे मर्ग लोक्या एक सम् पणत एक आक्राश द्रव्यना महेका जुड़ो नधी माटे काल विना पांच द्रव्यनो मदेश है तेवारें व्यवहारनय घोल्यों के जे इन्य मुरुष देखाय छे तेहनो मदेश 🗦 तेतारॅ रुज़मुत्रनय बोल्पो के जे द्रव्यनी उपयोग दें प्रिचें ते द्रव्यनी मदेश है जो धर्मास्ति-कायनो उपयोग देइ प्रछिय तो धर्मास्ति-कायनी प्रदेश है, जो अधर्मास्तिकायनी उपयोगं देइ प्रक्षियं तो अधर्मास्तिकायनी भदेश है तेनारे शब्दनय बोट्यों के जे द्रव्यनो नाम लड़ प्रक्तियें ते द्रव्यनो मदेश छै हो समिभिस्टनय पोटवो ने एक आकाश प्रदेश म ये वर्मास्तिकायनो एक प्रदेश है, अधर्मास्ति-स्वयनो एक पदेश छै अने जोपना अनता दिश है प्रहळना अनता पर श्राणु प्रमुख नय बोल्पो, जे महेश द्रव्यनी क्रियाएक

अगोकार करी देखीय ते समयमा ते मदेश त द्र-यनो गणिये ए पदेशमा सात नय क्या हो जीयमा सात नय कहे है प्रध्य नैगमनयने मने ने गुण पर्यायवत शरीर

सहित ते जीय एटले शरीरमा जे घीना पुहन तथा धर्मास्तिकायादिक द्रव्य ठे ते सर्व जीव माज गण्या तेवारे संग्रहनय बोल्यो जे अस-क्यात मदेशी त जीव एउटे एक आकाशनी

मदेश टल्या बीजा सर्व द्रव्य पना गणाणां

नेत्रारे व्यवहारनय बोल्यो, जे विषय ही

काम बात सभारे ते जीव इहां धर्मास्तिकाय

अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा बीजा पुरुष



आगमसार. अनत चारित्र, शहसत्तारत ते जीत ए नी

जे सिद्ध अवस्थामा गुण इता तेन प्रदा प सात नये जीप द्रव्य बद्या

हते साननमें धर्म फहे हैं नैगमनम मोल्यो जे सर्व धर्म छ देमरे सर्व माणा धर्मने चाहे है ए नय स्वरूप धर्म नाम धर्म ने धर्म कहे दा सग्रदनय बोल्यों जे बहेरार्वे

आदरको त धर्म, एणे अनाचार छोड्यो पण श्रुगचारने वर्ध क्यो, व्यवहारनप

बोस्पो ने मुरानु कारण ते धर्म एणे पुष्प

करणीने धर्म करी मान्यो अञ्चल्यानयमा नै जपयोग सहित रेराग्यरप परिणाम ते धर्म

महिषे ए नयमा यथापट्रतिकरणना परिणाम

ममुल सर्व धर्ममा गण्या ते मिथ्याद्वीने पण

बोल्यो जे जीव अजीव नमतन्त्र तथा छ इयने ओल्खीने जीवसत्ता ध्यापे अजीवनी त्याग करे एह्यो ज्ञान दर्शन चारित्रनो शुद्ध-निश्रय-परिणाम ते धर्म ए नये सा रक सिद्ध

परिणाम ते धर्मपणे छीवा एवभृतनय बोल्यो ने शुरू ध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रीण कर्म क्षयना कारण ते साधन धर्म जे जीवनी मुळ स्वभाव ते वस्तु धर्म जे मोक्षरूप कार्थ नीपने सिद्धमा रहे है धर्म ए साते नर्ये धर्म क्छो ं हो सातनये सिद्धपणो कहे छै नेगम-

ायनी मने सर्व जीन सिद्ध छे केमके सर्व

) c£ -आगममार जीवना आड रचक मदेश मिळ समान नि मैं उ है मोट संग्रहनय यह जे सर्व जीवनी सत्तासिद्ध समान दे एण प्यायाधिक नवेंकरी कर्म सहित अवस्था ते टालीने द्रव्याधिर नेयकरी अवस्था अगीवार यरी तेवारे व्यव शरनय बोल्यों ने विचा खिन्य ममुख ग्रुण वरी सिद्ध थया ते मिछ ए नपे बाध सप ममुख अगोकार करचा, हो कञ्चम्यन<sup>र्व</sup> बोहवो के जेणे पोताना आत्मानी सिद्धपणानी सत्ता ओळसी अने व्याननो उपयोग पण तेन वर्षे है ने समये ते जीय सिद्ध जाणवी ए नये समर्गिति जीव सिद्ध समान है एम

क्षु हो अञ्चल बोल्यों ने श्रुद्ध शुक्र ध्यान तामादिक निक्षपे ते सिद्ध तैनी आगमसार. १०७ समिभिटहनय बोह्यों जे केवलक्षान केवल-टर्गन, यथारपातचारित ए गुणे सहित ते सिद्ध जाणना ए नये तैरमा चल्दमा गुणटा-णाना केवलीने सिद्ध प्रधा अने एनभृतनय

परे एक जेना सकछ कम क्षय थया लोकने भने तिराजमान अष्टगुण सपन्न ते सिद्ध गणना ए रीते सिद्ध पदे सा। नय कहा। पम सात नय मिल्या समकीति है अने जे ण्क नयने ग्रहण करे ते मिश्यात्वी ठे ए साने नय सिंह ते वचन प्रमाण है अने ए स्ति नयमां कोइ पण नयने उत्थापे तेतु वचन अममाण 🕏 हरे ममाणनो निचार कहे छै प्रमाणना में भेद है एक मत्यक्ष ममाण बीह्य परोक्ष

आगंमसार भमाण तमा ज जाव पाताना उपयोगर्थी

206

इन्यने जाण त मन्यत भमाण नहिंचे नेष क्वली छ इब्य भन्य,र भमानी जाणे सम देखे त मार्ट राज्ञान त सर्वधी मत्यक्ष हार है, अने मन पर्यवतान ते मनीवर्गणा प्रसार जापे तथा अप्रविज्ञान त पुद्रल इच्पने प्रत्यह

जाणे मोटे प ने ज्ञान देश मत्यक्ष छै पीर छग्रस्थकान ते सर्व परोक्ष ममाण छे इय परोक्ष प्रमाण कहे छै मितिज्ञानन

अने अतहाननो उपयाग पराक्ष प्रमाण

क्मक ने शासना बच्धी जाणे ते परी ममाण कहिये ते परोक्ष प्रमाणना श्रण मे छे १ अनुमान ममाण, २ आगम ममाण, चपमान ममाणा, नमां अञ्चमान पुरले कीर् एटले बाख़नी साखधी जे वात जाणियें नेंग देवलोंक तथा नरक निगोद तिगेरेनो विचार आगमथी नाणियें छैये ते आगमममाण अने कोइक वस्तनो हुगात आपीने पस्तने ओल्यावर्वा ते उपमान प्रमाण जाणवी ए ममाण कहा हो सत् असत पश्यी सप्तभंगी कहे छे ? स्यात् केहता अनेकातपणे सर्व अ-पेक्षा लेड जीवद्रव्यमा आपणा रव्य आपणी सन आपणो काल आपणो भाग एम आपणे

गुण पर्याये जीत है तेन सर्व इन्य आपणे गुणपर्यायें है ते स्यात् अस्ति नामा पहेली

भागो धर्षो ,

सहिराण देखीने जे ज्ञान थाय जेम धुमाडो देखीने अग्निज अनुमान थाय अने आगम ११० आगमसार.

९ ने जीयमा बीजा पाच उड्यमा १ इट्य २ रोत्र ३ काल ४ भार ने पद्रव्यमा गणपर्याय जीवमा नथी जटले पर्ट्रव्यमा श्र

णना नाम्त्रिपणा सर्व इत्यमा छे ए स्यान् नाम्त्रि बीमा भाग वर्षा ३ इत्य स्मार्गे अस्ति अने पर गुणे नास्ति ए ये भागा एक समये इत्यमा छ जेम ने समये शुद्ध स्मार्ग्यानी अस्ति छेतेन समये परगुणनी नास्ति पण उ. मुटि अस्ति

नास्ति ए वेष्ट्र भागा भेला छे तेम्यात् अस्ति । नास्ति तीनो भागो वयो । ४ अस्ति अने नास्ति ए वेष्टु भागा

८ अस्ति अने नास्ति ए वेहु भागा एक समयमा ठे तो वचने करी अस्ति एटली मोजनां अमरयता समय लागे तैथी नास्ति परन अस्ति कहेना थका नास्तिपणी तैन समये इब्यमा ठे ते नहीं कहेवाणी माटे मुपा बार लागे तेमज नास्ति महेता अस्तिनो मुपाबाद लागे माटे पचने अगोचर ठेएक समयमा देह बचन जोल्या जाय नहीं केमफे

भागो बढ़्यों तो अस्तिपणी नाव्यो माटे

र्र माटे वचनथी अगोचर रेते स्यात अव-क्तव्य ए चोयो भागो कह्यो ५ ते अवक्तव्यपणी ए वस्तुमा अस्ति-धर्मनो पण 3े माटे स्यात्अस्ति अवक्तव्य

एक अक्षर बोलता असल्याता समय लागे

पाचमो भागो कह्यो ६ तेमन नास्ति धर्मनो पण अवक्तव्य- पणी बस्तु माथे उ माट स्यात् नास्ति अव कव्य छहा भागा जाणको

७ ने अस्तिपणी तथा नाम्तिपणी वेष्टु वर्ष पत्रसमये बस्तु माचे ठेपण बब नथी अवक्तव्य है माटे स्यान अस्तिनामिन-युगपन् अवक्त-प ए सानमी भागी बची

हा ए सात भागा नित्य नधा अनि त्यपणामा लगाड ७ १ स्यात् नित्य २ स्यात् अनि य ३ स्यानुनिस्यानि य ४ स्यानु अवस

च्य ५ स्यान्निर्न्यअवक्तव्य ६ स्यान्अनित्य अवसम्य ७ स्यात् नित्यानित्य यूगगत् अव क्तव्य, एमन एक अनेक्ना सात भागा फ त्रा गुणपर्यायमा पण फहेना वेमक

995 सिद्ध मध्ये नय नयी तोपण सप्तभंगी तो

हो सत्ता ओल्खाननाने निभगी कहे छै १ मिव्यात्व दशा ते वावकदशा २ सम-कित गुणडाणायी माडीने अयोगी कवली ग्र-णडाणा सुनी सानक दशा जाणनी ३ सर्न क्रमेथी रहित ते सिद्ध दशा ? माननो जाण-पणों ते जीप गुण २ तेनो ज्ञाता ते जीव. ु ह्रेय ते सर्व द्रव्य, ४ भ्यान ते जीवना स्व-रपनो २ ते याननो व्याता जीप ३ ध्येष आत्मानो स्वरूप, १ कर्चाते जीव २ कर्म ते एक मोक्ष जीजो यन्त्र ३ किया ते एक , सपर बीजी आस्त्रत ? कर्मते चेतनाने कर्म वपना परिणाम २ कर्मतु फल ते चेतनाने

सिष्ठमा छे

११६ आगममार ने कम उदयना परिणाम १ ज्ञान चेतना ते जीरनो न्वराण ने आभाना गण भेद छे <sup>१</sup> आज्ञानी जीव परिसादिक परम्हाने आस्म उद्धियं करी माने ठेते वहेलो पहिसासा<sup>० जे</sup> देश सहित जीव छ ते पण निथये सत्ताराण

समान परी प्यान तेरीको अतरातमा जाणकी ३ वर्ष रतपारी परालमान पाम्या ते अरिहर नथा सिळ सर्व परमातमा जाणवा ए निम गीनो रिचार क्यो एटले आठ पसनी वि चार क्यो

सिद्ध समान 'रे एटले' पोताना जीवने सिद्ध

हण परस्त द्रव्य मध्ये छ सामान्य ग्रण जै ते महे छे पहेलो अस्तित ते जे छ द्रव्य ग्रण पर्याप महेश करी अस्ति है तेना धर्म, अवर्म, आफाग अने जीन ए चार इंच्यनों असरयाता प्रदेश मिल्या खध थाय ठे अने पुरूलमा संध चत्रानी शक्ति ठेमाटे ए पान इन्य अस्तिकाय ठे अने छटो काल

आगमसार.

ए पाच द्रव्य अस्तिमाय है अने हही काल रंपनो समय कोइ कोइथी मिलतो नथी के-के एक समय निणस्या परे नीजो समय भा छै माटे काल अस्तिकाय नर्था द्रव्यमा ा अस्तित्वपणी करो २ वस्तुत्व करेता वस्तुवणी करे छै ते इन्य छए एकडा एक क्षेत्र मध्ये रहा है, एक नाकाश मदेशमा धर्मास्तिकायनो एक मदेश रतो ठेतथा अनतात्माना अनता प्रदेश रहा। ठे पुरुल परमाणु अनता रहा ठै ते सर्व पोतानी सत्ता लीना धका रहा है पण कोई द्रव्य

315 साथ मिला जाता नथी त पस्तुपणी ३ द्वायाच पहला द्ववपाणी ते सर्व द्वाप

परे है, इहा कोड पुछ जे लोगानत सिद्धी

त्रमा धर्मास्काय है न सिद्धना जीवने चला-

चालता नयी पण ते क्षेत्रमा ज मुक्ष्म निगी

दना जीय तथा पुहल छ तहनी धमास्तिकार चला है मारे पातानी किया करें है, तेम अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुहन्ने स्थिर र

मवानी किया करे है, तथा आकाश की

षवापणो करता नयी तेत वप १ तेने उत्तर कहे ठेजे सिद्धना जाप अक्रिय छेमी

षालें पुरुल तथा जीउने चलाववारपक्रिया

यमा चलनगुण ते सब प्रदेश मध्ये के संग

पातपातानी क्रिया कर एटउ धर्मास्तिनी

શ્ રેહ

तै सर्व द्रव्यने अवगाहनारूपकार्य करे उै इहा कोइ पुठे जे अलोकाकाशमातो बीजु कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश कया द्रव्यने अवगाहदान आपे ठे नेने उत्तर कहे छे जे अलोकाकाश्रमा अवगाह करवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज ठे परतु तिहा अवगाहनो दान लेनार द्रव्य कोइ नथी माटे अवगाहडान करतो नथी अने प्रद्रल द्रव्य मिलवा विख-खारूप क्रिया करे है तथा कालद्रव्य वर्त्तना रूप क्रिया करे छै अने जीव द्रव्य ज्ञान ल-क्षण उपयोगरूप किया करे हे एम सर्व द्रव्य पोताने परिणामी स्वसत्तानी किया करे है ए द्रव्यस्त्रपणी कही ४ प्रमेपत्व कहेतां प्रमेपपणो जे छ इ- ११८ आयमसार व्यमा ममेयपणो छे, तेनी ममाण केश्चीः पो-ताना ज्ञानयी फरे छे, जे धमास्तिराय तथा अयमास्तिराय अने आकाग्रास्तिकाय एकक

द्रव्य ठे अने जीवद्रव्य अनता छे नेहनी गणित कहे छ सदी महुष्य सम्पाता ठे, असती महुष्य असम्याना ठे, नासकी असप्याना ठे, दवना असप्याना छे, निर्यच पचेन्द्रिय अस व्याना छे, चेडन्द्री असम्याना, नेहन्द्री चौर्रद्रीय असप्याना ठे पृथ्वीकाय अस स्याना, अपकाय असस्याना, नेडकाय

असत्त्वाता, गापुराय असन्त्वाता, प्रत्येक बनस्पति जीव असस्त्वाता, त थर्रा सिष्टना जीव अनता ते थकी पान्य निगोदना जीव अननागुणा एटमें वाद्य निगोद ते फद्मून अगमसार ११९
आदु सुरण महुस्स एहने सुद्देने अग्रभाग अनता जीव ठे ते सिद्धना जीवधी अनतसुणा
छे अने सुक्ष्मनिगोद सर्वधी अनत सुणा ठे.
सुक्ष्मनिगोटनो विचार कहे ठे लेटला ली
काकांत्रना मदेश तेटला गोला ठे ते एकेक

गोलामा असम्याता निर्गोद है निर्गोद श दनो अर्थ ए रे जे अनता जीवनो पिंड भूत एक शरीर तेडने निगोद कहियें ते एकेकी निगोदमध्ये अनता जीव ठे ते अतीत पार्जना सर्व समय तथा अनागतकालना सर्व समय अने वर्तमान कालनो एक ममय तेने मेला करी अनत गुणा करीये एटला एक निगोदमा जीप है एटले अनता जीव है ए ए ससारी जीत एककाना असरयाता पदेश

ें अने परका प्रदेश अनंति कर्म वर्गणा

न्यान्या छे ते धनी अनत ग्रणा पुहल परमाध

गोलाय असखिलाः असम्ब निगोपओ हरह गोलो॥ इकिएमि निगोप. अणतजीया मुणेयवा ॥ १ ॥ अर्थ--लोक महि असरयाना गोलाछ, परेका गोला मध्ये असरव्याति निगीद छै। एवक निगोदमां अनता जीव छ ॥ सत्तरस समहियाकिरी। इगाश्चपाश्चमि हृति सङ्ग्या ॥

लागी है ते एक्क वर्गणा मध्ये अनता पुरुल परमाणु छे पम अनता परमाणु जीव सार्वे

जीवयी रहित छटा उ



## 100 अस्य जनाजीया.

जेहिं न पना तमाउपरिणामी ॥ उवज्ञतियचयति य. प्रणावि तत्थेर तत्थेर ॥ १ ॥

अर्थ---निगीदमा अनता जीव एहता B, ज जीव बसवणी पहेला कियाँरे पाम्पा न गा अनतो पाल पूत्र गयो अने अनतो

राज नाध पण ते जीव बारवार निहान उपने है अने विद्यान चये है एम एक नि गोदमा आवा जीव है त निगादना वे भेद छ एक व्यवहार राणी निगोद अने बीजो

अन्यादारराशी निगोद तेमा न बादर एउँ-न्द्रिपणो भावें त्रसपणो पामीने पाछा निगी

माइ पट्या है ते तिसोटिया जीवने

व्यवहार राशिया कहियें, अने जे जीय कोड पण काले निगोदमाधी निकल्या नथी ते जीव अञ्चयदारराशीया कहिये अने इहा मनुष्य-पणाथी जेटला जीव कर्म खपावीने एक समयमा मोक्ष जाय है तेटला जीव तेन समये अन्यतहारराश्ची सहम निगोदमाथी निकलीने चर्चा आवे है जो दश जीन मोक्ष जाय तो दश जीव निकले कोइक वेलाए भव्य जीव ओछा निकले तो ते टेकाणे एक वे अभव्य निकले पण व्यवहारराशीमा जीव कोड वर्वे घटे नहीं एवा निगोदना असएयाता लोक-

माडेळा गोला ते छिटिशीना आच्या पुद्रव्यने आहाराटिपणे से ठे ते सफल गोला कहेवाय अने लोफ अतना मरेजे जे निर्मोटना यना असरपाना भेरेश है तिहा एक भेरेगमा अगुरलपु असमयाती है अने बीना भड़ेशमां अनना अगुरलपु है, त्रीना भड़ेशमा संख्याती

रागमनार

अगुरलपु हे एम जसरूपाना मदेशमी अगुरर पृष्याय परनी त्रपना रह हेत अगुररूपु परांष चल हेते के प्रदेशमा अमर्पाती हेते प्रदेशमी अनतो पर्रप है अने जनताने हेबाणे अस

रपातो थाप छ एम लोक्षमाण असम्पात प्रदेशमा शरीगो समझाले अगुर लघु पर्याप फिरे छे ते जे प्रदेशमा असरपातो फिरीने जनतो थाप ठे ते प्रदेशमा असरपातपातो

अनतो थाय ठे ते ब्रदेशम् असर्पात्तपानो विनाश ठ अने अनत्तपगानो उपज्ञते ठे अने ्रे पुण ध्रुय छे पम उपज्ञते विर अने धुर ए प्रणे परिणाम छे अपमी

स्तिकायमां पण ए जणे परिणाम असरयात भदेशे सदा समय समयमा परिणमी रहा है तैमा पण उपने विणशे अने थिर रहे छै एम 'आकाशना अनता भदेशमा पण एक समये प्रण परिणाम परिणमे है अने जीवना अस-रयाता प्रदेश है ते मध्ये पण उपने विणशे ंथिर रहे (३) तथा पुट्टल परमाणुमा पण समये समये थाय है अने कालनो वर्शमान समय फिटीने अतीतकाल थाय छे ता तै समयमा वर्त्तमानपणानो विनाश 🕏 अने अवीतपणानो चपजवो ठे काल पणे ध्रुव ै ए स्वल थकी उत्पाद व्यय ध्रुवपणो क्यो अने वस्तुगते मूलपणे ज्ञेपने पलटो माननो पण ते भासनपणे परिणमत्रो वाय १३० आगममार १ अनन्त भागट्राइ, २ असम्यातभागर्टीर १ सम्यानभागर्टाइ, ४ सम्यानगुणर्टीर ५ असम्यानगुणर्टाइ, ६ अनतगुणर्टीह हैं

छ महाराी हानि कहे है. १ अननमानहारि, १ असर यानभागहािन, ३ सर यानभागहािन, ४ सर यानभागहािन, ४ सर यानगुणहािन ६ असर यानगुणहािन ६ असर यानगुणहािन ६ असरायानगुणहािन ए सीने छ असराया हिन तथा छ महारानी हािन ते सर्व इत्यमा महस्य समय समय धह रहाि छ हिद्द ते उपने जाने हािन त न्यय कहिये ए अग्रर-अपूर्ण

क्यो नहा गुर तथा नहा छन्न ते अगुरुण्ड स्वभार कहिये o सर्व द्राव मध्य छे, ते श्री भगवती सूर्वे " सन्बदन्या सन्बगुणा सन्बग् सन्वयन्त्रता सन्बद्धा अगुरुक्हुआर आगमसार १३१ अगुरुरुषु स्त्रभाउने आवरण नथी तथा आत्मा म ये जे अगुरुरुषुगुण ते आस्माना

पर्व मदेशे क्षायिक भाव थये सर्व गुण सामा-

न्यंपणे परिणमे पण अधिका ओछा परिणमे नहीं ते अगुरुलघुगुणचु मवर्तन जाणगु ते भगुरुवषु गुणने गोत्रकर्म रोके हे ए अगुरु-<sup>ह्यू</sup> स्वभाव ते सर्वे द्रव्यमा उ 📞 हवे गुणनी भावना कहे है तिहा जेटला उए द्रायमा सरीग्वा गुण ठे ते सामान्य गुण हिंदे, अने जे गुण एक द्रव्यमा छै अने ीमा द्रव्यमा नधी ते निशेष गुण कहियें जे

ष्ण कोइक डब्यमा उे अने कोहरू डब्यमा थि ते सावारण असाधारण गुण कहियें एष छ डब्यमा अनतगुण, अनन्त पर्याय, १६२ आगमसार भनन्त स्रभाग सन्। द्वाश्वता हे जैम के राखी भगवत प्रस्पात सर्वे जे रीते है है रातें सहहणा पूर्वर यथार्थ उपयोगर्धा क्षत

क्षानादित्रया ययाधेषणे जाणता सहहवा पै निश्चयम्ञान माक्षत्र सारण छे जे जीव ज्ञान पाम्यो त जीत निरति फरे छेते चारित्र कहिंप पानत्र फल्ट विरनिषणो छेते मोक्षत्र

कहिंग शानतु फल विरितिपणी छे ते मासितु तत्राल कारण छे दन निथम चारित्र भने ब्यवहार चा

हन निश्चय चारित्र भने उपत्रहार चा रित्रनो विचार कहे छ तथा प्रथम उपत्रहार चारित्र ते के प्राणानिपातिवसमण प्रमुख प्र भहानतस्य ते सर्वे विचार काल्य चारान

नारत ते ने माणानिपातिवस्मण महस्त पष महात्वरूप ते मर्व विरति कहियं अने म्थून पविर मतादिक शावकना बार ते वेश विरति चारित्र जाणग्र एव्यव- ऑगमलार.

पाने पण सकाम निर्ज्ञरानु कारण न थाय हाकोइ पूठेक मोत्तु कारण नधी तो एटछ कष्ट का वास्ते किंग्यें ? तेने उत्तर जे त्याग चुढि निश्रय ज्ञान सहित चारित्र ते मोतनु रारण 🤊 माटे निश्रय चारित्र स-हित व्यवहार चारित्र पालग्र ते निश्चय चारित्र

क्टे छ बरीर, इन्ट्रिय, विषय, कपाय, योग र मर्ने प्रवस्त जाणी छोडवा तथा आहार ते पुरुष वस्तु जाणी छाडवो आत्मा अणा-हारा देते माटे मुजने आहार करतो घटे नहीं जाहार ते पुहल छै, आत्मा अपुहली

\$38 छै ते माटे त्यान करतो तट्टप जे तप ते तप,

वहारथी कहे 🕏

निजय चारित्रमा जाणव चारित पहेता चचलता रहित थिरताना परिणाम अने आ

त्मस्यरूपने विषे एक्त्रपणे रमण सन्मयता स्वरूप निश्राति तत्त्रानुभव ते चारित कहियें ते चारितना ने भेद है एक देशनिर्ति, बीह सर्व विरति तिहा देश विरति कहेता श्रान-फना पार प्रत ते बार प्रत निश्चय तथा व्य

? भाणातिपात जिरमण जत ते परजी-चने आपणा जीप सरीखो जाणी सर्व जीवनी रक्षा करे त व्यवहार दया वह माटे "यवहार ेल विरमण पत जाणबु अने जे ।। जीव कर्म वश पड़ियो दुःखी थाय छै ते आपणा <u>जी</u>बने कर्मवृत्रन्धी मुक्षात्रयु अने आत्म गुण रक्षा करी गुण चृद्धि कर्त्वी ते स्वस्या वबहेतु परिणति निरारि स्वस्य गुणने मगट्यणे करवा जे गुण मगट थयो ते रात्वो एटले ज्ञाने करी मिट्यास्त्र टाली आपणा <u>जी</u>बने निर्मल करे ते निश्चयधी माणातिपात विरमण वर्त कहियें

२ मृपाबाद निरमणजन कहे छे ज ह वचन विलक्षल वोल्य नहीं ते व्यवहार मृपा बाद विरमणजन, हवे निश्चय कहे छे जे पर् पुरुलादिक पुरुले आपणी कहेबी ते मृपाबाद बचन छे अने जीवने अजीव कहे तथा अजी-वने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान ते भाव मृपाबाद छे. अथना सिद्धान्तना अर्थ खोटा कहे ए मुपायाद जागे छाज्यो त निधम मुप्त

325

ज्ञान अने चारित्र ए त्रणनो भग करची तथा आगममा एम कर्ग छै जे एक साधु चोथो प्रत भग करयो अने एक साध्ये बीतं मृपावाद जत भग करवी ती जेणे चौथा व भग रुरघो ते आलोयण लेंद्र शुद्ध थाय प ने सिद्धान्तना अर्थनो मृपा उपदेश आपे पालोपण लीचे पण श्रुद्ध थाय नहीं ३ अदत्तादान विरमण जत कहे<sup>ँ</sup>

बाद विरमणतन वहिये, एर्टल बीजा अरचा

दानानिक प्रत जा भान (भाग) तो हेनी

मात्र चारित्र भग थाय पण ज्ञान दर्शननः

भग न थाय अने जेण निश्चय प्रपाताह तिरमणनो भग पराो तेण समक्ति नप जे पारक धन वस्तु छुपारे, चोरी करे; टग्-वानी करी लीचे ते चोरी ठे, एटले पारकी वस्तु घणीना दीया विना लेवी नहीं ए व्य-

9 30

वहारथी अदत्तादानविरमण त्रत जाणतु अने ने पाच इदियना त्रेतीस विषय, आठ कर्म-वर्गणा इत्यादिक परवस्तु लेवी नहीं तथा तेनी बाछा न करवी ते आत्माने अग्राध छै

आगमसार

माटे ते निश्चपुर्थी अदत्तादानतिरमण त्रत क्हिंगें इहा कोइ पूछे ने विषयनी अने र्मिनी बाठा कोण करे छे? तेने उत्तर जे पुण्यने भेळो छेवा योग्य कहे छैते जीव र्क्षेनी बाबाकरे 🤊 जे पुण्यना ४२ भेट बै वार कर्मनी शुभ मकृति है एटले ने न्या हिं अदत्तादान तो नथी लेता पण अंतर्ग

136 पुण्यादिक्रनी पाछा उ तने निधय अदत्तारान लोग है

४ में युन विरमण यत यहे छै जे पुरुष परसीनो परिहार करे तथा जे स्तीपरप्रमपनी परिहार नरे नहा साधने स्त्रीनो सर्वधा स्थाग

<sup>चे</sup> अने गृहस्थने परणेजी श्ली मोकली ठेपर र्खीनो पंचरवाण है ते व्यवहारधी मधुनतु विरमण कहिये अने ज विषयना अभिलापत्र तथा ममता सुष्णानो त्याग,परभाव वर्णाटिक

परद्रव्यना स्वामि बादिक तेनो अभौगीपणी आत्मा स्वगुण ज्ञानादिकतो भोगी है अने प पहल्खेंघ ते अनता जीवनी एँड है तैने बेंग

े ए रीते स्थाग निश्रयधी मैथन विरमण जेके बाह्य विषय छाड्यो है अने

१३६ अतरम लालच छुटी नथी तो तेहने ते मेथु-नना कर्म छागे है

५ परिग्रह परिमाणत्रत कहे है परिग्रह

थन-- ग्रान्य--डास--डार्सा-चतुष्पड जमीन-**-** स्त्र आभरणनो त्याग तेमा साधुने तो सर्वथा परिग्रहनो त्याग ठे तथा शावकने इच्छा परिमाण है जेट्डी इन्छा होय तैटलो परि-<sup>भू</sup>इ मोकलो रास्ने नीजानी निरति करें प

ंब्यवहारथी कह्यो अने जे भाव कर्म रागद्वेव अज्ञान द्रव्य<u>कर्म ज्ञाना</u>नस्णोय प्रमुख आङ किम अने शरीर इन्ट्रियनो परिहार एटले 💎 कर्मने जाणी छाड्यो ते निश्चयथी परिग्र-हनो त्याग एटले परवस्तुनी मूर्ज छाटवी नेणे पूर्छा छोडी तेणे परिग्रह छोडघोन

रभ प्रमुख वरतानी आज्ञा प्रमुख आवना है

अन्धेदद

विना जावनी वय करवी पारका बासी श्री

व्यवहार अनर्धदह अने शुभाशभ वर्षेत

मिन्यान्य अतिरति कपाय योगची वधाय है

तेने जीव आपणा करी जाणे ए निधयम

९ सामायिक जत कहे 🕏 जे मन वच

कायाने जारमधी टार्लीने तेने निरारमपण

वर्त्तावे ते व्यवहार सामायिक जाणको अने जे जीव शान, दर्शन, चारित्र गुण विचारे

सर्व जीव सत्ता गुण एकसमान जाणी सर्व

स्यु समतापरिणाम ते निव्यय समतारूप सामा विक कहियें

१० देशानगाशिक प्रत करे हैं, जे सर

वचन काय योग एक टोर करी एकस्थानक वैसी वर्ष यान करवो ते व्यवहार देशावगा-

१२३

आगमसार

विंक कहिये अने जे श्रुतनाने करी छ द्रव्य ओरमीने 'पांच द्रव्यनो स्थाग करे अने ज्ञान बर जीरने प्याने ते निश्चय देशारगाशिक जत कहियें ११ पौपध जत कहे छे जे चार पहोर

प्रपत्ना आठ पहोर सुधी समता परिणामें सात्राय छोडी निरारंभपणे सङ्गाय यानमा प्र- वर्ते ते न्याहार पोशह किहमें अने पोताना जीवने ज्ञान पानधी पोपाने पुष्ट करे ते निश्च पत्री पोपात्र कहिये जीवने पोताना स्व- पूणे करी पोपीने तेले पोपा किहमें ते अने पीपा कहिये हैं अने पीपा तत कहे हैं जे ले

रेश्थ आगमसार
पोगहने पारणे अथवा सदा सर्वदा साधुने
तथा जनगर्नि प्रावक्तने पोतानी शक्ति प्रपाणे
दान देतु ते न्यवहार अितिधसि प्रभाग करिये
अने पोताना जोचने अथवा शिष्यने शान्त
दान त भण्यु, भणाव्यु, मुण्यु सुणाव्यु, ते
निधयभा अतिधिसमाना व्यत कहिये पटले
धावकना वार जत कश्या ते समक्तित सहित

ते जीवने पावमे ग्रुणटाणे देशविरति आवक कहिर्षे देन रहता देशवकी योडीशी त्रति पणा छे माटे अने यतिने सर्वथी व्रतिपणी ठे तैथा पाच महात्रत ठे साधुने पाच महा त्रतमा सर्वे त्रत आख्या ए निश्चय स्पामस्य

यान सबर निर्कारामा थिरताना परि

जे निश्चय तथा व्यवहारथी बार प्रत परि

णाम ते निश्चय चारित्र तेना एक उत्सर्ग वीजो अपनाद ए ने मार्ग छे तेमा जे उत्कृष्ट

रूप ते अपवाद—उक्तच ॥ " सघरणिम अ-सुरू, हुन्नवि गिन्द तदेतयाणिहेय ॥ आजर दिह तेण, ते चेवहीय असघरणे " ॥ १ ॥ एटले ज्या सुत्री सात्रक माऽने त्राथक न पढे त्या सुत्री जीहनी ना कही ते आदरवी

नहीं अने जो सामक परिणाम रहेता न दीठा तैगरे जेहनी ना ते आचरे तेने अपवाद मार्ग किर्दि ने आत्मगुण राखवाने करने ते अपवाट अने गुणीने रागे भक्तियें करने ते प्रपत्त ए वे तो साधन छे अने ने औटिय-क्ते अखनगाथों करने ते अतिचार है -तथा

आग्रमार

तीक्ष्ण परिणाम ते जन्मर्ग राखवाने कारण-

वलो अने जीद्यिक माटे,आमक्तपण कर्ख

ह्ये चार ध्यान बहे है ? आर्त यान, २ रोड यान, ३ धर्मे व्यान. ४ शुक्रण्यान तिहा पहेला वे प्यान ते अशुभ वहियें अने पाउरा वे यान ते सुभ छे. जे एक ध्येपने विषे अत्र मुहर्त विचनी उपयोगनी तन्मप एकाग्रपणे थीर रहेगो ते ध्यान अने केवलीने योगनो रोक्वो ते ध्यान उक्तव, अतो सुर् त्ता मित्ता चित्तावत्थाणमेग वर्ध्याम्म उउमत्थाण झाण, जोगनिरोही जिणाणह ि । मनमा भारट दोहरूना परिणाम ते आ कदियें तेना चार पाया छे १ भार

पडिवाइ छे ते माये अपवान मार्ग ते परि ाम दृढ रह तेम आज्ञार्य करवी

};

ममुख इष्ट बस्तुनी वियोग ययायी विलाप फरे ते पहेळी इछ वियोगनामा आर्त यान तथा २ अनिष्ट जे भुटा दु:खना कारण, दुरमन दरिद्रीपणी, तथा कुपुतादि मलवाथी मनमा दुःस्त्र चिता उपजे ते अनिष्ट सयोग नाम आर्तियान ३ शरीरमा रोग उपना थका दु:ख करे, चिंता घणी करे ते 'रोगर्च-तानाम जात पान ४ मनमा आगलना पख-तनो शोच करे जे आ वर्षमा आ काम करश. आवता वर्षमा अमुक काम कम्छ तो अमुक लाभ यहें अध्या दान शील तपनु फल मांगे जे आ भवमा तप की नो छै माटे आवते भने इर चक्रवर्त्तिनी पदवी मछे पहनी आगला प्यान कहाये. ए धर्म करणीना फलनु निया ण समिति न करे ए आर्तभ्याननी घोषी पायी जाणवी ए आर्तित्यानना चार भें कहा ए तिर्वेच गतिना काम्ण छे. ए ध्यान ना परिणाम ते पाचमा अथवा छहा गुण

टाणा सधी होय जे कडोर परिणामन चिंतवन ते रौ इध्यान तेना चार भेट है ? जीवहिंसा क

रीत हर्ष पामे अथवा बीजो कोड हिंसा क रतो होय तेने देखी गुशी थाय अयवा यद्धनी अनुमोदना करे ते हिंसानुप्रवी राद २ गृह बोलीन मनमां हर्प पापे के आगमसार. १४९ जुओ म केवी कपट केठच्यो मारा जुठाप-

णानी खपर कोइने पड़ी नहीं, एवी मृपावाद स्वपरिणामते मृपातुमधी शौद्रध्यान. ३ चोरी करी अथवा उगाइ करी मनमा खुशी थाय क मारा जेवो जोरावर कोण छै, ह पारको माल खाऊ छ एवी परिणाम ते चौरानुनि रौद्रध्यान ४ परिग्रह वन धान्य परिचार षणो वधवानी लालच होय ते धन अथवा इडवने माटे गमे तेच पाप करे अथवा घणो परिग्रह मिल्याथी अहकार करे ते परिग्रहरक्ष णातुप्रथी रोईंध्यान ए रोद्रध्यानना चार भेदकवा ए ध्यान नरकगति पमाडवानु कारण छे महा अञ्चभकर्मनु कारण छे ए पीचमा गुणवाणा सुधी है अने छहे एणवाणे

१५० आगमतार. पण एक हिंसानुव्यीरोद्रव्यानना परिण्

पण एक हिंसानु काइक जीवने होय हा धर्मध्यान

हा धर्मः यान कहे छे जे ज्यवहार मि यारप ते कारण धर्म तथा श्रुतज्ञान अने चा रिज ए उपादानपणे साधन धर्म तथा रत्त ज्यो भेदपणे ते उपादान ग्रुग्ध ज्यवहार उस गांऽज्ञयायी त अपवाद धर्म जाणवो अने अ भेद रत्नज्ञयां ते साजन गुद्ध निधयनमें उ

मेद रत्ननर्या ते सानन शुद्ध निध्यनमय व रसम धर्भ अने (धम्मो वर्ध्ध सहात्रो) ने बस्तुनो सत्तामत शुद्ध पारिणामिक स्वगुण महति कर्नादिन अनतानद रूप सिद्धानस्थाय रह्यो त पनभूत उत्तर्मा उपादान शुद्धधर्म, त धर्मेश्च भासन रमण एकाव्रपणे चितन तन्मय उपयोग एकत्वनो चितन्त्रवो ते धर्म ध्यान किह्यें तैना पाया चार ठै ते करे छे . १ आज्ञाविचयपर्म यान ते ने बीतराग देवनी आज्ञा साची करी सद्देहे एटळे भगउते

छ द्रव्यर्ते स्तरप नय प्रमाण निक्षेपा सहित विद्य स्तरप, निगोद स्वच्य ने कहा तैय सदेहे, बीतरामनी आज्ञा नित्य अनित्य स्या

हारवणे निश्चय व्यहारपणे माने सद्दहे ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग मामन थयो तेने हर्षे करी ते उपयोग मध्ये निर्धार, भा-

सन, रमण अनुभवता, एकता, तन्मयपणो ते आज्ञाविचय वर्मध्यान कहिये

र अपायतिचयवर्ष यान ते जीवमां अ-शृद्धपणे वर्षना योगधी संसारी अतस्थामां पनेक अपाय कहेता दूषण छे ने अहान,

## आगमसार

गाम, द्वेष, ऋषाय, आस्त्र ए मारा नथी. हु एथरी न्यारी छ ह अनतज्ञान, दर्शन, चारित, वीर्यमयी, श्रन्द, युद्ध, अविनाशी

१५२

छु अन, अनादि, अनत, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अग्रम्य, अनामी, अरपी, अकम्मां, अव रक, अनुदय, अनु

नगादी, अगुरुलघु, अपरिणामी, अतीन्द्रिय

दीरक, अयोगी अभोगी, अभेदी, अरेदी, अछेदी, अखेदी, अकपायी, असखाइ, अले श्री, अश्रारीरी, अणाहारी, अव्यापाध, अन

अमाणी, अयोनि, असमारी, अमर, अपर

अपरवार, अन्यापी, अनाश्रित, अऋव, अ

विरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी असगी एवी शब्द चितानद मारी

- जीव ठे, एहवी एकाग्रतारूप ध्यान ते अपा-यिवयधर्मध्यान जाणवी अ विपाकविचय धर्मध्यान कहे ठे जे
- पहनो जीन ठे तोषण कर्मवरें दुःसी ठेते कर्मनो निमाक चित्तवे जे जीवनो ज्ञानगुण ते ज्ञानावरणीय कर्मे दाच्यो ठे अने दर्शना-वरणीय कर्मे दर्शनगुण दाव्यो ठे, एम आठ

क्में जीवना आठ गुण टाव्या ठे एटले आ ससारमा भमता थका जीवने जे सुखदुःख ठे ते सर्वे क्सेनां कीषां ठे माटे सुख उपने रा-चयु नहीं अने दुःख उपने दिलगीर थयु नहीं,

च उ नहां अने दु:ख उपने दिलगार थ उ नहीं. कर्षे रत्ररूपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने भन्नेशनो वध, उदय, उदीरणा, तथा सत्ता, चितन एकाग्रता परिणाम ते विपाकत्रिचय रं आगमसारः

धमध्यान

४ सस्थानित्रचयपर्मध्यान कहे है है

चडद राजमान लोकनु स्वरूप बिचार ने ९
लोक त चडदराज जची ठेते मध्ये सातराव अंग्रेलिक ठे विचमा अंदारसी योजन मतुष्

अनाशक ठ जियामा अहारसा योजन महण्य क्षेत्र निज्ञों छोक जै ते उत्तर काइक उजी मानराज उ क्लोक जै तेया सर्थ वैमानिक देवना वसे छै अने उत्तरें सिद्ध निष्ठा सिद्ध क्षेत्र छे ए रीते लोकजु ममाण जै ए लोकजु सस्मान देवाल छे असली कास अम्बन्ध

सस्थान वैज्ञास्त छे अनती काल आपणा जीर्रे मत्यारमा भमता सर्व लोकने जन्म मरण क्रों फरस्यो है, पह जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पचास्तिकायन अवस्थान तथा रि । इंड्य मण्ये ग्रुणपर्यायनु अवस्थान तेनो ने प्रभावताये तनमयर्चित्तरन परिणाम
पर्यु ने ध्यान ते संस्थान तिचय धर्म यात्त
कहिएँ ए धर्म यानना चार पाया कथा ए
धर्म यान चोथा गुणठाणाधी माडीने सातमा
गुणठाणा सुवी छे
हवे शुक्त यान कहे छे शुक्त केन्ता निमन्, शुद्ध, पर आलगन जिना आत्माना

गुणवाणा सुवी है <sup>म्ल,</sup> शद्ध, पर आल्पन विना आत्माना संरुपने तन्मयपणे व्याने एहर्नु ध्यान तेने धुमध्यान कहियें तेहना पाया चार है ते यहे है १ प्रथमत्वितिकसमिविचार-ते पृथमत्व नहां नीतयो अजीत जुड़ा करता, स्त्रभात विभाव तेने जुदा पृथक्षणे वहेंचण करवी सरपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक-

१५६

पणे भ्यान करी, पर्याय ते गुणमां सक्रमाने

अने गुण ते पर्यायमा सक्तमण करे ए रीत

स्वधर्मने विषे धर्मीतरभेद ते पृथक्त कहिएँ

अने तनो वितर्फ त ज श्रुतज्ञाने स्थित उप

योग अने समविचार ते सविकल्पोपयोग

ण्डले एक चितव्या पछी बीजो चितववी तेने

विचार कहिये एटले निर्मेल विकल्प सहित

पीतानी सत्ताने ध्याने ते पृथवत्व वितर्कसम

विचार पेहेलो पायो ए आदमा गुणटाणायी

माडी अग्यारमा गुणठाणा सुधी छै

२ एकत्य वितर्कअवविचार नामा बीजो

पायो कहे छै जे जीव आपणा गुणपर्यायनी

एकता करी भ्याने ते आत्री रीते के जीवना अने जीव ते एकज है, अने महारो

भागमसार १५७ जीव सिद्धस्वरूप एकन ठे एवी एकत्व स्व-रूप तन्मयपणे अनता आत्म धर्मनो एकत्वपणे भ्यानवितर्भ केहता श्रुतज्ञानावलबीपणे अने अमितचार केहता विकल्प रहित दर्शन झाननो समयांतरें कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्ववितर्के अप-विचार जाणवो ए पायो बारमा गुणठाणे व्यावे ए वेह पायामा श्रुतज्ञानात्रलपनीपणी

ठे पण अवधि मनःर्षयन ज्ञानोपयोगं वतेता जीव कोइ यान करी सके नहीं, ए वे ज्ञान परातुयायी छे माटे ए ध्यानथी घनघातिया चार कर्म रागावे निर्मक केवल ज्ञान पामे पठे तरमे ग्रुणठाणे ध्यानतरीकाषणे- वर्चे ठे तैर- माना जने जो चडटमे गुणठाणे पाशीना वे

161

पाया यात्र

३ मूल्पक्रिया अवतिपति पायो करें उ त सूक्ष्म मन, पत्रन कायाना योग रघे, शै-रेशी करण वरी अयोगी थाय ते जे अपनि-पाति निर्मेलगीय अचलतास्य परिणाम त

मूक्ष्मित्रयाअवित्यानि व्यान जाणा इहा स त्ताये ८५ प्रकृति रही हती ने माये ७९ खपार

४ उन्छिनियानुरुत्ति पायो कहें छ र योग निस्थ शीबा पर तेर महति खपान

भरमा थाय, सबै कियाया रहित थाय है, िष्य कियानियति शहध्यान कहिये

यान ध्यावता नेप, दल, खरणस्य किया

आगमनार उन्जेदे, अवगाहना देहमानमाथी त्रीजो भाग घटाडे, शरीर मुकी इद्दायी सातराज ऊपर लोकने अते जाय, सिद्ध थाय इहा शिष्य पूछे जे चोदमे गुणटाणे तो अफिय छै, तो सात राज उची गयो ए किया केन करे उँ ? तेने उत्तर जे सिद्ध तो अक्रिय ठै, परतु .पूर्व मेरणाय तुर्वाने द्यान्ते जीवमा चालवानो

गुण ठे धर्मास्तिकायम-ये भरणा गुण ठे, तेयी कर्मरहित जीव मोक्षे जता छोक्तने अते जड रहे इहा कोड पूरे जे आगळ खचो अ-लोक है तिहा किय जातो नयी ? तैने उत्तर

ने आगठ धर्मास्तिकाय नथी माटे न जाय. पत्नी कोइ पूठे जे तो अपोगतियें अथवा तिरच्छी गतिये केम नथी जातो ? तेने

१६० उत्तर जे कर्मना भारधी रहित थयो, इल्लो

थयो, माटे नीचो तथा डार्नो जिमणो न जाय,

अविकार कहारे

फारण के प्रेरक कोड़ नथी तथा कपे नही क्रमके अक्रिय छ माटे तथा कोई पूछे जे सिद्धने कर्म रम लागता नथी ? तेने कहे छे जे कर्म तो जीवने अज्ञानधी तथा योगधी लागे ठे, ते सिद्धना जीवने अज्ञान तथा योग नथी, माटे कमें जाने नहीं ए चार भ्याननी

इन पती बीजा चार भ्यान कहे हैं ? पदस्थ, २ पिंडस्थ, ३ रूपस्थ. ४ रूपातीत तेमा पहेलु पदस्थ ध्यान कहे है जे अरि हतादीक पाच परमेष्टीना गुण सभारे, तेनी ध्यान करे ते पदस्य यान २ पि स्य केहतां शरीरमा रह्यो जे आपणी जीव म अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय ने साबुपणाना गुपा सर्व ठे एहवो जे ध्यान पिंड बहेता जीव द्रव्य अथवा आकार ापदा स्थापना तेनु अवख्यन पामी गुणीना ण मध्ये एकत्त्रता उपयोग करवो ते पिंडस्थ <sup>गन,</sup> ३ रूपमारह्यों थको पण ए मारो रूपी अनत गुणी छे, जे वस्तुनो स्वरूप विश्वयानल्बी थया पठे आत्मानुं रूप एक-पणो एह्रा के ध्यान ते रूपस्थ-यान ए ग ध्यान धर्म ध्यानमा गणवा ४ निरजन, र्मल, सकल्पविकल्प रहित अभेद **ए**क द सत्तारूप चिदानद तत्त्वामृत, असग, वट, अनंतगुण, पर्यायरूप, , आत्मस्वरूपनु

१६२

आगमसार ध्यान त रूपातीत व्यान जाणब इहां मार्गः

इये मापना कहे है तैमा धर्म ध्याननी चार भावना कहे हैं ? मैत्री भावना ते सर्व र्णाव साथे मित्रतानी भाव चित्रवी. सर्वेड मलु चाहवु पण कोहतु मार्ड चितवबु नही सर्वे भीव ऊपर दित युद्धि राखरी ते मैर्व भावना २ गुणवत अने ज्ञानादिक गुण राग जे गुणी भी अरिहतादिकन

णागुणठाणा नयममाण मति आदिक हार क्षयोपरायमात्र सर्त्र छ।दवा योग्य थया, एक मिद्रना मृल गुणने ध्याने ते रपानीत ध्यान जाणवो एटले मोक्षत कारण जे ध्यान <sup>ह</sup>

कश

वरामोगी तत्त्वविलासी एवा अद्भुत मभुजी यहो मभुजी यहो मभुजीनो उपकारता अहो

मसनी निःसंगता एहवो जे परिणाम ते अ-दस्तता वली दःखे करी मोहाबीन मोहमपी पुरुगल रगी पराधीन मने पहवा परमात्मा मध अथवा यधार्थ वादी गुरु तथा स्याद्वाट धर्मनो योग मिल्यो, आज मुजने चिताम-णिनी कोही मिलि आज माहरा मननो मनोरय सफल थयो. एडर्रा आश्चरता तथा वली रखे मने एहमा कारणनी विरह पहे पहनो कायरता परिणाम ते नीजी प्रमोदभा-वना इ जे वर्मत्रत ऊपर राग अने मिथ्या-त्वी जपर राग नहीं तेम द्वेप पण 358

नहीं थारण के हिंमक ऊपरे पण दशम जी

वने बरुणा जपने जो उपदेश थकी सार्प

मार्गे आपे तो तने शब्द पार्गे आणवी, करा-

चित्र मार्गे न आपे तो पण देव न रालकी

रमके ते अजाण है एम समज्ञ पहना जे प

णाम तथा धर्महीन जीव देखीने एवी विनष जे ए जीव कियारें धर्म पामशे, यथार्थ आत्म साधन पामी स्वरूप पर्मने किवार (वचारे) ाशे एवी परिणाम ते चौथी करुमा दया भावना ए चार भावना कहीं

रिणाम ते मध्यस्य भावना उ सर्वे जांवने

पोताने तुल्य जाणी दया पाले. कोइने रूपे

नहीं तथा जे दृश्यी अथवा धर्महीन तेनी जीव उपर करणा तेना द ख टाळवानी परि-

१ हवे बार भावना कहे है शरीर. हेंदुव, धन, परिवार सर्व विनाशी छै जीवनी मुल धर्म अविनाशी छे. एम चितवबु ते प-हेंसी अनित्य भावना २ ससारमा मरण समये जीवने शरण राखनार कोइ नथी. एक धर्मनो अरण ठे एउ चितवबु ते बीजी अशरण भारता ३ मारा जीवे संसारमां भ-मना सर्भ भव कीया ठेए ससारधी हु के शर छुटीश, ए संसार मारो नथी, ह मोझ-विचारत ते त्रीजी ससार भा-ाना ४ ए माहरी जीव एकलो छै, एकलो गच्यो, एकलो जशे, पोताना करेला कर्म किलो भोगवशे एम चितवरु ते चोथी एकत्व गिना ५ आ संसारमा कोइ कोइनो नयी

रे६६ आगमसार पम चितवज्ञ ने पाचमी अन्यस्व भावना १ आ प्रारीर अपवित्र मत्त्रमृत्रनी स्वाण छे, प् ग∼नराधी भरघो छे, प् दारीरणी हुन्यार्थ हु, पम चितवबो ते छड़ी अश्चचि भावना ७ रागद्वेप, अक्षान, मिध्यास्व ग्र<u>स</u>स्त सर्ग ७ रागद्वेप, अक्षान, मिध्यास्व ग्र<u>स</u>स्त सर्ग

भावना ८ शानध्यानमां वर्ततो जीव नर्ता कर्म याचे नहीं ते आठमी सबर भावना ९ शान सहित क्रिया ते निज्जीरानु कारण छ, व

आस्त्र है, एम चितवत ते सातमी आस्त

नवमी निर्ज्ञरा भावना १० चडदराज ले पड स्वरूप विचारत ते दक्षमी लोकस्वरू भावना ११ ससारमा भवता जीवने समहि शाननी माप्ति पामरी (यवी) दुर्लभ हे, अया

समिकत पाम्यो पण चारित सर्व विरति ।

आगमसार रिणाम रूप धर्म पामतो दुर्लभ छै तै अग्या-

160

र्मा बोघिदुर्लभ भावना १२ धर्मना कहेण-हार ( फथक ) गुरु तथा शृद्ध आगमनु सा-भड़वु एहबी जोगवार मलित दोहेली छे ते बारमी धर्मदुर्लभ भारता एटछे वार भावता कही ए चारित्रत स्वरूप सपूर्ण कहा

ः एवो समकित सहित ज्ञानचारित्रज्ञ तै कारण है, तैना उपर भव्य प्राणीये उद्यम

करवो अने जो तेतु ज्ञानचारित नहीं परु तीपण श्रेणिक राजानी पेरे सद्दहणा श्रद राखजो जो समिकित शुद्ध छै तो मोक्ष नजी-क छे समकित विना ज्ञान यान क्रिया सर्व नै:फल छे एम आगममा कहाो छे.

186 भागमसार जसक त किरड, अहना न समेड तहम सहस्र

इते समकितनी मार्ग पढे छै. १ जीवे।

दानकारण है, देवगुरु उपकारी ते मोसन निमित्त कारण छे एउने जीव सत्रर तिर्जार

सद्दमाणी जीवो, पावड-अयरागर ठाण । रा अर्थ-रे जीव? त करी शक तो वर

अने जो न करी शक तोपण जेत्री बीतराण

धर्म क्या ते रीते सदहने सहहणा शृद्ध रा खनार जीव अजरामर स्थानक ते मोश पर्

ची पाम

२ अजीव, ३ पुण्य, ८ पाप, ५ आस्त्रा, ६

तत्व छ तेमा मोक्षनो कर्चा जीव छ, अने सवर तथा निर्मिश ए वे ठे, ते मोक्षना उपी

सबर, ७ निर्ज्ञरा, ८ वर, ९ मोक्ष ए नव

हेंय छे एहवी परिणाम तेने समकित ज्ञान कहियें ते समिकित ज्ञान भलोज थाय तिहां अत्रयोगद्वारमा कहारे है. नायम्मि गिन्हियको, ।

'अगिन्हियन्त्रे अ इच्छ अत्यमि ॥ जहवमेवहयजो, सो उवएसा नओ ताम ।१। अर्थ:-ज्ञानथी छ द्रव्य जाणीने लेवा योग्य होय ते ले अने छाहवा योग्य छाडे पत्रो जे उपदेश ते नय उपदेश जाणवी ,हवे

१ निसर्ग रुचि ते निश्चयनये करी जीवादि नव तत्त्र जाणे, आश्रव त्यागे, संवर आदरे, बीतरागना कद्या भाव जे छ द्रव्य

सम्कितनी दश रुचि कहे छे

सेन काल भान सहित जाणे, नामादि बार नितेषा पोताना युद्धियी जाणे, सहहे, बीत, रागना भारया भाव ते सत्य पूर्वा सहहणा होय जपदेश रिच नव तत्त्व तथा छ द्र व्यने गुर जपदेशयी जाणी सहहे ते जपदेश रुक्ति

रेखक

राप ३ आज्ञा रिच ते रागद्वेप मोह जेमना गया ठे, अज्ञान मिटयु छे एहवा अरिर्हेत देव तेने जे आज्ञा मही तेने माने सद्दहे ते आज्ञाहिच ४ सूत्ररिच ्र आचाराग, २ सुगा

हान, ३ टाणान, ८ समनायान, ६ भगवती, इति।धर्म कथा, ७ उपासकद्शांग, ८ अं मक्षन्याकरण, ११ विवाक, ए इग्यार अन तथा वारम् अग दृष्टिवाद जेमा चउद पूर्व इतां ते इमणा विच्छेद गया छै तथा रे

उवपार, २ रायपमेणी, ३ जीवाभिगम, ४ पत्रवणा, ५ जंग्रहीपपञ्चति, ६ चटपञ्चति, ७ म्रमन्नति, ८ कर्षाञा, ९ कष्पवहसिया.

१० पुष्पिआ, ११ पुष्पचुलीआ, १२ व-

न्हिदिशा, ए पार उपाग जाणवा अने ? न्यवहारस्य, २ बहत्रकरप, ३ दशाश्चतस्यथ. ४ निशीय, ५ महानिशीय, ६ जितराल्प, ए

छ छेदग्रय तथा ? चडसरण, २ सथारापय-

ं मा. ३ सद्दरनेपाळीय, ४ चदातिजय, ५ दे-

िविद्युओ, ७ वीर्युओ, ८ गुड्छाचार, ६

१७२

जोतिकस्ट, १० आयु पगलाण, ए इत

आगमसार.

ए चार मूलसूत्र तथा ? नदि, 🤉 अनुपीग द्वार, ए पीस्तालीम आगम ते मूलसूत्र तथा न निर्युक्ति, ३ भाष्य, ४ चर्णि, ६ टीका, ९ पचागीना वचन ने जीय माने तथा - आगम सामलवानी तथा भणवानी जेने चणी चा हना होय ते सुत्रहचि जाणवी

५ ने जीव गुरमुखधी एक पदनो अर्ध सामलीने अनेक पद सद्दे ते बीजरिन-६ अभिगमहिच ते जे सूत्र सिद्धान अर्थ सहित जाणे अने अर्थ विचार सांभ ी घणी चाहता होय ते अभिगमस्त्रिः

पयसाना नाम तथा ? आगस्यक, > ठक्षः

वेमालिक, ३ उत्तरा ययन, ८ ओवनियकि,

प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्ता-रहचि ८ कियारुचि ते दर्शन, हान, चारित्र,

तप, निनय, समिति, ग्रप्ति बाह्य किया सहित आत्मवर्म साथे जेने रुचि घणी होय ते कि यारचि ।

९ सक्षेपरुचि ते जे अर्थने ज्ञानमा थोडो कहे धके घणो जाणीने क्रमतिमां पटे नहि. जिनमतनी प्रतीति माने ते सक्षेपरचि

१० जे पाच अस्तिकायनु स्वरूप जाणे अवझाननो स्त्रभात, अनरग सत्ता सहह ते धंमरचि

इपे समिकतना आउ गुण कहे है, १

निःशका ते जिनागम मध्ये सुहम अधि मुबा ते साचा सम्हें तेमां सदेह आणे नहीं तथा सात भवधी पण ररे नहि २ निकसा एण ने पुण्यहण फल्मी चाहना न साते नेपक जिहा १००३। तिहा क्षीनो चम छे माटे १ निव्यितिगर्छ।एण ते सुभ अशुभ पुहल एक सरिस्सा छे तेसा पुण्यना जद्यधी शुभ

आगमसार े

१७४

योग मिल्या सुद्धी थड्ड अहंबतर न कस्वी तथा पापना उदयधी दुःखसयोग मिल्या दिलगीर याग्र नहीं ४ अमुख्टिश गुण ते जे आगममा सुहम निगोटना तथा छ द्रव्यता

भागमा सूहम निगादना तथा छ द्रव्यनी सुहम विचार कथा छ ते सांभलतो थरो सुनाय नहीं, ने पोनामी धारणामा आये ते। भागी रासि अने ने धारणामा स आये तैने आगमसारः १७५ सद्दे ९ उपबृहराण जे ए आपणा जीतमा अनत ज्ञानादिक ग्रुण छे ते उपायवा नही, ग्रुद्ध सत्ता जेरी छे तेत्री कहेवी, राग द्वेप

अज्ञान ते फर्मनी उपाधि छे जीव ए उपाधिथी

न्यारो छे ६ स्थिरीकरण गुण ते आपणा परिणाम झानध्यानमां स्थिर करता, डगाववा नहीं अथवा कोइ भव्य माणी घर्मथी पडतो होय तेने साहा देट उपदेश आपी स्थिर करवो — ७ वात्सल्यता गुण ते जेनी साथे झान ध्यान तप पडिकमणो भेलो करता होइये अने सहहणा पण एकज होय ते

,आपणो साधर्मि भाइ छे तेनी भक्ति करवी ,अथवा सर्व जीवना ज्ञानादि गुण ,आपणा ,समान छे माटे सर्व जीव ऊपर दया करवी

आगममार अथवा रीजा जीवना पण आपणा तुल शानादि गुण छ ते जीवने पोपवा योग्य शर्न व्यानना पणी अभ्यास कराते ८ प्रभावक गुण ते भगवतना धर्मनी मभापना महिमा

१७६

फरवो अथवा पोताने ज्ञानाटि ग्रुण वधार्या दान, जील, तप, भाव, प्रजा करी घणी महिमा फरवी ए सम्कितना आउ गुण हुने समक्तितना पांच लक्षण वर्द छै । र उपशम भाव लक्षण ते विवेकी माणी परि

कपाय न करे अने जो कड़ाचित कपाय करे तापण तरन मनने पाछी वारे व आस्ता भूषण ते भगवतना वचन उपर शृद्ध मतीव राखें, भगवते जेम आगममा आज्ञा करी तीम

सद्दे ३ दया मान लक्षण ते सर्वे। जीव

निर्वेद ते ससारथी तथा धनधी शरीरथी र्वेदाशीयणो राख्यो ५ संवेग, ते इन्द्रियना मुख 'जीप अनित बार भोगव्या पण ते द्वं। प्रना फारण है, एक चिदानंद मोक्षमधी अर्तान्द्रिय सत्त्वने आपणा करी जाणे ए

समिकतना पाच एक्षण कथा े हो छ आयतन कहे है १ तिश्रय इगुरु ते भगपतना बचनना खोटा अर्थ करे लोटी मरूपणा करे २ व्यवहारक्रमुरु ते योगी, सन्यासी, ब्राह्मण अने आचारहीन वेपवारी यति ते पण छोडवा ३ निश्चय कृदेवं ते जिणे

श्रीवीतरागदेवस स्वरूप नथी जाण्यु, ४ व्यवहार छदेव ते जे सरागीदेव कृष्ण, महा- रेज्द आगमसार देव, क्षेत्रपाल, देशे, पितर ममुख ते पण छोडवा ५ निश्रयथी कुर्यमें ते जे एकात मार्ग चाक-करणी जपर राज्या के अत्वरसहान, नणी ओएख्यो ते ६ व्यवहार कुर्धमें ते-पारका

जार क्या ते ६ व्यवहार क्रियम ते त्यारण जन्य दर्शनीना मत सर्वे छाडवा एवछे हुदैव खप्रुरु तथा क्रथमेंने छोडी श्रुद्धदेव, गुरु तथा वर्भ सहहे ते समकितनी सहहणा जाणनी

समिकतना लक्षण पद्मयणा सूत्रयी कहे हैं. पग्यत्यस्ययो ना, स्रविद्वपसम्बद्धसे सेनणानानि ॥

स्वत्वयसम्य सवणावाति ॥ वावश्च दृदसणाः, वन्नाणाय सम्मनसङ्ख्ला ॥ १ ॥

बन्नाणाय सम्मत्तसद्द्वना ॥ १ ॥ अर्थ -परमार्थ छ द्रव्य नव तस्त्रना ग्रुण प्रपाय मोक्षञ्ज स्तरूप एटले जे परमार्थ सुरूप

आगमसार. \$663 अर्थ ठे ते जाणवानो घणो अभ्यास परचो करे अथवा जाणवानी घणी चाहना राखे अने म्रदिष्ट कहेता भली रीते दीठा जाण्या छै परमार्थ छ द्रव्य मोक्षमार्ग जेणे एहवा गुरुनी सेवा करे एटले झानी गुरु वारवा अने वात्रझ कहेता जिनमति यतिना नाम धरावीने जे र्तत्रपाल ममस्त्रने समितत विना माने एवा गुरुनो संग वर्जे अने क्रदर्शनी जे अन्यमति तेनो सगन करे एवा जे परिणाम ते सम-किननी सददणा जाणवी विस्या सावज्याओ. 🗥 🕆 कसायहीणा महत्त्रयधराति ॥ सम्मदिविविवृणा, क्यावि सुरख न पावति ॥ २ ॥

१८२

मयी उ

निरजण निक्ल अयल,

देवअणाइ अणाइ अणत ॥ चेयणहराखण सिद्धसम्, -

परमप्पा सिवसत ॥ ५ ॥

अर्थ -यम अजनधी रहित निरजन हु,

फलक रहित छ, अपल केहता पीताना स्वरू

पथी कियारे चलायमान थाउ नहीं, परमदेव छ जेनी आदि नधी तथा जेनो अंत नधी चेंतना लक्षण छु, सिद्ध समान छुं, सतसत्ता

जीवादिसद्दर्ण सम्मत्त्र अहिंगमी नाण्। व ब्येत्र सया रमण, चरण एसो हु ग्ररस्य पहो॥६॥ अर्थः—जीवादिक छ द्रव्य जेवा छ तैना सद्दवा ते समकित अने छ द्रव्य जेवा

आगमसार

णबु ते छ द्रव्य जाणीने अजीवने छाडे अने जीवना स्वरूणमा स्थिर ध्वहने रमे ते चारित्र कहिये. ए ज्ञान टक्कीन चारित्र शुद्धरत्वनयी ते मोजनो मार्ग छे माटे ए ज्ञान टक्कीन चारित्र- च

चे तेहवा ग्रणपर्याय सहित जाणे ते ज्ञान जा-

निच्छयमग्गो ग्रुटखो, बबहारो पुण्णकारणो दुत्तो, ॥ 'पढमो सवरख्वो, / आसबहेद तओ वीओ ॥ ७ ॥ अर्था---निधयमयनो मार्ग ज्ञान सत्ता-ह्य ते सोक्षेत्र कारण छे अने व्यवहार किया १८४ भागमसार नय ते पुण्यनु कारण कथीः पहेली निर्म नय संबर छे अने निश्चय सबर निश्चय सं

ते एकन ठे जुदा नथी. बीजी व्यवहार नरं ते आसन नवा कर्म लेवानी हेतु हे एक्ट शुन पुण्य वर्मनी आसव याय ठे अने अधुन व्यवहारें अग्रम कर्मनी आसब याय छे 'कोर्स

पूरे ने व्यवहारनय आसानु कारण है ने अमे व्यवहार नहीं आदरमु, एक निश्चय सर्म आदरमु तेने उत्तर फंटे ठे जह निणमय परजाह.

भर । नणमय परज्जह, ता मा ववहारनिस्यए सुयह ॥ एकेण विण तिथ्य, छिज्जइ अन्नेणबी तर्च ॥ ८॥

अर्थ,-अही मन्य माणी ! जी। तमने

जित्तमत्तर्नी चाहना ठे अने जो तुमे जिनमतने इंग्लो छो. मोसने चाहो छो तो निश्यमय

भागमसार.

अने व्यवहारनय छाडहों, नहि एटने बेहु
नय मानजो, ज्यवहार नये चालजो अने
निश्रय-नय-सहहजो जो तुमे ज्यवहार नय
प्रत्यापत्रो तो जिन-शासनना तीर्थनो उन्लेद
यात्रे जेणे ज्यवहार न मान्यो तेणे गुरु

भवे ने उपहारि से मान्या पण उपहारि से मान्या पण उपहारि से मान्या प्रम लेणे,आक्रार उपाध्यो तेणे निमित्त भारण विता स्वर्णा अने निमित्त भारण विता स्वर्णा अने निमित्त भारण विता स्वर्णा अने निमित्त स्वर्णा विता स्वर्णा अने निमित्त स्वर्णा विता

· पक्कोः उप्राटान अमरण ते सिद्धःन थाप, माटे निमित्त कारणक्ष्य व्यवहार सय जरूर मानवो अने जो एक्को व्यवहार नय । मानियें तो निश्चयनय ओळल्या विना तस्वत

ऑगमसार. ₹ć€ स्वरूप जाण्यु नाय नहीं माटे तस्वे मोक्षमार्थ ते निथयनय जिना पामिये नही अने तस्तहान विना मोक्ष नथी एटले निश्चयनय व्यवहार नय वे मानवा जे कारणे आगममां ज्ञान कियायी मोक्ष छे, तिहा ज्ञान-हैय उपादेवनी परीक्षा, किया ने हेय वधकारणनी ह्याग, वपादेय स्वगुण ते लेवा, थिर परिणाम रा खवा पत्र झान किया ते मोक्षन कारण छै माटे ज्ञान सहित किया भगाण है ज्ञान विनी किया पुण्यतु कारण छै एव निश्चय विना न्यवहार नि फल उ अने निश्चय सहित <sup>हय</sup>

बहार ते प्रमाण छै तेनी दृष्टान्त-जेम सीनाना

आभूपणमां उप गतु अथवा किणजी मिल्यो वे पण उचा सोताने भावें लेड राखियें छैंपें अने जी ते किणजो व्हाया सोर्चे ज़्र हुं करियें तो सह कोड़ सीनाने छे पण कोड़ किणजो जे कुबातु ते छीमे नहीं तेम निश्चय नय सोना समान छे माटे निश्चयनय सहित सर्वे मछा छे अने निश्चयनय बिना सर्वे अ-लेखे माटे आगममा निश्चय व्यवहार रूप मोसमार्ग जै ते कही कार्यक्र

बली शरीर ऊपर मोह करे नही ते विषे. चित्रनो भिज्ञो जाय खओ.

जो इस्में ह सरीर ॥ अप्पा भाने निम्मलो, ज पात भवतीर ॥ ९ ॥ अर्थः-भव्य माणी पम चितने जे ए परीर छीजनाओ भिजजामो, भय यह जाओ,

विणसी जाओ, ए इहार खरीर मौहरिक है परवस्तु छे ते एक दिवसे मुकब छे बाँहे रे माणी ! हु आपणा आत्माने निर्महपणे ध्यावतो संसारयी तरीने कांडो पामीक 🦈

100

ए हिम अप्पा सो परमणा. कम्मविसेसोइ जायोअप्पा॥ इमये देवज्ञालसो परमध्या. घट्ट तहो अप्यो अप्या ॥ १०॥

अधे.-अहो मन्यजीव ! पहीन आपणी आत्मा छे ते शुद्ध झहा छे पण कर्मने वश

पड्यो जन्ममरण करे छै पण ए शरीरमा है। जीन छैत देव छे, परमात्मा छै, माटे हुमे आपणी आत्मा ध्यामी, तरण तारण जिहान आपणी आत्मान छ एम श्री हेमानावें

आगमसार. १८९ वीतरागस्तोत्रमां कद्यो है यः परात्मा पर ज्योतिः. परमः परमेष्टिनाम् ॥

आदित्यवर्ण तमसः. परस्तादामनति यम् ॥ १ ॥ सर्वे येनोटमृत्यत, 🕖 समूलाः हेजपादपाः । इत्यादि ॥ अर्थ:--परमात्मा ठे, परमञ्योति छे,

पच परमेष्ठीयी पण अधिक पूज्य छै. केमके पचपरमेष्टी तो मोक्षमार्गना देखाडनारा 🕏 पण मोक्षमा जवाबालो तो आपणो जीव ঠै अज्ञा-ननो मिटायनार छै सर्व कर्म क्रेशनो स्वपाव-नार छे एवो आत्मा भ्यापो एहिन परम भ्रेपन्न कारण के, शब्द है, परम निर्मल है.

**एहवो आत्मा उपादेय जाणी सद्दे अर्थ** जेरो पोताथी निरवाह थाय तेवी त्याह वैरागमा मवत्ते एटले धन ते परवस्त जाणी सुपानने दान आपे अने इन्द्रियना विकार ह

कर्मबधना कारण जाणी परिहरे, ग्रीख पाले, ने आहार छे ते पौट्टिक परवस्त है, शरीर पुष्टीचु कारण छे, अने शरीर पृष्ट की धारी इदियोना विषयनो पीप थाय माटे ते पर स्वभाव छे, अज्ञान ससारत कारण 🖁 छे [मारे आहारनी त्याग करनी तेने तप कहिंगे तथा पूना ते जे श्री अस्टित देवें मोक्षमार्ग डग देश्यो ते आपणे जाण्यो माटे आपण

**अपकारी छे ते उपकारोनी बहमान स**हि भक्ति करियें साट श्री अरिहत देव

जागमतार. १९१ धिरेवनी पूना फर्सा पम टान, शील, तप, पूना, सर्व जीव अजीवतु स्वरूप औ-ल्स्या विना ने करतु ते पुण्यरूप रृद्धिय सुसतु भारण हे अने जे जीवने जपादेय करी वाडा

भारण छै अने जे जीवने उपादेय करी वाजा विना करे ते निर्ज्ञरातु कारण छै. एम दया <sup>पण</sup> श्रीमगवती सूत्रमा सातानेटनी कर्मेनु कारण छे एटले सम्यक् ज्ञाननी सर्वे करणी निर्ज्ञरास्य छै अने ज्ञान जिना सर्वे करणी <sup>ब</sup>न्तु कारण छे, माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास करनो ए मगवर्ते सीखामण दीवी है 🕡 ं तथा ज्ञानतुं कारण अतज्ञान छे तैनो यणो मात्र राखनो श्रीठाणाममा तथा टनस ययनमां १ गाचना, २ पृच्छना, '३ परावर्तना, ४ अनुपेक्षा, ५ वर्षकथा, ए

१९२ आगमसार
सम्हाय भणवा गुणवानु फल मोक्ष मम्रो ह
सम्राय करवाथा हानाउरणी कर्म स्वा क्मेर वाचनार्था तीर्थभे भवर्से, महानिर्कर्स याप पृछ्यार्था सूत्र तथा अर्थ शुद्ध थाय, पि

्याल मोहनीय खपाबे, ते जेम अर्थ हुन थाय, 18 पुटे तेम तेम समिक्त निर्मेछ याय अने अर्थ मेक्षा ते अर्थ विचारता सात कर्मनी स्पिति, रस पातला करे अनती ससार, खपानी पातला करे तथा शुनहाननी आराजनाथ अज्ञान सिटे एवा फल कथा है ... . ... ... ... माटे वाचना तथा भणवानी पणो ज्यान

भाट वाचना तथा भणवानो घणो उपके सर्यो, कमक आज पाचमा आरामा कोह कर्त्व नयी तथा मन पर्यवत्तानी अने अवश्वितीपण नथी,एकमात्र क्षुवसान-आगमनो आगर छै पृतः

कह अम्हारिसा पाणी, दुसमादोसद्सिया ॥ हा अणाहा यह हुता, न हतो जड जिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ-हे भगवत ! अमसरिखा प्राणीनी शी गति थात जे अमें आ दुसम पचम का-खमां अपतार लीवो. हा-इति खेदे. अमे अ नाथ छ (छीए) जो जिनराजन कहेला आगम न होत तो आज श्रु थात, एटछे थान आगमनीज आधार हे माटे आगम अने आगमवर ने बहुश्रुत तेनो घणो निनय करवो भागममा विनयतु फल ते साभलबु अने सामलवात फल ज्ञान ठे, ज्ञानतु फल मोप्त है, एम आगम सामली लेवा योग्य

रेजो, छडवा योग्य छोडजो, सहहणा शुर् राखनो, सददणा ते मोक्षन मल है प इदि युस तो आ जीवे अनतिवार पाम्य छै पहनी जाति-जन्म-योनि कोइ रही नथी जे आप णा जीने नहीं करी होय ए जीवने ससारमा नमता अनता प्रहल परावर्तन थया पण धर्मनी जोगवायीं मली नहीं हो हुने मनुष्य भन, श्रावनकुल, निरोग शरीर, प्वेंद्रिय मगट, दुद्धि निर्मल, एटला सयोग मत्या वली श्री वीतरागनी वाणीना बहेनारा ग्रद गुरनी जोगवाइ पामीने अहो भव्यलोको ! द्रमें धर्मने विषे विशेष उद्यम करजो, फरियी एवी जोगवाड मिछवी दुर्लभ है माटे प्रमार

करशो नहीं, ए शरीर, धन, कुटुव, आयुष्य

१९३

सर्व चचल है सवा सवा छीने हैं, मारे पाच समवाय कारण मत्या मोक्षरप कार्य सिन्द कर्तु ते पचसम्यायना नाम कहे है १ काल. २ स्वभाव.३ नियति. ४ पूर्वकृत,५ प्ररूपकार. ए पांच समग्राय माने ते समकीति है. एमां पक्र समवाय चट्यापे तेहने मिट्यात्वी कहियें एम सम्मति सूत्रमा कहा। है. प्रालो सहाव नियइ,पुट्यक्य पुरिसकारणे पच।। मगराष सम्मन, पनते होई मिच्छन ॥ १ ॥ अर्थ:-काल छटित जिना मोशस्य फार्य सिद्ध थाय नहीं एटले काल सर्वेत कारण उँ जे कारूं जे कार्य धवानी होय ते कार्य ते कार्ले थाय, ए काल समवाय अमीकार करी महारे इंदा कोइ पूछे जे अभन्य जीन मोक्षे

165 रह्या है, अनता पुद्रल परमाणुआ रहा ह

कालनो समय सर्गत वर्ते है हवे छ द्रव्यनी फरसना कहे छै धर्मा-स्तिकायना एक मदेशे धर्मास्तिकायना छ मदेश फरस्या छेते आती रीते के चार दि शिना चार अने पाचमो नीचे, छही उत्तर ष छ मदेश फरस्या छे तथा एक मूल,पोर्त

मंदेश एम सात मदेशनो सवय है अने धर्मा स्तिकायना एक मदेशने आकाशहरूय तथा

अधर्मास्तिकायना सात सात मदेश फरशे है ते एक मूलना मदेशने बीजा दृष्यनी मुळनो पटेश फरशे माटे सात परे शनी फरसना छे अने वर्माहिकायना एक मदेशें जीव पुरुलना अनता मदेशनी फरसना

ठै अने लोकने अते जे धर्मास्तिकायना मदेश छे तेने आकाश फरसनातो छए दिशीनी छे

अने एकमृत प्रदेश सुद्धा सान मदेशनी फर- • पना छे अने बीजा द्रव्यनी त्रण दिशीनी फरशना छे एम सर्वे द्रव्यनी फरशना छे अने आकाशयी धर्म अवर्मनी अवगाहना

मुल्म छे धर्म अधर्म द्रव्यर्था जीवनी अवगाहना प्रम ठे जीवथी पुरत्लनी अप्रगाहना मुस्म छे एम छ द्रवयना गुण पर्याय सामान्य स्वभाव ११ है अने निशेष स्वभाव दश है, ते श्रीसिद्ध भगवत ज्ञानथी जाणे दर्शनथी दले ते इंग्यार सामान्य स्वभाव कहे है ? अस्ति स्वभाव, २ नास्ति स्वभाव, ३ नित्य

२०० आगमसार स्मभाव, ४ अनित्य स्वभाव, ५ एक स्वभाव ६ अनेक स्वभाव, ७ भेट स्वभाव. ८ अमेद

' स्त्रमाव, ९ भव्य स्वभाव, १० अभव्य स्व भाव, ११ परम स्त्रमाव ए इग्वार सामान्य स्त्रमाव सर्वे उव्यमा छे ए सामान्य उपयोग दर्शन गुण्यी देशे हो दश विशेष स्वभाव कहे छे १ चैतन स्त्रभाव, २ अचेतन स्त्रमाव

३ मृति स्त्रभाव, ४ अमृति स्त्रभाव, ५ एक मन्द्रा स्वभाव, ६ अनेक मदेग स्वभाव, ७ शृद्ध स्वभाव, ८ अशृद्ध स्वभाव, ० विभाव

शुद्ध स्वभाव, ८ अशुद्ध स्वभाव, ० विभाव स्वभाव, १० उपचरित स्वभाव ए दश विर शेप स्वभाव छेते कोइकद्रव्यमा कोइक स्वभाव

शेप स्वभाग छे ते कोइक इन्यमा कोइक स्वभाव ठे, कोइक इन्यमा कोइक स्वभाग नर्था, व जाणे पुरले सिद्ध भगवान खोकालोब भागमसार

गयी देखी रहा छै एहरा अनत गुणी अरुपी सिद्ध भगवान् छै ते समान पोताना आत्माने जाणे उपादेय करी ध्याने ते समकित जाणवी. १ दोहा ॥

अष्ट कर्म वन टाहके, भए सिद्ध जिनचन्ट। ता सम जो अप्पा गणे, बदे ताको इद ॥१॥ कमरोग ओपधसमी, ज्ञान सुवारस दृष्टि । शिव झुलामृत सरोवरी, जय २ सम्यक् दृष्टि⊪२

एहिन सद्गुरु शील ठे, एहिन शिवपुर माग ।

हेनो निज हानादि गुण, करजो परगुण त्याग॥३

ान द्रक्ष सेवो भित्रक, चारित्र समकित मूळ। नमर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फुल ४

भागमसार 202 सवत सत्तर टिहत्तरे. मनश्चद्र फागुण मात मोटे काट मरोटमे, पसता सुख चौमास ॥६।

सुविहित सारतर गन्छ सुधिर, युगवर जिन वर् स्र १ पुष्य मधान मत्रान सुष, पाउक सुष्प पहर ॥६॥ तास शिष्य पाठक भवर, मुमतिसार गुणवत्।

सकल शास ग्रायक गुणी, साधुरग जसवत । उ तास शिष्य पाडक विजुध, जिनमत प्रमत जाण भविक कमल मतियोधवा, राजसार ग्रहभाणाः

ज्ञानधर्म पाठक प्रवर, शमदम गुणे अगाह। राजइस गुरु गुरु शक्ति, सहजग करे सराहा तास शिष्य आगमरचि, जनधर्मको दास ।

देवचन आनद्रमें, कीनी ग्रथ मराश ॥१०॥ आगमसारीदार एह, प्राकृत सस्कृत रप

कियो दवचदसुनि, झानासूत रसक्रपा११॥

आगमसार. 203

करची इहां सहाय अति, दुर्गटास शुभवित्त । समजावन निज मित्रक, कीनो ग्रथ पवित्ता। १२

धर्ममित्र जिन धर्म रत, भितजन समिकत्रित । श्रद्ध अमरपद ओलराण, प्रथ कियो गुणवत॥१३ तत्त्वज्ञानमय ग्रथ यह, जोवं वालानोध ।

निजपर सत्ता सब लिखे. श्रोता लहे मबोव॥१४ ता कारण देवचदम्रुनि, कीनो भाषा ग्रथ । भणशे गुणशे जे भविक, लहेशे ते शिवपया।१५ क्ष्यक रुद्ध श्रोतारचि, मिलनो एह सयोग । <sup>तस्</sup>रज्ञान श्रद्धा सहित,प्रछीय काय निरोग॥१६

पर्मागमम् राचजो, लंहशो परमानद । मिराग गुरु धर्मसी, धरजी ए झखद्रद ॥१०॥ २०४ शुणस्थानकविचार प्रथ कियो मनरगसी, सितपुख फाग्रुणमान । भोमबार थर तीज तिथि, सफल फली मन

ग्रणस्थानकविचार इगे गुणडाणानो विचार लसीइ <sup>छ</sup>

आस ॥१८॥

मयम मिन्यारत्रगुणठाणु ?, सास्त्रादनगुणठाणु २, मिश्रगुणडाणु ३, अतिन्त समक्तित गुण टाणु ४, देनविरति गुणटाणु ५, प्रमृत्याण

वाणु ६, अममतागुणवाणु ७, अपूर्वतरण गुणवाणु ८, अनिष्टतियाद्दर गुणवाणु ९,

अपराणु ८, आनद्दानपादर गुणडाणु ५) संस्मसपराय गुणडाणु १०, उपदातमोह गुण

्रे ११, सीणमोह गुणवाणु १२, सयोगी गुणवाणु १३, अयोगीकेवलि गुणवाणु सद्देनींह ते मिथ्यात्व गुणटाणो कहीड, तैहना भेद पाच है अभिगाहिय मिथ्यात्व पे लीघो हठ मुकी सके नहीं १, अनिभग्र-हिक विध्यात्व जे देव तथा क़देव तथा गुरु तथा क्रग्रम धर्भ अवर्ष सरिखा करी माने परीक्षाबुद्धी नहीं २, अभिनिवैश्विपिध्यात्व जे खोटाने सोड जाणे पण इट ग्रमी सके नहीं

रे. सार्शायक मिध्यात्व जे कैवलिना भाष्या ८, अनाभोग मिथ्यात्व ने काई जाणपण

वचन तैमां सञय उपजे पूरीपरतीत आवे नही उपने नहीं एकद्रीविक्लंद्रीनी पेरे तथा श्रीठा-. णागस्रते मिथ्यात्वना इसत्रोल कहा है, जीवने

'जनीत करी माने ते मिध्यात्व १, तथा

२०६

अजीवने जीन करी माने ते मिथ्यान्व र तथा धर्मने अधर्म करी माने ते मिथ्या व है

गणस्यानक विचार

तथा अधर्मने धर्म करी माने ते मिध्यात्व ४। मो रनोमार्ग ज्ञानदर्शन चारित्रतपः तेहने मो-धमार्ग न माने ते मिय्यात्य ६. तथा मोधनो मार्ग नथी ससारनो हेत छ तेहने मोक्षमार्ग करी माने ते मिथ्यात्त्र ६ तथा मोक्षगया नधी तन मोक्ष माने ते मिय्यात्त्र ७,जे मोक्षे गया तेहने। मोक्ष न माने ते मिथ्यात्त्र ८,जे साधु विषय विकार त्यागी तेहने असाध माने ते मिथ्या व ९, तथा जे साधु नथी तेहने साधु करी माने ते मिथ्यात्त्र १० ते मिथ्यात्त्रनी चाल तीन मकारनी है देवगत मिथ्यात्व ते कुदेव सरागी ेदेव करी माने १, बीजो गुरुगत ने

संसारी पर्वने धर्मना पर्व करी माने ते मि-व्यात्व ते मिथ्यात्वनी स्थिति तीन प्रकारनी

छै जनादि अनतनी अभव्य जीवने, अनादि सार भव्यजोपने, सादिसात पडवाइने, ते नघ य अतर्भुहती उत्तक्ति। अर्द्धपुद्रसपरावर्त्त फर्डिक उणी छै बीजु गुणठाणु सास्वादन ते कोईक जीव उपसमसमिकिनथी पडतो मिध्यात्व ग्रणडाणे पोतो नथी बचे छआउछिका रहे ते सास्वादन गुणठाण कहोइ. तेहनो ह्यात छे कोड पुरुप खारखांड घृत जमीने तुरत प्रमतो होइ ते वमतां काईक स्वाद आये तिम सम-कितियी पटता पिण काइक वासना रहे तेहने सास्त्रादन कहिई २ त्रीजो ग्रणठाणो मिश्र २०८ ग्रणम्यापियार कोड जीव सयोपणम समिकतथी पढी मिश्र मोडनीने उदये मिश्रगुणडाणे आग अपन मिश्यात्वथी निकली समिष्ट ग्रुणडाणे आ बता वच मिश्रमोडनीने उदय मिश्र गुणडाणे आप ते जीव अतग्रहुर्चकालसीम रहे प्रते समिकत मिश्यात्वरिंग्र कहीड़ एहनो दृष्टन

कहे छे जै कोई जीव नालियरटीपमां वसवा होइ ते नाल्यिर साइ तेहने अन्न दींडे सग न उपने तेम द्वेग पण न उपने तिम प जीवने जिन धर्भ साची साभळतां राग पण न उपने तेम द्वेप उपने नहीं पहवा जीवने मिश्रगुणठाणु कहीइ,एहनी स्थिति अतमुहूर्तना र घोषा अविरत समक्ति, तेहना भेद त्रण छै, तेहनो पहेलो भेद जपसमसम्बन्ध वे

२०९

जीव अनादि मिश्यात्व सज्ञीयचेद्रीपर्याप्तो कोई कारण पामीने ससारथी उभगे,नरक निगोदथी मनमपरणना दु:खयी वीहे तेवारे ए सर्व ससार खोटो जाणे, धर्म जाणवानी रुचि मणी करे, दयापाले, दानदे, तप करे, श्राव-कना बार जत पाले. साजना महावत पाले वे जीन यथानष्टत्तिकरणे वर्तता कहीइ, एटली

करणीसूत्री भव्य तथा अभव्य जीव आरे. नवग्रीनयकसभी जाए पण समकित पाम्यो नयी ते माटे छेखामा नावे, तोपण कोई जीव वैराग्य परिणामसहितससारने असार जाणनी साचा धर्मनो परीक्षा करतो सातकर्मनी थीति उत्रुष्टी खपाव, एक कोडाकोडी सागरीपम वाकी थीति सातकर्मनी रहे तेवारे अपूर्वकरण

270 गुणस्थानकविचार करे तेवारे एक ज्ञान मार्ग साची करी माने रुद्धिस्क्ष्मभाव जाणवानी विशेष थाइ तेवारे पछ एक आत्मा पोताना शरीरने विषे खो,

पण असरीरी छे, अरपी छे, अविनाशी छ,) अनतज्ञानमया, अनत दर्शनमयी,अनत चारित मयी,अनतअगुरलपुमयी, अनततपमयी, अन तबीर्यमयी, निर्मेल अलेप अलट छ तेहना मदेश अखरुयाता छे, मदेशे २ अनंता गुण अनता पर्याय छे, उपयोग लक्षण ते माहरी धर्म छे, ए धर्म जे जे करता प्रगट धापे, युणीश्रीअस्टित, सिन्ह, आचारज,उपाध्याय, साधु तथा सिद्धात तेहनो जिनय तथा वैया वश करवो, अरिइतना आगम ममाणमतीत

े ते समकित कहीई, ते समकितना तिन

गुणस्थानकविचार. २११ भेट छै,उपसम समक्रित १ क्षयोपशम समक्रित २ सायिकसमक्रित तिहा अनतानुस्यिकपाय

हनी एसातमकृति उटये आने ते रापारी अने उदये नधी आदी ते विपाकेउपसमात्री ठे, प्रदेसे उदये ठे, समिकतमोहनी उदय आकरो ठेतेणे समिकतमा अतिचार लागे ठेतेहने

भयोपश्चम समिति महीइ, पहनी स्थिति

४ मिथ्यान्वमोहनी, मिश्रमोहनी, समकितमो-

जारन अन्तर्भेहुन् ठे चत्रुष्टि ६६ छासिट-सागरोषम केत्रहाएक मतुष्यभाग अभिक पतर्छा मियति रहे ए समकितने पाच अति-चार छागे तेहना नाम ॥ सका जे आगममा कवो ते साचो पिण काईक सदेह उपने १,

अतिचार ॥ कला बीजा मतना शास्त्र तथा

२१३ गुणस्यानय विचार टेव इरिइरादिक सरागि तथा ते मतना गुरस

तना क्यो करीड पण एटनो फल धार्म क नहीं याय अथवा जिनसासनथी बीजा मननी करणी रही छे एहत्रो परिणाम आ<sup>व त</sup> त्रीजो ३ अतिचार॥ पसस जे परमतनी परसमा परे जे बीजा मनना देव नथा हिंगीयाना फप्टकरणी तथा योई चमत्कार देखीने ते डपर राग आरे तहने पंग लागे तहना गुण बोले ए चौबा ४ अतिचार जाणवी ॥ सपनी जे पीजा मनना देव तथा गुरु तुना ते मतना जे सेनक तेहनो पश्चिय मेलाप घणो करे । मवनी नात करे सामले तैपाचमी अति

विकारी तेहने थाईक कडायणे जाणि याज करिए २ अतिचार, तितिगिछान पर्मअस्टि

गणस्थानकविचार 213 चार ॥ ए क्षयोपश्रम समकित एक जीवने असरपातीवार आहे अने वली असल्याती-बारनाए, जे आगमने आयारे राखे तेहने रह तेपठे शायिक समकित थाउ ते शायिकनो

पर्य हिलीइ है अनतानुवंशी न्यार ४ पिय्यात्व पोहनी १ पिश्रमोहनी २ समकित-मोहनी अप सात प्रकृति सर्वथा जे जीव सपानीने निरमलीपरतीतिकथी ते धायिकस-मिकिनी फहीड ए आव्या पठे जाय नहीं ए तेहना ४ निक्षेपा सातनय पोतानी बुद्धिथी

सम्भित्रवाला जीवने दस जातिनी रुचि उपजे त लिसीइ उँ निसर्गरुचि नव तस्व ९ छ द्रव्य साचा जाणे ते निसर्गहचि १ अभिगमहचि े पे तिनागमनामुक्त अर्थ जाणवानी रुचि

270 गुणस्थानकविचार ग्रम्मा मुखर्था उपदेशर्था जाणे ते उपनेशर्रा २ श्रीअरिहतरे प्रलीना क्या वचननी आणी ममाण करे ते आणारुचि ३ स्त्रहचि निने सूत सांभलता साचा मारगनी परतीत उपने समिति पाम ४ बीजरचि सिद्धातनु प्रमण साभरता बधावीरत जाणपण आव श्रहा समीयाः ५ अभिगमहचि जे ११ अगादिक ८४ आगम तथा निर्धिक्तिभाष्य चर्णिरीकाना अर्थ जाण सर्व बोलना परमार्थ जाणवानी रचि ६ विस्ताररचि ६ द्रव्यनाभाव ४ निधे पेसातनये करी ज्यार प्रमाणे करी जाणे ७ किया रचि ने जीव जिनशासननी किया

साची नरी स्नामा कही ते रीत करे आणी ं न करें ८ सक्षेपरुचि, जे जीव सिद्धी गुणस्थानकथिषार २१५

तना जाणगीतार्थ आगमने अनुसारे ने अर्थ वहेते साचा करी माने ९ धर्मरचि, आतमानो पर्मे ज्ञानकीन चारित्रमयी अरूपी आतमानो परिणाम भावतया प्रमुख सुणी श्री अरिहतादि-

कनो प्रहुमान वेषावच ते प्रमे करी माने वीता वाह्य तप्रवाणिकिरिया ने आगममा कथा परमाणे करे ते धर्मनो कारण करी माने ते प्रमुख्य समक्रित मासमार्ग मूख है, समक्रित

्रमेंस्वि, सफ्तित मोसमार्ग मुळ ठै, सम्कित विना ने करिंग ते संसार खाते ठै (पण) भोसमारग न नाणे ए धोया गुणटाणो कयो ४ पांचमो देगितरित गुणटाणो इहा नीवने ननपबसाण आये, जपन्ये एक नवकारसी-पबरकाण तथा कदमूळना पचसाण साची अदा सहीत थया होवे तहने शावक कहीइ,

३१६ गुणस्यानव विचार. उत्रृष्टे इद्रीमुखर्ना बांछा विना श्रावरनां बारतवाले ते उत्हुष्टी श्रापक कहीड बार त्रतना नाम १ स्थलवाणातिपात विरमण ने अस जीवने निरापराध हुणे नहि र स्पूल मपात्रात्र विरमण, जे मोटका पांच कन्या लीक १, गवालीक २. भौमालिक ३. धापि-णमोसो ४, कुडीसाल न बोले ५ ॥ ३ पूल अदत्तादान विरमण, जे चोरी कीथे राजा दहे तथा च्यार रहां माणस इयको दे अयवा

अटचादान विरमण, जे चोरी कींघ राजा दर्वे तथा च्यार रहां माणस द्रयको दे अपवा पाताने भय रुगो अपना सामाना जीवने श्राह्को पढे ते मोटी चोरी चरची नहिं ४ पूर्णेमपुन विरमणनत, जे परह्यो मनुष्यणी तथा तिर्वचणी तथा देवतानी भोगवनी नहां इंटीना स्वाद घणा मगनपणे सेपे नहीं ्रशम्यानकविचारः २१७ ५ पूल्परिग्रह विरमण जे धनादिक नत्र भेदनो परिग्रहनो पचनरताण करे, ईच्छा परि-माण करे अथवा पोता पासे जे धन होई ते राखी बीजाना पचन्रखाण करे ६ दिक् परि-

गागजन ने स्यार दिशा तथा ऊचो तथा नीचो विसी जातानों मान करे ७ भोगोपभोग परिमाण त्रत जे नीम साचवे, पन्नर कर्मादान न करे, जे पोताने स्वावेपीवं तथा वस्त्रोनु पान राखे ८ अनर्थ दृह विरमणत्रन, ते जे मोन्का पाप, रगवा, खेतर रोडवां, भाटो जे पुना ममुखन करवाना पद्मनसाण करे ९ सा गाविस्त्रत ने नतन्य २ घडी सुद्धी ससारना काम मूकी कुडुन बननो राग तजी कोहथी

द्वेत न करवो एइनो समपरिमाण राखवो तै

गुणस्थानकविचार २१८ साम विक कहिइ १० देशावगासिकजत ने

घडीथी च्यार पोहोरघी उग्रकाल दिसई मानकरिथीरचित्तसमतापणे रहेर् ते देसावगा सिक्त्रत जाणनु ११ पीपधनत च्यार वीहर

अथना आड पोहोर सुधी समतापणे साधुपरे आवकवरते, मन वचन काया समताइ राखे ते पोपयनत कहीइ १२ अतिथिसविभाग बारस प्रत ने शायक ते साधूने विहरानीने पछे निमन्

जो तेहवा साधुना योग न मिले तो साधर्मिक श्रावकने जीमाडीने जमवा बेसय बेठा पछ यो

दीसीम्बार साधुनीनी बाटजोवी इम पारती साधूजी नाच्या तो एहर्रा भावना भावनी जे धन्य ते श्रात्रक ने साधुजीने बहोराबीने जिमती इस्ये इन चितवी जनवा वेसे ए बारतत भी

गुणम्था नक्षयिचार 286 ते श्रावक कद्दीड श्रावकने जघन्य ३ वार स्त्रहे ७ वार चत्यपदन करवु, अरिहतदेव-सिंद भगवतने बढना करवी तथा नित्य पहिकामणु वे बार करबु जो नित्य न धाय नो पासीनो पटिकपणु नियमा करवु तथा पद्मसाण मभातना नोकारसी अवस्य साच-वनी, रात्रि चडविहार तिविहार दुविहार ए , ३ माहि एक पचक्राण अवस्य करबु ए , पाचमा गुणडाणानी स्थितिः जघन्य अतम्र-हुर्च उत्रुष्टें देशे उणी पूर्वकोडी वर्षनी जाणवी ए नीव अहार पाप स्थानक आलोइने निर्मल थयो चारित्रफरसे ते कहे ठे, अथ अहारे पार स्थान हिस्सीइ है कोइ भव्य जीव अय-सुर पामीने जैनागम स्थणता संसारथी उभग्यो

220 गुणस्थानकविचार थको मोक्ष मुखनो अभिलाप करे पण आल वन जिना कार्य नीपनवी दुक्र छै तैयी प्रथम

देवतत्त्व श्री बीतराग अनत शानमय अनत वर्शनमय शुद्ध स्वरूपी आत्म ऋदिभोगी आत्मालवी आत्मपरणामी जेदने अवलवाने अनता जीव अव्यावाप झख वरे ते देवतन तेहने सेवव सर्व जीव ससारमयधी छुटे तथा निग्रथपच महावतधारी सवरस्वरूपी एक

निर्मल मोक्षमार्गने विषे जेहनी दृष्टि है, शरीर

इद्रीय, क्पार्य, योगनी मष्टतिजीपता मुनिरात्र अतीतमाल विषय सभालना नथी, वर्तमान विषयमा रमता नथी, अनागतकाल विषयनी नथी, पोताना अनतगुणपर्याय निर्मन नाने उत्कृष्ट उद्यमवत के ते साथ महात्मा

गुणस्थानकत्रिचार गुरुपणे धारवा, तथा वर्मतत्त्व जे जीव द्रवय असम्यात पटेशी स्याद्वाट रीते पोतानी सुण-पर्याय परणिन ते बर्म श्री सिद्ध भगवानने भगट छे, श्री अरिहत उपदिस्यो आचार्य ते र्थम साप्रवाने ज्ञानादिक पचाचार पाले है, श्रीउपाध्यायजी ते वर्मनी घोषणा करे ठे, . साधुनिग्रय ते वर्ष साधनाने राज्य तजी इद्रिय विषय तजी बनमा साबु टोला म ये ज्याबा , एकल वासी वनपासी गुफानिपामी पर्वतनी पीरा उपर उनाले आतापना शीतकाले नदीने तटे शीत स्वमे छे, जगुत्रयथी अव्याक-ष्मे समद्वेष बारता समतामई श्रुतसपन्न चा-ग्निसपन विचरे है तथा देशविरति ते सुद वर्म नगर करवा वास्ते देसविरती छेइ सर्व

## गुणस्था रकविचार 255 गुरसाये मिन्डामिदुक्ड ए मयम पापस्थान ॥ हर्व बीजो पापस्थान ते मृपाताद जे जुठू

बाल्बु, लांकिक संसारकामम वे लोकोक्तर वर्मकार्यम ये ते पिण भाव मुपाबाद स्वस्वरू-

पश्च अध्यात्मभाव पोतानी परणतिने पो-तानी न माने, शरीर इन्द्रिय धन पृद्धन ते परभाव ससार हेतु दुष्टता मूल तेहने पोताना कहे कोधेमुपा बोले, भवेमुपा बोले, लोभेमुपा बोले ते सर्व माहरे जीन ससार भगता चार गतिमाही जे मृपाताद बोख्या होय, बोळाच्या होय, बोलता असुषोत्रा होय. ते बने वचने काषाए ते सर्व श्रीमभुजीनी साह्ने गुरसाखे

भारमसाले मिच्छामिदुकट २ हुवे त्रीजो , अदत्तादान ते ने पारकी वस्त गुणस्यानकविचारः २२५ अणदीघी लेत्री ते लौकिक ने ससारी असंय-पीका सन्दर्भन जिल्हा नवसार स्मृतिक शुण

मीना धनकंचन दिपद चतःपद आदिक अण दीया लेवा, लोकोत्तर ते जे चत्यउपगरण प्रजाडवगरण चारित्रडपगरण तहनो चौरवो याह्य वस्तानो लेवो. ते द्रव्य. भार ते जीवपर प्रदेख खबादिकनो आत्मानेविषे ग्राहकतारुप परिणमन करचो हवे, कराव्यो, हवे, करता अनुमोत्रो इवे, ते मन बचन कायाए ते सर्व श्रीमञ्जानी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मि च्छामिद्कड ३ हवे चौथी पापस्थान मैयन ने कामी भोगीपणे इंदी विषे पुदछना वर्णा-दिकतो भोगपत्रो लोकोत्तर वर्धलिंगे धर्मा महाजन साधु साम्बी वर्मीपकरण चैत्यादिने विषे इद्दीनी पोषणा करवी ते वली द्रव्यथी

गुणस्यानय विचार १२६ वैद ३ जडये जे कामित्रकारीपणे भोगविला-

न्द्रिपणे, चोरिन्द्रिपणे, पचैन्द्रिपणे फरसन २ रसन २ ब्राण ३ च<sup>1</sup>र ४ <sup>1</sup>ओरेन्द्रिय ६ इन्द्रिना नेतीस निषय गाँच्छया सैय्या सेवान्या सेवता आसीयाँ होड ते मर्न उचन कायाए करी श्रीमञ्जर्भानी साखे आत्मसाखे मिच्छामिदकड ४ हरे पांचमो पापस्थान परि-ग्रह जे कोई आत्मवर्षयी अन्यभाव सरक्षणा राख्या ते, लीकिक परिव्रह द्विपद धनवान्य गृहलेत्र बस्त्रमुख, लोको-परिग्रह सम्यक्तानो हेत मोक्षकारण श्री-

सादिक, भावधी आत्मपरिणति परभोगीपणे पर वस्त अश्रविपरिणाममध्ये रमणीयता ते माहारे जीने, एकेन्द्रियपणे वेशिन्द्रिपणे, तेरि-

ग्रुणस्थानकविचार. २२७ अस्डिननो चैस्प-तथा जिनविवे तथा ज्ञाननो

कारण पुस्तक नवकारपाली मधुलवारिजना खपगरण तेक्ष्ते ममस्यभागे गहै, द्रव्य परिग्रह पुद्गस्र खपादि ममस्वभावे ग्रहे, भावपरिग्रह क्रोधादिक अशुद्ध परिणाम परभायस्वामित्व-प्राहुक्तवादिक परिणति ते परिग्रह राज्यो हवे परद्रव्यनी इन्टा करी हने, परिग्रह सुख

हुव परद्रव्यनी इन्टा करी हुव, परिग्रह सुख मान्यो हुवे, परिग्रह पासते धर्मभाचरण करची हुवे ते परिग्रह पापस्थान मने उचने कायाए करो सुब्यो, सेराब्या होय सेरता असुमोद्यो होवे ते श्रीभरिहत्ती स्पार्ट सुस्सासे आत्म-सासे पिच्डामिहुक्ट ५ हुवे उही पापस्थानक को नित्र परिणाम हमानो रोक्क ते मार्ह पिता, यसुक्य कुद्धन, स्वपर

गुणस्थानकथियार नींत उपर फींघ परिणाम लोकीत्तर दिवगुरु सायर्पिक उपर क्रोध परिणामने इन्पत तथा

सक्टोरता भाव न्द्र परिणाम ने जो फोई

386

रीतनों अवगस्त क्रोध कर्यों होने कराव्यो होत करता अनुमोची होते. ते श्री तिश्चवन-पति निरजन देवनीसाखे गुरसाखे आत्मसाखे मिछामिद्कड हवे सातमी पापस्थान मान, अहकार ? रुपनी, धननी,राज्यनी,परिवारनी,

नहा ने गुणीनो मान आचार्य उपाध्याय साधुपणानो अभिमान ससारकार्य यशाभि-मान, घर्मकार्ये सघयात्राचेत्य ममुखनी रम्बवाल्यानो मान कर्या हो, छी-

किस बाह्यलोकोत्तर गुणनी गुणीथी, महत्वं

बलनो, वपनो, विचानो, कुलनो तथा गुणो

कर्षों इवे ते सर्व मने त्रचने फायाई करि कर्यों हवे कराव्यों होवे करता अनुमोद्यो होवे

ते श्रींप्रभुजीनो सार्य आत्मसारत मिछामिदुबह ७ हो आठमो पापन्यान माया कपट
वक्रता ने फोर्थी वचननो डोह उगाई कर्वी
ते मापा अन्त्रीक्रिक ससारी सर्वथी लोकोचर आचार्य साधु सावर्षिक्रयी वर्ष पद्धतिनो
कपट करवो ते इच्यतः कोडने वच्यो, भावतः
आर्जीवता रहित परिणामे ने माहरे नीवे
कर्यों कराच्यो करता अनुमोयो ते मने यचने

कायाये करी श्रीजनपरसल परम करणानि-दिनी सार्ये गुरु यथार्थवादिनी साले, आत्म साले भिछामि दुकड ८ हवे नवमी पापस्थान कोम. लालची परिणाम इच्छा ग्रद्धता ते

२३० गुणस्थानय विचार लीकिक, बाग पोताने इष्ट बस्त तेहनी लालच जे वणी जहें, इदीय सुत्र प्रमुख आवे पहनो परिणाम ते लोभ, लोकोत्तर पर्मिलने

धन विषय जसनी लाभ बाई ए द्रव्यत: क्या, जे भारत परभावाभिलाप सर्वे ते जे माहारे जीवे कर्यों कराव्यों करता अनुमोद्यो ते मने करि वचने करि कायाये करि श्री पश्चनीनी साले गुर साले आत्म साले मि-छामिद्कड ९ इवे दसमी पापस्थान रागमीत

परिणाम बाल्हास जे जीव अजीव पोताने पिप पोपणीय लौकिक तथा लोकोचरथी ्री उपनी अन्य द्रव्यने विषे तेना

तथा भावशी ते राग परिणति अनती

नी रीक्ष ते माहारे जीवे करी कराबी

ग्रुणस्थानकविचार २३१ करनां अनुमोदि ते सर्व मने करी वचने कायाए करी श्रीअस्डितनी सार्पे गुरुनी

साले मिछामिडुक्ड १० हमे अग्यारमी पाप-स्थानक द्वेप अपीति परिणाम जीव तथा अनीम जपर पोतानी विषयादि दृश्ताये अपुराता ने असुहामणा ते छौकिक उपर

अर्दाता ये अपूर्विभाग ते लगानिक उपर द्वेष तथा छोनोचर उपर द्वेप ने कर्मी होवे कराच्यो होगे करतामस्ये अनुमोत्रो होवे ते मने वचने कायाये करी ते श्रीसर्पत्तनी सार्प्य ग्रह सार्खे मिट्यमिटुइड ११ हवे वारमो

ग्रुरु साले मिट्यमिट्टु∓ड २१ इवे वारमो पापस्थान फल्डड वडवाट कोर्ट्यी द्रव्य वासते जस तडार्ट वासते आक्षोज क्रुपचनादिक करता तथा तथे में चे नामगाता वासते, इयुक्तिये पोतासो मत चापवाने ⊢जे क़लह

गुणस्था पर विचार 232 करवे मशस्त करतां अमगस्त यमु होते ते सर्व मने प्रचने कायार करी कर्ष कराब्य अनुमोध ते देवसाखे ग्रहसाखे आत्मसाखे

मिच्छामिद्रकट १२ तथा तैरमी पापस्थान अभ्याख्यान कडोआल देवी देवे तथा हास्ये

गुणीना गुण ओलव्या, आगलाने सहसा रकारे हिणी यचन पहेबी तथा वस्तगते छोपीने फटकार करवी ते लोक्कि अन्यजी वने ससारी रीते, लोकोत्तर अस्ट्रित सिद्ध आचार्य खपा याय साधु साथर्मिक देशविरति समितनी तैहनी औदिय चाल देखी फलक

ें। ते अभ्यारयान कर्या होय, कराव्या होने त अञ्चमीया हो<sup>ने</sup> ते मने प्रचने कायाए करी

ीवाल ग्रहताने आत्मसाले मिन्छा

गुणस्थानकविचार मिदुकड १३ हवे सोळमो पापस्थान परपरिवाद

233

पारकी निया ते देपे पारका अवग्रण कहा. कोइना अपजस पास्ते पारकी क्रथली करी अथना सामा मनुष्यने खिसाणो पाडवा वासते जे निदा करी ने मध्ये लोकिक ने जे ससारी जीवनी, छोकोत्तर गुणी जैनमार्ग अवछवता मार्गानसारिथी मार्डा सिन्द्रभगनान लगे जे अव र्णेपाद बोलवो ते बोत्यो होने बोलाब्यो होवे वोलताने अनुमोत्रो होवे ते मन वचन कायाए करीने श्रीमशुर्नानी माखे, गुर साखे, आत्म सासे मिछामिद्दक्डं १४ पनारमी पापस्थान रति तथा अरति उपने असाता दुःखवियोग हानि प्रमुख उपने जे अर्ति धाकुलता किहा-इ सहाय नहीं ते अरति लोकिक निषयमी

गुणस्यो प्य विचार उणी असुहामणे, तथा लोकांत्रर आगम सुण

538

त देवपात्राये तप सामायकपोसह भणपी प्रभुग्व है मण्ये अरति करि होवे तथा गति। इद्री विषयमध्येरीय सुरामण रक्तता विश्राम ते रति लौकिक, तथा लोगोचर चैत्य प्रस्त-

कादिकनी सदरता देखाने जे उड़ी विषे रीम पामे ते रीझ ए नवा कर्म यां ग्वाने आक्रिर चिकणना जे माहरे जीन करी, करायी, व-

रता अनुमोदी ते मने वचने फापाये करी श्रीपरमात्मानी साले ग्रूरनी माले आत्म

साले पिछापिदुबन्ड १५ हो च उदमी पापस्थान पेश्रन्य पारकी चाडी करती ते ने देंपे थाये

जीवनेकष्ट असातानी हेतु राजा अधिक आगल तेहना छता

गुणरधानकविचार રકદ अथवा अञ्चल दोप कही तेहनो आश्रय भां-जबो ते पेशुन्य कहिये ते जे माहारे जीवे करचो कराव्यो करता अनुमोद्यो मनेवचने कार्याए करी श्रीवश्चजीनी साखे. आत्मसाखे गुरसाखे मिछामिद्वट १६ हगे सत्तरमो

पापस्थान माया गुपा कपटे परने उगवा वास्ते मिटु बोले, कोइ कपटर्लिंग बगलानी पेरे दे खाडीने गुणा नहि ने गुणी रीते बदावबी. प्रजायो मनायमा करायमा अथवा छौकिक वचने व्यापार प्रमुख मध्ये कपटे मृपा चोले तथा धर्मचाले जैनागम मध्ये फपट रीते प्रदृत्ति कर्ना ते लिंगा जीव प्रमुख कर्ना ते जे माहारे जीव करचा कराच्या करतो अनु-मोधा तै।मने वचने कामार करी श्रीमधर्जानी २३६ गुणस्थानकविचारँ
साखे ग्रह साखे आत्म साखे मिछाणिदुक्ट
१७ हव अद्वारमो पापस्थान मिथ्यान्य ले
इदेन विषयी कर्माधीन परिव्रही पुण्यपकृति
भोगि तहन देव माने, क्रग्रह पारित्रवर्ष रहि-

परिग्रहने लोभी अद्वार पापस्थान भरेपा ते ग्रुट करी माने, वर्म यथार्थ आत्मपरिणति विना अथया तहना सावन विना धर्म माने तथा जीवादिक नव तत्त्व जिम वस्तुधर्म वस्तु पणे पोतानी परिणति छै, पटडब्दे निम पोता

त जे अन्य लिंगी नथा स्वर्लिगी गुणश्रप्र

नी परिणति गुणपर्याप स्वभाव स्पादाद रीत जिम छे तिम न सहहे पश्चिम रीत सहो १८४ पहें हैं, तहना मूल भेद प् १८४-पोडोक्सपह सारघी सूर्य नहि १ अनभिग्रह मिध्यारत गुणअवगुण

पररया विना सर्व सरिखा माने २ अभिनि-वैश मियात्व जाणीने खोटो कटाग्रह खेचे ३ सज्ञयमिध्यात्व जे सर्व सज्ञय मध्ये रहे ४ अनाभोग मिश्यान्त जे काड जाणे नहि तथा साध्य सावन निमित्त तथा उपादान उत्सर्ग अपवाट विषयांस रीने करि पहनी अथुद्ध सददणा जे पेदातादिकनी ते सर्व मिध्यात्व जाणती. ते जे सेव्ती होवे. सेवाच्यो होवे सेवता अनुमोधो होव मने वचने कायाए करीने ते श्रीमध्रजीनी साखे गुरसाखे आत्मसाखे मिन्छामिद्रकट, ते मि-भ्यात्व जीवने महादुःखकारी छै, अनादि स-सारनी पीन छै, लोकोत्तर शीनिनेंद्रनी कवी 220 गुणस्थानय विचार शुद्धमार्थ जीव पामे नहीं से मिध्यात्व महापाप स्वान ने ते घठा धर्म करणी विण साधक न बाव है बारे विरुवाल्यनो प्रधात्ताप प्रणी करवी ते मिथ्यास्य दलतो नधी ते ने पूर्व जीये गुणीनी आशावना तथा गुणनो अनादर कर्यों है ते

महागुणी अरिहत देव तेहनी भक्तिने काने उत्तम भृव्यजी। जे धनादिक ग्ह्या यकी पोताना आत्माने तथा अन्य मसारी जीवने निण ( स्नेह ) सरागता, परिग्रहता हिसादि-कनो इत याये तिणे गणीनी भक्ति जोडती

निरिक्सणी थाय ते माटे जे अविहतनी

भक्ति कारने वर्षी जे अवादिक ते देवको ने खायों होते अथरा पोते। विण

ने अथवा उपेख्यो होय ते सर्वे

देवकाना दूपण,थयो ते गाटे देवका दोपनी आस्त्रोयणा ऋची तं स्खीये छै ने माहारे

जीवे पर्केटी प्रथमीकायपणे जिन्नीयादिकनी आशातना ऋरी अथवा पृथ्वीकायपणे सुक्या जे शरीर तेहवी जे एकी अध्या सुकीनी थापना चैत्यादिक तेहने ज्यातात ।यो तथा अपकाय-पणे पाणिमें चन्य बहुबसाह्या पाइ वा जिन विव वहाच्या तथा अग्निकायपूर्ण ने नेत्यविज्ञादिक बाल्या होने, तथा नायुकायपणे चन्य पाडची होते, तथा बनस्पतिकायपणे जे चैत्य मध्ये म्सहा झाड खापणे डमीने चैत्य पाडवा होते. असकायपणे चेत्यम ये मालाटिक करी रहा। हवे पखीने भने चत्य तथा जिनविंग स्वपर मेसी असमनस आचरण करचा होवे, तथा

गणस्थानक विचार देवराइच्य मनुष्यपणे जाणि तथा जाण्या

यज्ञ बोलाच्या होते. देवका दोकडा ध्यानै राखी घोडो व्याज भरी आप्यो होने अने घणो लाम लीपो होने, तथा बोनो पण नेत्रमी उद्री सुल यगवडाई मसल जें करी होवें तथा अरिहत देव भते सामारिक वामे पान्या इल्या होते ते मने वचने जायाप करी पिछामिद्वड हिवे माहारे ए कार्य अथुदाचरणस्य न कर्छ भाग पछी माहारी

**े पगट करवानी रिच** लो फन्नी मार्ग तहत्त करी

विना खाधा होते अथना अविधि बावर्षा

250

होने तथा देवरा उपर अन्याय हरूम कपी

होते. अथवा टेपकी बस्त वावरीने पौताना

सहहतो, अन्य सर्व मिथ्या, श्रीतीतरागे कहाो निग्रये आचर्यों ममितिनी जीने सहबो श्री-गणवर देवे जागम मध्ये गुध्यो शुद्ध धर्म माहरा तथा मी जीवनी हित ठेते माहारे प्रमाण ते सहहवा ते जाणको ते आदरको ते नीपनावाों ज समये समये गुणस्थान चढी कर्भक्षवें करी सर्छेशी अने पोतानी सिद्ध संपढ़ा मगढ़ थास्ये वे समयसार मानवो अने जेने ए मोर्गर्ना परतीत शगटी तैने शर्णे रहेवा तथा से। य गुद्धसत्ता सावन गुणठाणे चढी ते नत्नंत्रयी परणमंत्री ए मार्ग माहरी सँटा अतिहड होज्यो इति ॥

## गणस्थामय विचार ॥ दहा ॥

परम अध्यात्मने ज्या. सङ्गरकेरे सग, तिणकु भव सफलो होय, अविदृड मगढे रग १ धर्म पानकी देव पह, शिव साधनको खेन,

585

ऐसी अवसर क्या भिने, चेत सक्त तो चेत २ वक्ता श्रोना सम मिल, मगटे निजगुणरपः अक्षय राजानो ज्ञानको, तीन भूवनको भूप ३

देवचद्रकाि इमकहे, निज आतम थिर थाय ४ .+ इति अहार पापस्थान जाणवा हत्रे छठो गणठाणी पमत्त साधु एहते नामे कहीये जे नी चोनडीनो उदय टल्यो सर्व

मगदी, सबम सावन माटे पोद्गालिक

पह पत्र अनुपहे, समन्ने ने चित्तलाय,

गुणस्थानंकविचारः २४३ भावे ग्रहेपण पुद्गलने भोगिपणे ग्रहे नहीं स्वरूपरमणी आत्मर्गम थिरता रप सर्वेपरभाव

खपर अग्राहरूतारप चारित्रपर्म मगटयो े ते साध बस्सर्ग अपवाद मार्गेपचमहात्रत

पाले है, तिहा इच्यमात्र पच महात्रत सहित पांच समिति तीनगुपतिना दश यति धर्मना पात्रथका निराशसी एक आत्मा निर्मल करवाना स्वयम्बरी विचरे ते पद्य महात्रतः तिहा पहेली महात्रन सञ्बाओपा णाईवायाओविरमण " वित्रहारे स्टकायना जीवना द्रव्य प्राण १० हणे नही हणावे नहीं हणताने अनुमोद नहीं मन पचन का-याए करीने, नियवर्था हानुद्रश्ने चारित सुख मसुख भावभाण पीताना परना कर्म

गुणस्थानव विचार आवरणवणे हणे नहि, हणाय नहि, -हणतां अनुपोधे नहा, तथा तीने महात्रते. सन्वाओ मोसा वायाओ वेरमण द्रव्यत कोधे माने

388

मायाप लोभे सक्ष्मवादर लाक्कि तथा लो-कोत्तर जठ पोते बोले नहीं बोलावे नहि बोल्ता अनुमोधे नहिमन वचन कायाए

करी. भावशी सर्वे इच्य पर्यायना प्रयार्थ जा णत्रो. सत्य भामनरूप त्रायकता शक्ति साधि क्षान सत्यपणे पाले तथा श्री चीतरागना

आगम प्रमाणे अर्थ भाव छे तेहनी सङ्घाय फरे जेहबी पोताना जानवर्शन चारित्र निर्मेल

थाये ते भाषा बोर्ल (जीजो महाजन सम्जाओ

ो बेर्रमण" जे प्रच्य ते अणवस

पण अणः दीवो छेत्रे , नहीं, ' छेत्ररावे

मही, जें लेवे तेहने मारी कहे नहीं, मने धंधने सायाए करीने छाँकिक चोरी जे सप्तारी जीवनी वरत चोरी लेवी. लोकोत्तर चोरी जे तीर्थकर आणमे जे न लेवानो कहा। ते छेत्रो ते चोरी न करे, भातथी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप ग्रहणरूप कार्यना कता है ते अनाहिनी परभाव ग्राहकता करी रम् छे ते निवारीने स्वरूप ब्राहक्ष्पणे परण-मारे, ते अदत्तादान विभरणवत थया ते अदत्तादान चार भेदे है ते र्तार्थकर अदत्तरो तीर्धेकरनी आणाम न लेवो कहारे सर्व परभाउ तै लेवे १ बीजो गुरुअदत्त जे गुरु परपरा निनासूत्र अर्थ कहेता २ तीजो स्तामी अदत्त

जे म तुनो ने घणी होवे तेनी अणदीर्धा ज

गणस्यानकविचारः २४५

बस्त लेंबी ते ३ ची अं जीप अदन जै को इ जीव एम बतो नथी जे माहरा प्राणहणीं अने पोतानेइद्रीमवान माटे परजीवना भाण-हुणे ते जीव जदत्त ' ४ तथा मशस्त काम करता कोड जीवना प्राणधात थाये ते श्री भगवते हिंसा कही नथी, ते विनय तथीं वैयावसमा गंण्य है ए द्रव्यभाव अदसादाने तितिति तिविधिपणे होवे चोथे महाजते ''सब्बाओं मेहणांजी बेरमण" जे दब्वंधी पाच इंद्रिना त्रेत्रीम तिषय सेवे 'नहीं, सेवता अ सुमोदेन्नहां, मनुत्य तिर्पेच देवताना विष पनी बाछा न बरे, न कराये, अनुमोदे नही,

भावर्षा के आत्मा द्रव्य आत्म शुणनो भोगी े ते पण करम करवा माटे परभावने भोगवे

गुंजस्थानेये विचार

રક€્

गुणस्थानकविचार २४७ ते भाव,मेथुन छे, ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नहीं, ते आत्मानिःस्मा करवा माटे, परभान सामनपणे ग्रहे पण अभोग्य अग्न-हापणे अस्पणिक माने ने माहरी आत्मा आत्मानउनी भोगी ते परभाव अनंत नीवे अनतवार लेड भोगवीने वस्सो ते मने ग्रहवी

भोगवरों घटे मही ए अनत जीरे अनतीवार भोगवी जे अठ जड़चल तेहने हु भोग उनहीं इस सर्व परभाव भोगीपणो तजी स्त्रभाव भोक्तापणे रहेंवो ते इन्धर्यी में युनना कारण, रूपी राज तथा रूपी गा मिल्या जीवनो, सेत्रथी में युन तीन लोकने दिने इदीना स- बाटनी ईन्छा, कालधी में युन टिवस तथा राष्ट्री, भाषपी में युन दागरों तथा हेप्छी, ते

## गुणस्थानक विचार २६२ फहिजे ते मध्ये ११ में गुणठाणे उपशांत यथारुयात है १२, १३, १४ में गुजॅडाणे क्षायिक यथाख्यात है, इव सातमी अमर्गन गुणताणी लिग्वीये हैं, छडे गुणदाणे ने भाष साधुजीना पद्या ते सर्व होवे पण पार्चिममाद न होष, ते माटे अनमाद, ए छठे गुणडाणे बरततो साधुजिन शासनने कामे लब्धि फीर वे पण सातमे ग्राणाउणे वस्ततो साध्न रुध्धि न फीरवे, पहनी स्थिति जयन्य एक समय-चंत्कृष्ट अवर्महतेनी है छड़े तथा सावमे गुणै-

याणे विलीने साधु देशे वर्णा पूर्व बाही े श्री भगवती सर्वे ए वे गुणठाणानी देशे

पूर्व कोडी स्थिति जूनी कही 'छे' ते

्नये है, समय तथा वे समय पर्व

गुणस्योगकविचार २५३ र्गणठाणो पलटेते गवेड्यो नथी ते माटे अंतर्ग्र

हर्तनी स्थिति कही उहे, सातमे वे गुणठाणे सामायिक तथा ठेडोपस्थापनीय तथा प्रिहार

विश्रंद्धि चारित्र है, तथा सातमे गुणठाणे सीध लब्धि फोरी नहीं अने छहा गुणठा-णांना साधु जिनशासनने काने लिख फोरवे तेत साउपणु जाय नहीं ७ आठमो

अपूर्वकरण गुणठाणो ने जीय भावनाभा-वर्तो आत्मानी स्तरूप अनतज्ञानमयी, अ-

नतदर्शनमधी, अनतचारित्रमयी, अनतदान-मयी, अनतज्ञाममयी, अनतभोगमयी. अन-तजपभौगमयी, अनतवीर्यमयी, अनतअव्या-वाधस्यसम्पी, परमञानदमयी, अरूपी, अव-दी, अकपाई, अलेसी, अशरीरी, अनाहारी.

गुणस्या कि विधार स्थिति जवन्य एक समय उत्कृष्ट अर्तमृहर्शनी छै ९ दशमो गुणठाणो सूक्ष्म सपराय इहां मुद्दम सज्बलननी लोग उदय होने इहां वे

₹4,6

जातना जीप पाषीये, उपराम श्रेणि तथा क्षपक श्रेणि करमने उपरामाने क्षपकश्रीण कर्म मोहर्नाने खवाने, ए ग्रुणठाणे एक मूक्ष्म सपराय चारित्र होते, व्यान शुक्क होते परि-

णाम निरमल होते, ते अवेदी छे एहनी स्थिति जयन्य एक ममय उत्कृष्ट अवर्धहर्चनी छै १० इग्यारमी ग्रणडाणी खपशातमोह तिहा जे जी-

व उपग्रम श्रेणि आरमेछतोघोछना परिणाम-शात मोह कर्मनी मक्ति उपश्मापती जाय तै-

पुर्वत उपश्रमात्रानो छै ते नबमे

े, 🔓 उपशमानी दशमें लोग उप

शमात्रीने कपायना उदयरहीत है ते इंग्यारमे आने ने विधाख्यात चारित्र पामे. एहने चोबीन सपरायकी किया उतरी एकइरिया-पहिकी किया रहे मकृति तथा परदेश ए वे वय रह्या ठे हेत् न पाठे, वध एक सातानेदनीनो ठे, ध्यान ग्रुह ठे ए गुणटाणे जे जीव मरण पाम्या पछी चीथे गुणठाणे आरे ने देवता खब्मत्तमीया थाए, एकावतारी थाए अथना कोइक जीव अगीयारमे गुणटाणे उपशात अद्वाते जई पाठो पढे ते इन्यारमाथी दशमे आरे दशमाधी नतमे आरे नवमेथी आरमे आने आरमेवी सातमे आने सातमेधी १ पडी पाठो क्षाक श्रेणिये चढी

गुणस्थानक विधार छहे आप इयथा पाछो पढ नचहे तो पाछी

पाचमे गुणठाणे आन, पाचमाथी चीथे आप, जो बायर ममकिती होए नी चाथे गुणठाणे दक अने उपगय समिति हाए तो नाथाधी

2+6

वडी बीजे साम्बाटन गुणवाणे यईने पदिले

मिथ्याच गुणराण आत्र काइ एक जीव

अतिमहत्ते रह, काइक जीव दश ओणोअर्घ

पहल परावर्त मिल्यात्वीपण रहे प्रके समितन

पामे. एअगीयास्मा ग्रुणठाणी एक जीव

पामे, एहनी स्थिति जपन्य एक समय उत्कृष्ट अतेम्रहतेनी छे एअगायारमी, इव वारमा

े, गुणडाणा ते जे जीव आउमा गुण-े कर्म खपावते। तात्र वीरज निर्मञ

**न्यारवार पापे, जर जीव जरभवनाहि वेवार** 

गणस्थानकविचार

उपयोग श्रुद्ध श्रुक्त भ्यानने बले नत्रमे दशमे गुणटाणे मोहनी कर्म रापात्री पारमे गुणटाणे आते. एह शुक्र ध्याननो वीजो पायो एकत्व-वितर्फ अपविचार ध्याने, एहथी आयु वर्ले घनघाती तीत कर्म झानामणीय दर्शनावर-णीय अतराय खपाने, एहनी स्थिति अर्तग्रह-र्तनी 🤰 १२ । तेरमी गुणडाणी सयोगी केवली जे जीव वारमाने अते शानावरणी, दर्शना-वरणी, अतराय, ए खपे केनळहान केनळ

दर्शन प्रगटे, लोक अलोकना सर्व भाव अतीतकाल अनागतकाल वर्तमानकाल सर्व

मत्यक्ष आत्मपले इन्द्रिय विना जाणे देखे. इहा जे अंतगढ फैबली होये ते केवली सम्र-इयात करीने मोक्ष जाय अने जे केवलीनो आऊखो घणो हावे ते अनेक जीवने उपगार करता अनेकदेशना देता विचरे देशे उणीपूर्व कोडी लगे विचरे तथा जे तीर्थे करदेव केवली-पण क्विरे ते चोत्रीश अतिशय तथा आउ

गणस्थातम् थिचार

२३०

मातिहारज विराजमान थका नवा सोनाना कमले पग थापता चाले, योजनवमाण साडले-समोसरणे सोनाने सिंहासने तीन छत्र माथे बीराजता वे पासे चामरनी जोड विश्वता हजार बजा इद्रधना छहेकता देशना देता जधन्य बहोतेर वरसने आऊखं उत्कृष्टे चौ-

रासी लाख पूरवने आऊन्वे विचरे, अनैक जीवने धरम उपदेश दे, गणधर थापना करे, गण्यी थावक श्राविका ए च्यार सघ

ते सिद्धान मरूपे, अने सामान्य

करे, अने जो आज्रेखेथी (अन्य) करम वणा होने तो केवली सम्रद्वान करें तेहने आठे समय लागे, ए तेरमा ग्रुणंडाणांनी स्थिति जवन्य अर्त्रभृतनी ठे उत्कृष्टे देश उणीपूर्ण कोडी वर्षनी छे १३॥ चडदमे ग्रुणंडाणे अयोगी

केवली ते जे जीव तेरमे गुणटाणे जोगरोध करता माढे, सूक्ष्म किया अमितपाते शुक्र भ्याननो त्रीजी पायो भ्याततो ते चलदमे गुणटाणे चढे तिहा मध्यमधी वादर मनोजोग रोके पछी वादर नचनजोग रोके पछी वादर

कायाजीग रोके पछी सहम मनोयोग केरो

गुणस्यानक त्रिचार २इ३ पन्ती सुक्ष्म उचनजाग गाँक पछी सुक्ष्म काया-जाग राफ भरीररहित थाए जेटली देहमान हाने जपन्य ने हायना उत्क्रप्टो पाचसे धनु पनो तीने भाग पटाहे, तैशरे जपन्य प्रतीस आगुण्नी उत्कृष्ट तीनसेतेत्रीस धनुप बतास आगुलनी अपगाहना रहे. तेवारे आत्मा अयोगी अकिय, अलेसी, अनाहारी, अश-रीरी, शुक्र ध्यानना चोथा पायो धईनै अपाती करम च्यार, वेदनाकर्ष १ आउली-

कर्म ? नामप्रमे ३ मीत्रकर्म ४ नी सम करीने मोल जाय ॥ इतिश्री चडदम् ग्रुणस्था

नक संपर्णम ॥





## पहित श्रीदेवचन्द्र गणि विरवित ॥ अध्यात्मगीता ॥

श्री सबेगीसिरदार शिरोपणि जिन उत्तप पदपकन रुप. शिष्य अमीक्रवर कृत वाला

वोध सहिता ॥

॥ बालभवरगायानी॥ प्रणमिये विश्वहित जिनवाणी। सहामह तह सिन्नवादस्य प्राणी ॥

महानव तरु सीचवाऽसृत पाणी ॥ महा मोहपुर भेदवा वज्जपाणी। गहन भवफद छेदन कृपाणी॥१ भी:—प्रणमिये पहेता नमस्कार में किसे हैं रहने नमस्कार किसे हैं र किसे नमस्कार किसे हैं र विश्वहित जिननाणी परहे विश्व कहेता जग नमस्ता जीय, तेहनें हतना वरणनाली जिन वाणी कहेता जिनेश्वर टेबनी वाणी, तेहनें नमस्कार पतें किसेये हैं एटले बली जिनवाणी

कहवी छे <sup>१</sup> क महानद तर र्सीचवा अमृत पाणी एटले माहा कहता जे मोटी. अने नद

अभ्यातमगीता

ş

कहतां जे आणटमयी, पहचो मोसस्पीयों तर कहता दृक्ष, तेहनें सींचीने नर पड़व कररानें जिननाणी केहतां ठे के अमृत समाणी वहेतां अमृत समान जाणवी पटले "ी जिनवाणी केहतां ठे के माहा मोहधुर बज्रपाणी एटले महा कहता जे मोटो, मोह रूप पुर फहता जे नगर, तेहनें भेदवान जिनवाणी फेहबी छे ? के बद्धापाणि फहेता इद्र समान जाणनी एटले जिम बजे करीने इद्र असुराटिकना नगर मते विटारे तिम, इहा जिनेश्वर देवनी नाणा रूप बज्जे करी सिचेर कोटाकोड मोहनी कमें रूप स्थित छै

अध्या मगीता

तैहने विदासी, एक कोडाकोडिनी माहिली पासे आणी मले. प परमार्थ एटले वली जिनवाणी केहबी छे ? के गहन भमफद छै-दन कृपाणी पटले गहन कहेता ने आकरी, एह्नी भवरूप फद कहेता जे अट्नी, ठेटवा ने जिनपाणी केहवी है ? के कौवाडी समान जाणवी ॥ १ ॥

अध्यातमगीता ॥ चाल सुरती महिनानी ॥

इट्य अनंत प्रकाशक,भासक तत्व स्वरूप । आतम तत्व विवोधक, शोधक सचिद्रप ॥ नय निक्षेप

प्रमाणे, जाणे वस्तु समस्त । त्रि करण योगे प्रणम, जैनागम सुर

प्रशस्त ॥ २ ॥ अर्थ:—वली जिनवाणी फेहबी हैं ? के इच्य अनत प्रकाशक एटले इच्य अनी

कहेतां उटय भावने जोगे करी जीय अजीव

रप अनता द्वाय जगत्रयने विषे रहा है, तै

े फेहवी छै ! के मकाशना कर । छै अने भासक तत्व स्वरंप पड़रें

अध्यातमतीताः ५ भासक कहेता आत्म तत्वना भासननी कर-

णताली छे आतम तत्व विरोधक शोधक सचिद्रप. एटले बली जिनवाणी केहवी छे ? के आतम तत्त्व विरोधक कहतां आतम तत्त्वना बोधनी करवाबाली छे एटले जिनवाणी सांमलका थका आत्मा बोध दीजनी माप्ति मते

पामें अने बली जिननाणी केहवी छे १ के बोधम सिंबद्द्य एटले द्योबम सिंबद्द्य एटले द्योबम सिंबद्द्य सहैता द्यान टर्शन चारित आदि अनंत ग्रुण आत्माने विषे शक्ति पणे रहा छेतेहने जिनवाणी केहनी छे? गुद्धनी करवाराली जाणवी
जिम मोनाने विषे मेल रहा छेते मोनो,
अशिने जोगे करी शुद्ध याय तिम, आतमा
ने निषे कर्म रूप मेल रहा छेते आतमा,

जिनवाणीने जोगे करी शुद्ध याय छे ए पर-

मार्थ जाणवी नयनिक्षेप ममाणे जाणे वस्त समस्त पटले वर्ला जिल्लाणी के हवी है !

निशेष पहेता नामादि च्यार निशेष करी अने भगाणे कहेता भत्यक्ष परोक्ष च ममाणे करी, जिनवाणी नेहवी छे ? के समस्त वस्त

पदार्थना जाणपणाना ऋरणवाली है विकरण योगे मणग्र, जैनागम सुमशस्त एटले अन्य-मतिना शास्त्र है ते तो अप्रशस्त है, अने

जिनमतिना आगम है ते पद्मन है, पहुंची

जैनागम, तहने तिकरण जोगे कहेता मने

फरी, वचने वरी, नायाये वरी प्रणम् ऋहेतां

अध्यासमीता

के नय कहता नगमादि सात नये करी, अने

नार प्रति कर हु ॥ २॥ इति श्री जिन

नमस्कार जाणवा ॥

अध्यात्मगीना हवे अध्यातमगीतानी उपवेश करची ते

म्रनिमति ओलखाने हे एटले अध्यात्मगीताना उपदेशक, ते सनि रेहवा छै ?

जिणे आतमा ग्रुडताये पिछाण्यो ।

तिणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो॥ आत्मरमणी मुनि जगवदौता ।

उपिरसुं तेणे अध्यात्मगीता ॥३॥ अर्थ: -- पटले वली प मुनि फेहना है?

के निण आतमा शहताये पिछाण्यो एटके जिणे पोताना आतमाने शृह रीते पित्राण्यो बहेता जाण्यो और ख्यो है तिणे लोका-

लोकनो भाव जाण्यो, एडले ते मुनिये लोका-

æ

क्षीकना भाव मत्यक्षपणे जाण्या दीटा

आतमरमणी मुनि जगवदीता एटले वली ऐ मुनि केहवा छे ? के आतमरमणी कहेता जिणे पोताना आतम स्वरूपनेत्रिंपे सदा काल स्मण मति करचो छे एवा मुनि कहेतां जै

अध्यात्मगीसा

म्रुनि, अने जगप्दीता फहता जगहत्यने विषे चात्रा ठे उपदिद्यू तेणे अध्यातमगीता. एटले उपदिद्यू फहेता ते म्रुनिय अध्यात्म गीता नो उपदेश मते परचो छे क्सी कहे इ क्सों नयी॥ ॥ ॥

हू कता नया ॥ ३ ॥ चान्यः—

द्रव्य सर्वना भावनो जाणग पासग पह।ज्ञाता, कर्चा, भोक्ता, रमता,

## अध्यात्मगीता

परणित गेह ॥ बाहक, रक्षक, व्यापक, धारक धर्मसमूह। दान, लाभ, वल, भोग उपभोगतणो जे

च्युह ॥ ४ ॥

अर्थ:-एटले वली ए सुनि केह्या छै ? के द्रव्य सर्वना भावना जाणग पासगण्ड एटले द्रव्य सर्व कहेता धर्मास्तिकाय अधर्मा-स्तिकाय आढि पट द्रव्यना भावना जाणग कहेता भिन्न भिन्न मकारे करी जाणे छै, अने पासन कहेता देखे है नाता, कर्ता, भोक्ता, रमता, परणितगेह एटले वली ए मनि केहबा है शितोंके हाता कहता हाने करीने अतेक होय पढार्थने जाणे है, अने पोताना

दान-जतराय कमें क्षय गयो त्यारे अनत दान मगड्यो । १ । जने छाभ अतराय कां क्षय गयो त्यारे अनतो छाभ मगटधो । २

अध्यातमगीता

अने भोग अतराय कर्म सप गयो त्यां अनतो भोग भगट्यो। ३। अने उपभोग अतराय कर्म सय गयो त्यारे अनतो उपभोग भगट्यो। ४। अने यीर्पअतराय कर्म सय गयो त्यारे अनतो यीर्प भगट्यो। ६० त्यारे (हिष्य कहे ठेक) टान ते कोने दिये छे १

अने जाभत स्थानो सवी ? अने मोग ते स्यू भोगदे है ? अने जाभोग ते स्यू अने सीर्थ निहा फोरते है (स्थारे गुरू बहे ) े रिष्य 'दानपोताना हानादि अनत गुणने भे सीर्थ है अने लाभ पोताना स्वरूपनी अध्यानम्यतिताः

नत गुण रप जे पर्याय तेहनो समे समे अ-नती भोग भोगरे छे अने उपमोग ते पोताना गुणनो कहिये वीर्य पोताना ज्ञानादि अनत गणने विषे फीरवे है इति सामान्य मकारे दानादि पच रुव्यिनो तिचार जाणवो ॥ ४॥ एणी रीते श्रीअ यात्मगीताना मकाशकरप फर्चानी स्तृति करी हवे कर्चा, शिष्य ऊपर कृपा करी साते नये जीवनो स्वरूप प्रति ओ-ल्याने है:-

सगहे एक आया वखाण्यो । ं नैगमे अश्रधी जे प्रमाण्यो ॥ , , १२ अध्यात्मगीताः दुनिध व्यवहार नय वस्तु विहचे।

अग्रुड विंठ ग्रुड भासन प्रपचे॥५॥

हेता संग्रह नयना मत्र्याली संचानी ग्रहण कर छ एटले सर्व जीव सत्ताये एक रूप सरीरा है मादे सग्रह नयने मते सर्व जीव सत्ताये एक रूप जाणवा. अने नैगमे अश्रधी जे ममाण्यो एटले नैगर्म असयी जे प्रमाण्यो फहेता, नैगम नयना मात्रालो एक अञ्च अ हीने सर्व पस्तुनो ममाण प्रते करे छै. माटे

सर्वे जीवना आठ कचक मद्दा, सता काल सिद्ध समान निरापरणपणे वर्ते है एटले नेगम नयने मते अश्चयकी सर्व जीव एक रूप

अर्थः-सप्रहे एक आया बसाण्यो क

चण करीने बोल्यों के एम नहिं, जीव ना बे पकार जाणाया अशुद्ध विल शुद्ध भासन म-

पचे एटले एक अनुद्ध मकारे अने वीजा श्रद्ध प्रशर्र एटले ए अश्रद्ध गुद्ध रूप भासन करवा नाणपणारूप औरुसाण करवा सारू. वृहचण करी दिखांडे ठे एटले जीवना वे भेट-एक सक्रुक कमें क्षय करी लोकने अने विराजमान ते मिद्ध, अने प्राक्ती बीजा ससारी ते ससारी ना ने मेद-एक अयो-गी ने नीजा सयोगी एटछे चडदमा गण स्थानना जीव ते अयोगी, वाकी वीजा स-योगी ते सयोगीना वे भेद-एक वेबली

१६ अध्यात्मगीता बीजा छदमस्य एटले तेरमा गुणस्थानन जीव ते केवली चाकी बीजा छदास्य एटले छद्यस्थना वे भेद-एक शीण मोही, अर्ते वीजा उपमत मोही एटले वारमा गुणस्थानना जीव ते शीण मोही, अने वाकी बीजा उपसत मोही ते उपस्तिमोहीना वे भेद-एक अकपायी अने बीजा सम्पायी पटले अग्यारमा गण स्थानना जीव ते अफपायी, अने वाफी वीजा सकपायी ते सकपायीना वे भेद-एक सहस

कपापी अने वीजा वाटर कपायी एटलें दसमा गुणस्थानना जीव ते सूक्ष्म कपायी जने वाकी बीजा सर्व प्राट्स कपायी ते बादर कपायी ना वे भेद-एक श्रीण प्रति-त अने वीजा श्रेणी रतित एटलें आदमा

910

अने बाकी बीजा श्रेणिरहित, ते श्रेणिरहितना वे भेट---एक अपमादी अने वाकी वीजा सर्वे प्रमादी एटडे सातमा गुण स्थानना जीव ते जनमादी, अने बीजा सर्व नमादी, ते

प्रमादीना वे भेट-एक सर्वे विरति अने

वीजा देश निरति ते देश विरतिना वे भेद-एक विरति परिणामी अने नीजा अविरति परिणामी तेअधिरतिना वे भेट-एक अविरति

सम्यवत्वी अने वीजा मिथ्यात्वी, ते मिथ्या-स्वीना ने भेट--एक भव्य जीजा अभव्य से भव्यना ने भेट-एक गठी मेदी अने भीजा जीव गठी अभेडी एटले एणी रीते व्यवहार नयना मत बालो जेहवो देखे शतेहवा भेद

अरयात्मगीता.

अध्यातमगीता। विद्ये ॥ ५ ॥

अञ्चलपो पणसयतेसठी भेद

प्रमाण । उदय विभेदे द्रव्यना भेद अनत कहाण ॥ ग्रद्धपणे चेतनता प्रगटे जीव विभिन्न । क्षयोपशमिक

असख क्षायिक एक अनन्न ॥ ६॥ अर्थ'--वर्जा व्यवहार नयने मते अ-

श्रद्ध प्रकारे करी जीवनो स्वरूप ओलखाने छै अशुद्धपणे पणसयतेमठी भेद ममाण,

ण्ट<sup>रे</sup> पणसयतेसठी कहतां जीवद्रव्यना पाच नेसठ भेढनो ममाण जाणवो खदय

अध्यातमगीता १९ विभेटै इच्पना भेद अनत कराण एटले उटय विभेदे फहता उटय भावने जोगे करीने जोता तो द्रव्यना भेट अनन कहाण केहता नीत द्रव्यना अनता भेट जाणवा श्रद्धपणे चैतनता प्रगटे जीव विभिन्न एटले श्रद्धपणे फेहता शुद्ध प्रकारे करीने, अने चैतनता कहेता जीवनी चेतना, अने पगटे कहेता निपने, अने बिभिन्न कहेता अभेडात्मपणे करी जाणवी तयोपसमिक असख तायिक एक अनन पटले क्षयोपमिक कहेता क्षयो-पसम भावना असरा कहेता असरायाता भेड कहिय अने क्षायिक एक अनम्र एटछे क्षायिक कहेना क्षायिक भावनी एक भेट

जाणतो ॥ ६ ॥

अध्यात्मगीता

₹₫

नामधी जीव चेतन प्रवृद्ध । क्षेत्रधी असल देशी विद्यद्य ॥ व्रव्यथी स्वग्रुण पर्याय पिंड । नित्य

पकत्व सहजी अखड ॥७॥

अर्थ'---हा च्यार विक्षेषे करी जीवनी स्वरूप ओल्खाने हैं नामधी जीव चेतन मबुद्ध

एटले नाम धर्की जीवन चेतन कहिये एटले

चेतना लक्षणो ते जीव चेतना ते इयु के मान, दर्शन चारित, तप, वीर्थ, अने उपयोग ए ी चेतना अने मयुद्ध कहेता एहवी

ति जाणवी क्षेत्रधी असल देशी विश्रद्ध

एटले क्षेत्रधकी कहेता जीवने स्वक्षेत्र रूप असलपदशी कहिये अने निगुद्ध कहेता शुद्ध निर्मेलपणे करी जाणवो द्रव्यथी स्वगुण पर्याय पिंह परले द्रव्य धर्मी यहेता जीव द्र-व्यने स्वगुणने स्वपर्याय तेहनोज पिंड कहिये नित्य एकत्व सहनी अखढ एटले नित्य कहेता भाजधकी जीज सदा काल शास्त्रतो

अध्यातमगीता

नित्य वर्ते है अने एकत्व पणे वर्ते है अने सहजो अखड कहेता सहज थकी जीव अखड छे. कोईनो छेचो छैदाय नहीं, भेचो भेदाय

नहीं, निर्रुप अखड सदा काल शास्त्रती है 11 9 1

रुज्ञ सूरे विकल्प परिणामी जीव

২২

स्त्रभाव। वर्तमान परिणतिमर्य व्यक्ते

अध्यात्मगीता

बाहक भाव॥ शब्द नये निज सत्ता जोतो इहतो धर्म। ग्रुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म ॥ ८॥ शर्थः-रिज सुवे विकटप परिणामी जीन स्वभाव एटले रिज सबे कहता ऋजुस्त नमने मते अने विकल्प परिणामी जीव स्व-भाव एटले जीव नो स्वभाव कहेतां जीव विकल्प रूप परिणामी भारने ग्रहे है वर्तमान परणतिमय व्यक्ते ब्राहक भाव एटले वर्त मान फेहता वर्तमान समय जे जीवनो जेहवी उपयोग वर्ते व समय व जीवने, ए नयन मन वाली तेहवी कहि बोलाव शब्द नवे

नेज सत्ता जोतो इहतो धर्म एटले शब्द न ाने मते निज सत्ता केहता पोतानी आत्म उचानें जोतो. अने इहतो धर्म रेहतो ज्ञान, (र्शन, चारित्र आदि अनतो धर्म पोतानी आ-म सत्ताने निषे रणो ठे तेहनी मगट करवानी हा(इच्छा) करतो श्रद्ध अरूपीचेतन अणग्रहतो नत्र फर्म एटले श्रद्ध कहता निर्मल

अध्यातमगीना.

23

अने चेतन कहना ज्ञानादि चेतना रूप लक्षण करीने सहित, अणग्रहतो नत्र कर्म एटले अ-

णग्रहतो नव कर्म फहता जे समय जे जीयनो

कर्मरप मल्थकी रहित, अने अरूपी कहतां पुद्गलादि विभाव दशाना रूप थकी रहित,

एह्यो उपयोग वों ते जीयने नया कर्मनो ग्र-

इण न जाणवो ॥ ८॥

अध्यात्मगीताः,

58

इणि परे गुद्ध सिद्धात्म रूपी। मु-कपर शक्ति व्यक्त अरूपी॥ सम-किती देगवित सर्व विरती। धरे

साध्य रूपे सदा तत्त्व प्रोति॥९॥ अर्थ'—एटले वली जीव केदवो है हैं के दण परे भार सिराना करी. सबसे सुर्णी

के इंग परे श्रद्ध सिद्धात्म रूपी एटले एणी परे शुद्ध कहता निर्मल कमें रूप लेण धर्का रहित ठें अने सिद्धात्मरूपी कहता निश्चय नयने मते जीउ सत्तार्थ सिद्ध समान अरूपी

राशा । अना सक्तास्तरपा कहता निश्चय नयने मते जीत्र सक्ताये सिद्ध सत्तान अरुपी उ मुक्तपर शक व्यक्त अरुपी एटले मुक्त बहता जे समय जे जीवनो एड्सी रीने भासन रूप उपयोग वर्ते ते समय ते जीव ग्रक्तपर कहतां कर्मयकी ग्रुकाय है. अने एहवी रीते कर्मथकी स्रकाय त्यारे शक्त, व्य-क्त. अरूपी एटले शक्त कहतां अनता ग्रण पोतानी आत्मसत्ताने विषे शक्ति पणे रहा। ठे, ते व्यक्त कहता व्यक्तिरूप अरुपी पणे मगट थता जाय है एटले ए किहा किहा जीव ? एहवां शीत जाणपणो कोने थयो ? एडवी शीते भासन कोने थयो ? एडवी रीते रमण कोण करे है ? के सम्यक्तवी देश विरति सर्व विरति एटले सम्यक्ती फहता चौथा गुण स्थान वाला जीव, अने देश विरति कहता पाचमा गुण स्थान बाला जीव, अने सर्वे विरति कहता छठा सातमा गुण स्थान वाला जीव, तेहनें पहती रीते

अध्योतमगीता

र५

२६

अध्यातमगीता जाणपणा रूप भासन रमण थयो छै। अति धरे साध्य रूप सदा तत्व शीति पटले धर साध्य रूप कहेता पोतानो आ-मनस्य निरा-

वरण करवा जीवे जो त्यां जेहनी प्रीति पर्ने लागी छै, अने पहनी रीते मीति मतें लागी

स्थारे ॥ ९ ॥

समभिरूढ नये निरावणी ज्ञाना-विक ग्रण मुर्य। क्षायिक अनत चतुप्टय भोगी मुग्ध अलक्ष ॥ एव

भूते निर्मल सकल स्वधर्म प्रकाश। एर्ण पर्याय प्रगटे पूर्णशक्ति वि

11 09 11

अध्यातमगीता २७
अध्यः—समिभिरुढ नये निरावर्णी हानादिक गुण ग्रुट्य एटळे समिभिरुढ नयने
मते शुरूल ब्यान रूप अग्निये करी घाति
कर्मने सये, निरावर्णी कहेता कर्मरूप
आवरणने अभावे, हानादिक अनत ग्रुण रूप
लक्ष्मी मते मगटे अने सायिक अनत चतुष्टय

लुस्मा भन मनट जान सामिक जनत चाहुश्य मोनी मुग्ध अल्लस एटले क्षायिक अनत चतुरुष कहेता अनतज्ञान, अनतद्वर्शन, अनत चारित्र, अनतचीर्थ, ए चार अनत चतुरुषरप क्षायिक भाते मगटे अने भोगी कहेता तेहना भोगने विषे सदा काल निरतर पणे जहनो खपयोग मतं वर्षे ठे अने मुग्थ

कहेता ने भोला लोक, अने अलक्ष कहतां वेहना रुखार्थे ए स्तरप न आवे. पवभृते

वर्त्तमान नैगम ३ अने सग्रह नयना वे भेद् -एक सामान्य सग्रह ४ अने बीजो निरोप संग्रह ६ अने व्यवहार नय ना वे भेद-एक श्रद्ध व्यवहार ६ अने बीजो अश्रद्ध व्यवहार ७ अने रजुसूत नयना वे भेद-एक सूक्ष्म रजु८ अने वीजो वादरुक्जु ९ शब्दनयनो पक्त भेद १० सम्भिल्ड नयनी एक भेद ११ अने एवभूत नयनो एक भेद १२ हवे दश द्रव्यास्तिक नय कहता निस्य द्रव्यास्तिक १३ एक द्रव्यास्तिक १४ सत्द्रव्यास्तिक,१५ वक्तव्यद्र पास्तिक १६ अशुद्ध द्रव्यास्तिक १७ अ वय द्रव्यास्तिक १८ परम द्रव्यास्तिक

<sup>2</sup>९ गुद्ध इच्यास्तिक २० सत्ता इच्यास्तिक

<sup>, २२</sup> हवे पर्यायास्तिक

अध्यातमधीता

30

बध्यात्मगीता ११ नेपना ६ भेद कहे छें-एटले प्रथम डब्पपर्याप २३ द्रव्य व्यजन पर्याय २४ गुण पर्याप २५ गुणव्यंजनपर्याय २६ स्त्रभाव पर्याय २७ अने

नयनो स्वरूप जाणवो अने भग फहता एक एक नयना सो सो भागा कहता ७ नयना सातसो (७००) भांगा जाणवा अने समे कहता तेहने समे करीने सनूरो कहता जी-पने दीपतो कहिये अने सामना सिन्दता

विभाव पर्याय २८ एणी रीते अठावीसडप-

रूप पूरो एटले जीव ने पूरो क्यारे कहिये? के साउना कहता खुद्ध व्यवहार नयने मते चोधा ग्रणम्थानधी माटी यात्रत् तेरमा चड-दमा ग्रुणस्थान पर्यत साउक मात्रे करी नि-श्रप नपने मते सिद्धिरूप कार्य प्रतें नीपने

सध्यातसमीता त्यारे जीवने पूरो कहिये. अने साधक भार त्या लगे अधरो एटले जीवने अधुरी

35

देम कहिये ? क साधक भाग कहता शब्द समभिरुद नयने मते देशविरति सर्वविरति रूप साधक भाव है त्यालगै जीव ने अधूरो फहिये अने साध्य सिट नहीं हेत सुरो

पटले साभ्य कहता पोतानो आत्मा निरापर्ण करवा रप जोवे जो अनेसिद्ध कहता शुद्ध निथय नय मिद्धि एप कार्य मत नीएने

त्यार नहीं देत सूरो एटले नहीं देत कहता जीवन साधन रूप कोई हेतु नो प्रयोजन न रयो॥ ११॥

अनादि अतीत अनते जे

पर रक्त । सगांगी परिणामे वर्ते मोहाशक्त ॥ पुद्गल भोगे रींइयो

अध्यातमगीता

धारे पुद्गल खघ । पर कर्ता परि-णामे वांधे कर्म नो वध ॥ १२ ॥ अर्थः—िह्वै जीवनो स्वरूप निगीद-यकी पाडीनें देखाँवे ठे एटले काल अनादि

अतीत अनते ने पररक्त एटले अतीत कहतां

अनादि काल न् जीवनें पर पुद्गलादि वि-भाव दशानें पिए रक्त परिणाम वर्ते हैं ते स्पेण करीनें हैं ते समामी परिणाम देंतें मोद्दाशक एटले समामी कहना जीनें करचो सम, त्यारे मोहें दीनो अम एटले समामी परिणाम थया तेण करीनें स्पो निमाड थयो ? १४ अध्यातमगीताः तीके पुद्गल भोगे राज्यो वारे पुद्गतं खर्गः

तोते पुद्रमण भोगे राज्यो यारे पुद्रमण खर्म पटले पुद्रमण भाग राज्यो कहता पुण्यलको भोग में पिप नाप राज्यो, एटल निम है पुण्यलना भाग मिल निम निम जी बनें अधिक २ रीण जपने असे पहुंची रीव पुद्रमणना भोगनें पिप राज्य जपनी रमाध

पारं पुद्गल तथ एटउ धारं पुद्गल तथ फहना पुद्गलना त्या ने मेलवानी प्रस्कारण प्रणाम मते यों अने पद्गी रीते पुद्मलना स्वर्ग ने मेलवानी बन्छा रूप मुणाम बस्प

त्यार, परकर्ता परिणामे याथे वर्म नो वप पटले पर कर्ता कहता जीव पर नो कर्ता थया अने एहवी रीते पर नो कर्ता भये रेबाने कर्म वश्र एटले वाथे कर्म नो वश्र कहती जीन कर्म रूप पुद्गलना वय मते नाथ-वाँ महिन्द्रा ॥ १२ ॥

वंधक वीर्य करणे उदेरे । विपाकी

लक्ष्यां स्थातीलाः -

प्रक्रिति भोगवे वल विखेरे ॥ कर्म उदयागता स्वगुण रोके। गुण वि-ना जीव भवो अव होके॥ १३॥

अर्थ'-- प्रवक्त प्रार्थ करणे उदेरे प्रदेश

केम बाचे ? तोके नीर्ध करण उदेरे एटले ं बीर्य कहतां पराक्रम, अने करण कहतां इदा, । अने उदेर कहतां तैहनी पेरणाये करीने,

बयक कहता जीव नवा नवा वर्मना यय प्रते

36 अध्याहमगीता विषासी महात भोगव दल विकेर एटल विपाको कहता श्रमाश्रम मकृति रूप विपाक ना दर्शया जीवनी सत्ताये रहा। छै, ते उदे आवे ते भोगवी में विखेर कहता खेरवे अने तेहने विषे परिणाम रूप मननी चिकासे करी नपा पर्मना वर्ग प्रते चांचे, अने पहवी रीवे नवा कर्मना वध शते वाध्या त्यारे कर्म उदय उदयता स्वगुण रोके एटले कर्म उदय कहतां पहनी रीते ते कर्म ने उदय करी ने स्त कहतां पोताना गुण तेहनें रोक कहता दकि, अने पहनी रीते पोताना गुण न हाकि त्यारे गुण विना जीव भवीभर दाके एटले गुण फहता गुण विनानो जीव निर्मुणी

त्यारे भवीभव ने विषे होक कहता

अध्यात्मगीता ३७ माथडे ( भ्रमण करें ) त्यारे शिष्य कहें कैम माथडे <sup>१</sup> ॥ १३ ॥

आत्म ग्रुण आवर्णे न घहे आत्म धर्म । ब्राहक शक्ति प्रयोगे जोडे

सर्म ॥ पर छाभे पर भोग ने योगे थापे पर कर्तार । एह अनादि प्रवर्त्ते वाथे पर विस्तार ॥ १४ ॥

अर्थ:—पटले आत्म ग्रुण आवर्णे न प्रहे आत्म धर्म एटले आत्म ग्रुण कहता

ग्रहे आत्म धर्म पटले आत्म ग्रुण कहता पहती रीते पोताना आत्मगुणने कर्म रूप आवर्ण पते लाग्यो, त्यारे म ग्रहे आत्म धर्म, रयो है, तहना ग्रहण भर्ते न करे अने प्रवी रीने आत्मगुणनो ग्रहण भर्ते न फरे त्यारे, ग्राहक शक्ति मयोगे जांडे पुद्रल समी, पटले ग्राहक शक्ति कहता आ मानी ग्राहकता रूप

जें शक्ति, अने प्रयोगे कहता तेणे करीने जोडे पुरुल समें एटले जोडे पुरुल समें

फहता कमेरप पुरुषना सब मते जीहवा

माड्या, अने एहता रीते कर्मरूप पुद्रगलना स्वय भव जोडवा माड्या त्यारे, परलामे पर

चारित आदि अनतो धर्म आत्माने विषे

भोगने जोग थाये पर कर्नार एटले परलाभे

। शुभाश्चम रूप पर पुद्रलना लाभ

• तेइने विभे लाभ पणी मान्यो १ अने

अध्यारमगीता ३५ दान फहता थुमाथुम रूप पर पुहलनो टान देर्नेने तेहने विषे दान पणी मान्यो २ अने भोग फहता थुमाथुम रूप पर पुहलना भोग मिल्या, तेहने पिप भोगपणी यान्यो ३ अने ध्वभोय कहता थुमाथुम रूप पर पुहमलना

उपभोग मिहवा, तेहने विषे उपभोग पणी

पान्यो ४ अने ए दानादिक चार छिट्यने
चिपे चीर्यनी क्षिक हती ते फोरवना मादी
एटछ ए पच छिट्टा स्परूप अनुनाउ पणे
जीव भूट्यो त्यारे पर अनुनाउ पणे अपछी
( उछटों ) फोरवजा मादी अने पहनी सीते
अवछी फोरनजा मादी, त्यारे जोगे याये पर
कर्मार एटछ जोगे कहता तहने जोगे करीने
ज़ीव परना कर्मा थयो अने परनी कर्मी

थयो त्यारे, एइ अनादि मनते वाघे पर

विस्तार एटले एह अनादि सहता एहवी रीते अनादि फारनी जीवने अवला मवर्ती, यई त्यारे वार्ष पर विस्तार, पटले वार्ष पर विस्तार फहता जीवने क्में रूप पर पुद्रगळनो विस्तार मते वधना माट्यो, त्यारे शिष्य कहे

कमरप पर पुद्रलनो विस्तार मते केम वधवा मिङ्यो ? ॥ १४ ॥

एम उपयोग वीर्यादि लविध । पर

भाव रगी करे कर्म वृद्धि॥ पर दया-, यदा सह विकल्पे । तदा तदा कर्म तणो वधकत्ये॥ १५॥

, अर्थ'-एटले एम उपयोग बीर्यांटि हिंदे कहता एहवी रीते वीर्यादि पचलविध रे विषे जीवनो अवलो उपयोग वर्त्यो. अने रम अवलो उपयोग वर्त्यो स्यारे पर भाव ली करे कर्म दृष्टि एटले पर भाव रंगी महताजीव पर स्त्रभात रूप विभाव दशा ने विषे रगाणो अने एहवी रीते पर स्वभाव हप विभाग दशाने विषे रगाणो त्यारे करे कर्भ द्रद्धि कहता ते जीने नवानवाकर्मनी द्दक्रि मर्ते करवा मांडी अने पर दयादिक यदा मुद्द निकल्पे एटले यदा कहता जेवा रेजीवनो पर दयादि श्रुभ विकल्प थयो तदापुण्य कर्मतणो वध कर्पै एटले तदा कहतां तिवारे जीय प्रण्य रूप कर्मनो वध मतें

अध्यान्यगीता

ક્ષ્

अध्यान्मगौता वारे, अने एहवी रीते श्रमाश्रम रूप कर्मना बच प्रते बाध्या स्थाने ? ॥ १५ ॥

तेहिज हिसादिक द्रव्याश्रव करतो

चचल चित्त। एटक विपाकी चैतन मेले कर्म विचित्त ॥ आतम ग्रण न

हणतो हिसक भावे थाय । आत्म

धर्मनो रक्षक भाव अहिंसक क-

हाय ॥ १६ ॥

अर्थ--तेहिन हिंसादिक द्रव्याश्रा

े चचल चित्र एट हे तेहिन हिसादि

ते जीव पहिले गुणस्थान अणा छप-

योगे मित्यात्व भावे, एडवी रीते हिंसाडि आश्रव रूप प्रणामे चचल स्त्रभारी श्रुभाश्रम रूप आश्रवने दलीये करी पोताना ग्रणने ढिंक कहता हणे, अने एहती रीते पोताना गुणने इण्या त्यांने, कड़क विपाकी चेतन मेले कर्प विचित्र पटले कटक विपाकी , बहुता ते जीन कडवा निपाक मते भोगवै: अने मेले कर्म विचित्र एटले मेले कर्म विचित्र कहता जीव विचित्र विचित्र प्रकारना कथे प्रते मेज्या (ग्रहण करवा) माड्या. अने एहवी रीने कर्म गत मेळावा माड्या त्यार. आत्म गुणने इणने हिंसक भाने थाय पटले आत्म गुणने हणतो कहता एहवी रीते ने पोताना आत्माना ग्रुगने इण तेहने भार

अध्यारमगीता

ઇરૂ

हिंसा लागे अने आम धर्मनो रक्षक भाग

88

अहिसक कहाय एटले आत्म धर्मनी रहक कहता श्रुभाश्रभ विभाग दशा रूप पर प्रदु<sup>त्र</sup> हमी बच्छा बनी रहित, अने एक पोतानी आत्म सत्ताये नानादि अनतगुणस्पर्धारे रही

छै, तहनी रक्षा पति करे छै, ते जीवने भाव अहिंसक बहता भाव दया कहिये अने एहवी रीते भाव दया रूप मणाम बर्व्या त्यारे ?॥१६॥

आस्म ग्रुण रक्षणा तेह धर्म । ख गुण विध्वसणा से अधर्म ॥ भाव न्याल अनुगत प्रवृत्ति । तेहथी

ससार छिनि ॥ १७ ॥

अध्यात्मगीता 84 अर्थ:--आत्म गुण रक्षणा तेह वर्म एटले धर्म कोने किंग्ये ? तोके एहवी रीते जे पोताना आत्म गुणने निरावर्ण कहतां मगट करवानी वाच्छा रूप मणाम मते वर्ते ठे, अने ने गुण मगट्या ठे ते गुणनी रक्षा करे है ते जीवने धर्मा कहिये अने स्वाप वि उसणा ते अधर्भ एटले अपर्भ ते को ने फहिये तो के स्व कहना पोताना गुण तेहने विध्वसणे कहता कमें रूप आवर्णे करि हणें ते जीवनें व्यवीं कहिये अने भाव व्याचारम अनुगत प्रवित्त एटठे भाग अ यात्य कहना एहती रीते जेहन चाण पणी थयो है, एहबी रीते जेहन भासन थयो है, एहती रीते जे रमण करे छै, ते जीव ने भाव अध्यात्मी क

84 अध्यात्मगीता हिये अने पहवीरीते भाव अध्यात्म स्व गुण् प्रणम्या त्यारे, अनुगत प्रवृत्ति एटले अनुगत् महता पहुंचा रीते जे पोताना आत्म स्वरूप में प्रमुचि कहता समण पते वर छे अने एहवी रीते रमण मन करे त्यारे तेहची होच ससार छित्ति एटले ते जीव ससारनी छेह यहता पार प्रते पाम त्यारे शिष्य करे एहती रीत ससारनो पार पर्ते प्रम पामे १॥ १७॥

<sub>घाल</sub> — एह प्रवोधनो कारण तारण सर्-

यह अनाधना कारण तारण सङ् यह सग। श्रुत उपयोगी चरणानदी यह रग ॥ आरम तत्वालंबी

નેહ

रमता आत्म राम। ग्रुख स्वरूप नें भोगे जोगे जस विश्राम ॥ १८ ॥

अर्थ -एटले एह प्रयोग कहता एह्मी रीते मतिवोध किहा पामीये १ अने कारण कहता एह्र्यी रीते प्रतियोजनो कारण किहा मिले ?

अने तारण कहता एहवी रीते प्रतिवीघ देईने ससार थको कोण तारे ? तोके सद्युक्त सग

पटले सद्ग्रह मग कहता में भला ग्रह तहनी संग करता तेहनी सेता कहता. तेहनी भक्ति

करता ससार समुद्र नो पार मते पामीय जला सद गुर केटना है जाके अन उपयोगी चरणा नदी कर गुरु रग पटले श्रुत उपयोगी कहतां श्रुत ज्ञान ने विषे सदाकाल निरतर पणे उप- 21 योग जेहनो वर्ते छे अने वली सद्गुरु केहवा है ! ताक चरणानदी एटले चरणानदी कहता चारित्रने विषे सदा काल निरतर पणे जहनी जानद पणो वर्ते ठे; अने कर गुरु रग एट<sup>स्</sup> कर गुर रग कहता जो एहवा गुरुनिहारे रग लगावीय तो ससार समूत्रनो पार मतै पामीये अने वली सद्गुरु केंद्रवा छे 7 तो के आत्मतत्त्वाळवी रमता आत्म राम एटले आत्म तत्त्वालवी कहना सदा काल निरतर

आत्म तत्त्वालवी कहना सदा फाळ निरवर पणे जे पोताना आत्म स्वरूपना आलवनने विपे वर्ते छे अने दल्ली सङ्गुर केहवा छे ? तोक समना आत्म साम एटके समता आत्म

राम कहतां सदाकाल निरंतर पणे जे पोताना आत्म स्त्ररूपने विषे रमण मते करे छे धळी अध्यातमगीता ८९ सद्गुर केहवा ठे<sup>7</sup> तो के श्रद्ध स्वरूपने विषे भोगे जागे जस विशाम एटठे श्रद्ध फहतां

जे निर्मेल प्रमें रूप मल यक्ता रहित पहचो पोताना स्वरूप, अने भोगे कहता तेहना भोगने प्रिपे अने जोगे कहता मन वचन कायाना जोगना विश्राम पणा वर्ते छे अने वर्ली सद्दुष्ट केहपा छे<sup>9</sup>॥ १८॥

सद्ग्रह जोगयी वहुल जीव। कोइ वली सहजयि थड सजीव॥ आत्म राक्ति करी गठिभेदी। भेट जानी

थयो आस्म वेदी ॥ १९॥

## ५० अध्यातमगीता

अर्थ.—एटले बहुल कहता घणा जीव पहनी रीते सद्गुरुना जोग मिल्या थकी सम्यक्तत्वना माप्ति मते पामे, अने कोई नली सहज्ञथि थ, मजाव एटले कोइक जीव सहन बनी संजीत थड़ने चार मत्येक बुद्धनी परे पिण समिक्ति पाँमे पिण आत्मशक्ति करी गडी भेदी एटले जिहाँ गडी भेद करवों तिहा तो पोताना आत्मानी शक्तिये अपूर्व करण रूप वीर्थे करीने जो गठीने भेदीये तो समस्तिनी माप्ति मते पामीये, अने पहनी रीते समकितनी पाप्ति नते पाम्यो त्यारे भेद बानी उयो जात्मनेदी एटल भेदशानी कहतां <sup>114 अजीत</sup>नी ओल्साणे, स्व परनी वैचण ते जीवने भेदतान पगटे, अने एहवी

अध्यात्मगीता राते भेदहान पगट्यो न्यारे ? तोके थयो आत्मेनेदी कहता पाताना जात्मानी स्वरूप मगट करवो तेहना वेटने विपे सटा काल निरतर पण उपयोग जेहनो वर्ते. अने एहवी रीते जपयोग मेर्ते केम बत्यों ?॥ १९॥ द्रव्ये गुण पर्याय अनतनी थई पर-तीत । जाण्यो आत्म कर्ता भोका

गइ परभीत ॥ श्रष्टा योगे उपनो भासन सुनये सहत । साध्यालवी चेतना जलगी आत्म तहत ॥२०॥ अर्थः—पटले हुव्ये गुण पर्याय श्रुनत नी भई परतीत एटले हुन्य कहता

## ९५२ अध्यातमगीता पाय १ अधर्मानिकाय २ आक्राहितकाय १ पृह्वजानिकाय ४ काल ५ अने जीव ६ ६ ए, द्रव्य अने ग्रण पत्र्याय कहता तेहना

तहना भासन कहना जाणपणा रूप प्रतिन प्रते प्राटे, अने पहनी रीते प्रतीत पर्ते प्र गटी त्यारे, जाण्यो आत्म कर्चा भोका गर् प्रभीत प्रते जाण्यो आत्म कर्चा कहत प्याहार नयन यते जावने शुभाश्चम रूप विभाव दशानो कर्चा कहिये अने निवा

अनता अनतागुण ने अनता प्रयाप

भगान दशाना कता काहर अन । तम्म मयने मते जिवन पोतारा झानाहि अन् गुण रप जे लक्ष्मी तेहनो कर्चा वहिये अ भोक्ता वहता व्यवहार नयने मते जीव मुभाग्रभ रूप पर शुद्रस्तों भोक्ता कहि अध्यात्मगीता ५३ अने निश्चय नये जीवनें पोताना ज्ञानादि अनंत ग्रण रूप जे पटर्याय तेहनो भोक्ता क-

पोनाना आत्माने कर्चा भोक्ता पणे जाण्यो त्यारे, गइ पर भीतः एटले गइ परभीत फहता ते जीवनें भव ना भय प्रते टले, एटले भवना भय प्रते हे ले, एटले भवना भय प्रते के लेज टल्या है तोके श्रद्धा पीने चवनों भाक्षन सुनर्ष सत्य एटले श्रद्धा

हिये अने एवी रीते निश्चय व्यवहार नये

नये करीने सत्य भासन रूप मतीत मतें मगटे अने पहुंची रीते सत्य भासन रूप प्रतीत मते मगटी त्यारे सा वास्त्री चेतना बुख्या आत्मतत्य, पटले सा य कहता पोतागे आत्मा निरावर्ण कर्तना रूप जेये जो, अने

कहतां श्रद्धानं योगे अने सु नय कहतां भले

69

चैतना वलगी कहतां त्या जेइनी चैतना मूर्ते लागी अने एहची रीते चेतना लागी त्यारे ? ॥ २०॥

इद्र चद्रादि पद रोग जाण्यो।

शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो॥

आतम धन अन्य आपे न चोरे।

कोण जग दीन वली कोण जीरे li te n

अर्थः - ईंद्र चट्टादि पद रोग जाण्यो एट के इब्र चद्रादि महता इब्र चत्र आदि चर्म वर्ती वासुदेवना, वलदेवना इद्रीजनित शुद्रलीर्

अध्यात्मगीता ने सुल, तेहनें रोग समान करी जाणे एटले पहवी राते इंद्री जनित प्रद्रलीफ सुखने रोग समान करी केम जाण्या गतो के शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो एटले श्रद्ध कहतां जे निर्भल कर्म रूप मलयकी रहित, एहवी पोताना आत्मानो सिद्धि रूप ने धन, तेहने पिछाण्यो कहता जाण्यो एटले एहवी रीते पोताना आत्मानो सिद्धि रूप धन पर्ते ओट ख्यो त्यारे आत्म धन न आपे न चोरे. पटले आत्म घन फहता पोताना आत्मानो **झान, दर्शन, चारित्र आदि अनत गुण रूप** .जे धन, न आपे न चोरे एटले न आपे कहतां ए को ईने आच्यो अवाय नहीं, अने न चौरे कहता ए कोईनो छीधो छवाय नहीं. QE

कौण जग दीन वली कोण जोरे एटले जनन में कोई दीन पिण नथी जे तहने आपे, अने

अध्यातमगीता

जगतमे कोई जोरावर पिंग नधी जो सेंची लेवे एटले निथम नयने मते सर्वे जीव सत्ताये एक रूप सरीखा शानादि अनेत गुण रूप लक्ष्मीना घणी जाणवा परले लाही मेरे लालकी, ज्या देखू त्या लाल (इसमें कौन है कगाल ?) तोक दिलकी गाउ खोलत नहीं ताते फिरै कगाल ॥ २१ ॥

आत्म सर्व समान निधान महा सुख कद । सिद्धतणा साधम्मी सत्ताये गुण वृद ॥ जेह स्वजाति

तेहथी कोण करें वर्ष वघ । प्रग-ट्यो भाव अहिंसक जाणे छुद्ध प्रवध ॥ २२ ॥ अर्थ:—एटले आत्म सर्व समान कहता सर्वे जीव सचाये एकस्प सरीला सामान्य पणे करी जाणवा, अने निधान कहतां निथय

अध्यातमगीताः

नयने पते सर्वे जीव सत्ताये ज्ञान, दर्शन, चारित, रूप निथाने करीने सहित छे अने महा मुख कद कहता निश्चय नयने पते सर्वे जीव सत्ताये सुखना कर कहता निश्चय नयने पते सर्वे जीव सत्ताये सुखना कर कहतां मुख सामान्य करी जाणना सिद्ध तथा साथमें सत्ताये ग्रंण हट पटके सिद्ध

तणा साधर्मी कहतां निश्चय नयने मते सर्वे

अध्यात्मगीताः जीवना वर्ष सत्ताये सिद्ध समान एक स्प सरीयो करी जाणवा अने गुण हद वहीं निथय नयन मने सर्वजीय संचीय हार-दर्गन, चारित आदि अनत गुण रूप हा कहनां ने समृह तिण मरीने सहित छै अने एड्वी रीत जेड स्वजाति तेडची कीण म वय यथ एटके स्वजाति कहतां मर्न जीव सत्ताय एकरूप मरीसा छै, एक डिकाणेपी आव्या, अने एक विकाण जासे वेहशी कीण भरे वय यथ णटले तेहथी वय यथ कर<sup>त</sup> तिण स महारै देवन भेदन रूप विरोध भार करवो न घटे एटले एहती रीते विरोध भा केम न कर ? ता के पगटयो भाव अहिस जाणे शुद्ध मचया एटले मगटची भाव अर्दि

सकु कहतां ते जीवने भाग दया रूपं अहिंसक पर्णे मगटे अने एहवा रीते भाव दया रूप अर्हिसक्षणी मगटे अने एवी रीते भाव दया रूप अहिंसकपणी मगटची त्यारे जाणे शुद्ध

मयथ एटले 'जाणे श्रद्ध भवन्ध कहता ते जीवने श्रद्ध मतियोयनो लाम मते जाणयो अने एहवी रीते शुद्ध मतियोवनो लाभ थयो त्यारेश ॥२२॥ ज्ञाननी तीक्ष्णता चरण तेह । ज्ञान

एकत्वता ध्यान गेह ॥ आत्मता दारमता पूर्ण भावे। तदा निर्मेळा-

नद सपूर्ण पावे ॥ २३ ॥ अधी-माननी तीक्ष्णता चरण तेह. 03 अध्यात्मधीता पटले बरण पहतां चारित्रवत जीव ते कोने फहिये ? तो के जीव अजीव रूप नव तत्व पद द्रव्य, नय, निक्षेप, ममाण, उत्सर्गे, अप-वाद, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भावनी स्वरूप जाणि, जीव संशाने ध्याये, अजीव संशानी त्याग करे शान, दर्शण, चारित रूप श्रद निश्रप नप ज्ञाननी तोध्यता रूप उपयोग जेहनो वर्ते, तेह जीवने चारित्रवत कहिये शान

ध्यान गेह एटळे ध्यान नो गेह कहता पर ते कोन कहिये ? तो के एहवी रीते जे पी ताना आत्म स्वरूपना ज्ञान रूप ध्याननें विषे एकत्वपणे, सद्दाकाळ निरत्त एपो, लेहनें उपयोग चर्ते ते जीवने ब्याननो गेह कहती पर मेर्ग कहिये एटळे एडवी रीते ज्ञान ध्या

अध्यातमगीता, रूप जीवनो उपयोग वर्त्यो त्यारे; आत्मता द्यामता कहता आत्मानो तदृहप स्वरूप जेहवो सत्ताये रहा छ तेहवो, अने ता पूर्ण भावे एटले ता कहता तिमज अने पूर्णभावे कहता शुद्ध निश्चय नय सम्पूर्ण भाने करीने

सहित तदा निर्मेलानद सम्पूर्ण पाने एटले तदा कहता तिनारे अने निर्मल कहता कर्म रूप मलयकी रहित अने नद कहता आनद मयी, अने सम्पूर्ण पात्रे कहता सिद्धि रूप कार्य पर्ते सम्पूर्ण भावे करीने नीपने अने पद्मी रीते सिन्दि रूप कार्य सम्प्रण भाषे करीनें नीपने त्यारे ? ॥ २३ ॥

चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न

भासे भाव । तेहथि भिन्न अरोचक

रोचक आतम स्वभाव ॥ सम्यक्त भावे भावे आत्म शक्ति अनत। कर्म नाशनो चिंतन नांणे ते मति-

वत ॥ २८ ॥ अर्थ:--चेनन अस्ति स्वभाव में जेह न भाग भाग एट रे चेतानी आहित स्वभाव पहना शुद्ध निगय नत्र पोतानी आम सत्ता

ने निप तानाति अनतगुण एप स्काटिक ग्रह समान अस्ति स्वभाव रही है। तेहना कार्र

माले नास्ति पणो नथी; जेह न भामे भार पटछे जेह न भासे भाव फहता ए अस्ति विभाव द्या जीवने अनाटिकाल्ची लागी है, ते व्यवहार नवनें मते, पिण नास्तिपणे जाणवी तेहिय भिन्न अरोचक रोचक आत्म स्वपाय एटले तेहिय भिन्न कहता ए शुभा-

शुभ विभाग दशा रूप फ्रांपकी भिन्न कहता खुटो छै; अने अरोचक करता ए विभाव दशाधरी पहबी दृष्टि वाट्य जीवनो अरुचि भाव गर्ने छै त्यार जिप्य कहे स्वि किहा

भाव उत्त छ त्यार शिष्प कह रोच किहा वर्षे छे ? तोके रोचक आत्म स्वभाव, पटले रोचक आत्म स्वभाव कहता एडवी रीते जाणपण रूप रमण जेडनें थयो छे, तेड जी-

वन एक शुद्ध चित्रानद परमज्योति पूर्णकृष्टा

83 रूप निर्मेत्रानद एहत्रो पोताना व्यात्मानी म्यस्प मगट परवा, राचक कहना कवि जेहनी वर्त है जो एहती गते कवि मर्चे वर्ती त्यारे, सम्यक्त भाग भाव आमर्गाक अनत एट रे सम्यक्त भाग कहता एइवा राते जाणपणा रूप सम्यक्त भारे करीने जेणे पोताना आत्मानी अनती शक्ति मते जाणी छे, अने एहत्री रीते अनतशक्ति मर्ते जाणी त्यारे, पर्म नारानी चिंतन नाण ते मतियत पटले मतित्रत कहतां पहती निर्मल युद्धिना घणी शुद्ध भामत रूप जाणपणे क्रीनें, जेणे पोताना आत्मान पर्म रूप उपाधि धर्मी रहित, बुद्ध चिदानट निर्मेल परमञ्चीति सत्ताये सिद्ध समान, पहनी रीते जेणे निश्चय

अध्यातमगीता Ęĸ नयनें मते जाणपणा रूप अन्तरम मतीत करी है. ते जीव कर्ष नाशनो चितन नाणे: कहतां गुद्ध निथय नय करीने जीताती स्फटिक रत समान आत्मानो स्वभाव निर्छेप है एटले जिम स्फटिक क्याम डंकर्न जोगे करी ने स्याप दीखे अने राता डकन जोगे करी ने रातो दीखे: पिण ए दक्तें अभावे जीतांतो स्फटिक निर्मेळी है, तिम आत्मानी स्वभाव श्रद्ध निर्मेल स्फटिक समान छै पिण श्रमा-श्रम प्रण्य पाप रूप डकर्ने जोगे करी करीस्प आभा (प्रतिनिम्य ) पही छै. पिण ए कर्म रूप दक्ते अभावे करी ने जीताती आत्मा श्रद्ध निर्मल परम ज्योति सत्ताये सिद्ध समान धै. (गाथा) जिम निर्मल तारे रत्न स्फटिक तणी, तिम जे जीव स्वभाव ॥ व जिन वीरेर. धर्म वकानियो, मनल कपार्य

4,6

न छाते १॥ २५॥

अभाव ॥ गीथा जगवियत्री इत नवा सी गायाना स्तरन मध्ये परमार्थ जाणको पहकी रीते गुद्ध भासन रूप नाण पणाना घणी वैड जीव क्में नायना चिन्तन कहता कापर पणो चित्तन तिपे न लाव जे महारे कर्म वी वारे टले अने एडडी रीते कायर पणी केंम

स्वग्रुण चिन्तन रसे बुद्धि घाले। आत्म सत्ता भणीजे निहाले ॥ शुद्ध स्वाद्वाद पद जे सभाले।

अर्थ:--स्त्रगुण चिन्तन रसे बुद्धि घाले एडले स्प्राण कहता पोतानी आत्म सत्तानें विषे ज्ञान, ढर्शन, चारित्र आदि अनता गुण रहा है अने चितन रसे चुढ़ि धाठे एटले चितन महता तहना चितन ने विषे रसे करी न यक्त बुद्धि जेहनी वर्ते छे अने एहबी शीते रसे करी ने यक्त उदि वर्ची त्यारे, आत्म सत्ता भणी ते निहाले एटले आन्य सत्ता उद्या हानादि अनन्त गुण रूप पोतानी आत्म सत्ता ने अन्तर

दृष्टिये वर्राने निहाले यहता निरखी ने जोने रे,अने एहवी रीते पोतानी आत्म

88 अध्यात्मधीता सत्ता नें जोवे त्यारे शुद्ध स्पादांड पद ने सभाने पटले शृद्ध यहना निर्मन वर्ष रूप लेप यकी रहित अने स्यादाद कहता स्यादाद रूप नित्य ? अनित्य २ एक ३ अनेक ४ सत्य ६ असत्य ६ उक्तव्य ७ अवक्तव्य ८ एणीरीते आड पक्षे करीने सहित, अने पद कहता एहत्रो पोताना पद मतें. अने सभालें कहतों जाणे देखे छै. त्यारे शिष्य कहे, नित्य अनित्यादि आउ पक्षे फरीने पोतानी पर मतें केम सभाले कहतां जाणे देखें छै ? त्यारें गुर कहे भी ? शिष्य स्याद्वाद मनरी में कयी है - नित्या नित्याद्यनक धर्म समलेक वस्तुः भ्युपगमत्त्र स्थाद बादत्त्र ॥ त्यारे शिष्प कहे ए नित्य अनित्यादि आठ पक्षे करी

जींवनों स्टेंहप केम जाणिये ? त्यारे गुरु कहे, व्यवहार नयन मते उदय भावने जोगे करी जे गति में जित्य हैं है, ते गींति में नित्य छे अने समय समय आउसो घेटे है याते अनित्य कहिंये; पिण ते अनित्यपणा में पोते नित्य पणे वर्त छे एटले ए नित्य में अनित्य, प्रंतिन्य में नित्य, ए व्यवहार नयने मते पौरी जाणियों जाणीयों । १।

हिंचे निश्चय नयन मते नित्य अनित्य पत्तै करि जीउनो स्वरूप देखाँड छ एवछे निश्चय नयन मते जीवना चार गुण झान, दर्जन, चारित्र, अने वीर्य, ए चार गुण, अने पर्याय में अञ्चाबात अमृति अने अण-अवेगाह, एटछे एं बार गुण अने

## जीवना नित्य है अने एक अगुर लघु पर्याय जीव ने सर्वे गणमा हानि विद्य हुए चपजवी विणसवी करे है. मार्ट अनित्य कहिये अने ए अगुरु लघु पर्याय सर्व गुण में हानि उद्धि रूप उपजवी विणसवी वरे छै तेहमा ए ज्ञानादि चार गुण ते निन्य पणी वर्षे छ एटले ए नित्य में अनित्य, अने अनित्य में नित्य पक्षनो विचार निध्य नयने मते जाणजो ॥ २ ॥ हिने व्यवहार नयने मते एक अनेक पक्षे करी जीवनों स्वरूप देखांडे छै एटलें च्यवहार नयने मते उदय भावने जोगे करी े गति में जीव वर्ते छे, ते गति में एक छै फोई नो बेटो, कोई नो वाप, कोई नी

अध्यात्मगीसा

ĠО

भरोजो, एम अनेक प्रकार जीव में बेटाएणो, काकावणो, मामावणो, भाईपणो भरीजवणो, रहो ठे माटे एणी रीते अनेक पण कहिये ' पिण ए बेटा, बाप, काका, मामा, भाई, भ-

त्रोज पणामें पोता पणोते एक वत 🕏 एटळ ए एक में अनेक अने अनेक में एक, पक्षनो विचार व्यवहार नयने मते जाणवो । ३ । हये निश्रय नय करी जीवम एक अनेक

पस मते देखांडे ठे एटले निश्चय नय करी सर्व जीवनो धर्म सत्ताचे एक रूप सरीखों ठें माटे सर्व जीव एक किंद्रों, अने गुण पर्ण्यांच ने मदेश अनेक ठें. एटले गुण अतन्ता.

न पदश अनक ठ. एटल गुण अतन्ता, पर्वाय अनता. अने पदेश असंख्याता, 'साँदे

अध्यात्मगीता. अनुके पिण कहिये;अने ए गुण पर्व्यायने मदेश

अनेक है, विण तेहमां जीवपणो एक सरीखी

હર

ठे मोट एहवी रीते अने कमें एक पण कहिये।

एटछे एहवी रीते निश्चय नय करी एक में

अनेक, अने अनेकमें एक पक्षनो विचार

जाणवो । ४।

हिवे व्यवहार नयने भते जीवमें मत्य

असत्य पक्ष प्रते देखाडे हे एटले च्यवहार

े जीव द्रव्य जे गतिमे पोते विराजमान

यको वर्चे छे १ अने क्षेत्र धकी कहता जैटको

परक्षेत्र, परकाठ, अने परभात्र पणे करीने असत्य छे पटले व्यवहार नयने मते इव्य

नयनें मते जीव पोते पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावपणे करीने सत्य छे अने परद्रव्य,

## ं क्षेत्र पोते अवगाहि कहतां मर्यादारूप पोतानो फरीने रोक्यो है: ? अने काल्यकी कहतां समय रप पोताना आऊखा भमाणे काळ जाय है ३ अने भाव कहता सर्व जीव पोते पोताना श्रमाश्रम रूप भावमें रहा। वर्चे डे पटले एहवी रीते व्यवहार नयने मने सब जीव पोते पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने सत्य है. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, पर-काल, परभाव पणे करीने असत्य छै, विण ए असत्य पणामे पोतानो सत्य पणो वर्चे है पटले सत्य में असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार व्यवहार नयने मते करी जागतो । ५ । हिंचे निश्चय नय करी जीवने सत्य

अध्यात्मगीता.

はき

अध्यात्मगीता असत्य पक्ष मते दिखाने है एटके निश्चय नयने मते जीन पोते पोताना स्वद्रव्य. स्वक्षेत्र स्वकाल, स्वभाव पण करीने सत्य है. अने परह्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभात पणे करी ने असत्य ठे एटले निश्चय नयने मते जीव में स्पद्रव्य फहता झानादि गुण जाणवा ? अने स्वक्षेत्र फहता जीव पोताना अमर्यात मदेश रूप स्वक्षेत्र अत्रगाहि रहाो छै २ अने स्वकाल कहता पोतानो अग्रसलप्र परर्याय सदाकाल हानि दृद्धि रूप उपजातो विणसवी करे छै ३ अने स्वभाव कहता पोताना गुण पर्याय ४ तेणे करीनें जाब सत्य छै अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभात पणे करी

जीव असत्य छे पिण ए असत्यपणामें पो

132

अध्यातमगीता. ४५
तानों सत्य पणो वर्षे ठे एटले ए सत्य में
असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार
निथय नयने पते करी जाणवी। ६।
हिने निथय व्यवहार नये चक्तव्य,
अवक्तव्य हप पक्षे करी जीवनो स्वरूप

मते देखाने ठे. पटले जदय भान ने जीये करी व्यवहार नयमें मते जीन पहिले गुण स्थान मु माडी यानत् तेरमा चनदमा गुण-स्थान पट्यंत वर्ने ठे, ते जीवना जेटला गुण केन्नली भगनाना परुपनामें आने ते वक्तन्य

अने केरळी मगरानना परुपवाम ना ज प्राप्त्य अने केरळी मगरानना परुपवाम न आरे ते अत्रक्तव्य । ७ । अने निथय नयनें मते सिद्ध परमात्या गुणस्थान वर्जित लोकर्ने अते बिराजमान

UŠ अध्यात्मगीता वर्ते है, तेहना जटना गुण केत्रछी भगवानना परपवामें आवे ते बक्तव्य, अने केवली भग-वानना परप्रवामें न आवे ते अवसच्य ,एहवी: रीते निश्चय व्यवहार नय वक्तव्य. अवक्तव्य रप पक्षे करी जीवनो स्वरूप जाणवी ८ इति आढ पक्षे करी जीवनी स्वरूप ओलखबी अने पदने सभाले एटले एहवू पोतानी पद मत सभाले कहतां जाणे, ओलखे है, अने पहनी रीते पोतानो पद मर्ते सभाले कहतां जाणे, ओ उखे त्यारे, पर घरे तेह मति **केम वाले एटले पर घर कहतां शुभा**शुभ दशा रूप ने जड स्वभाव तिहायकी निवारी न पोतानो शानादि अनन्त · रूप जो घर तिहां जेहनी मात मतें वर्चे

छै अने प्रह्मी रीते मति प्रतं वर्त्ती ह्यारे ? ॥२५॥ चाल:--पुण्य पाप वे पुर्गळ दळ भासे

.श्रध्यात्मगीता

दुष्ट विभाव ॥ ते माटे निजभोगी योगीश्वर सुप्रसन्न । देव नरक तृणमणि सम भासे जेहनें मन्न

परभाव । परभावे पर सगति पामे

॥ २६ ॥ अर्थ:--पुण्य पाप वे पुद्रल दल

भासे परभाव एउछे प्रुप्य पाप कहता पहिले गुणस्थाने मिथ्यात्य भारतो पुण्य रे तेतो जीवनं श्रुभ प्रकृति रूप कर्मनो ट्रय छे अने पाप ठे तेतो जीवनें अधुम मकृति रूप फर्मनो उदय ठे अने ए शभाइम प्रकृति रूप कर्मना पुद्गल जीवन अनादि कार्ल् ना लागा छै, ते पर स्वभाग रूप मोक्ष नगरे जाता जीवने नित्र नाकरणहार जाणवा अने पहनी रीते विजना करणहार यम त्यारे; परभावे पर सगति पामे दए विभाव पटले परभाने पर सगति बहुता ए परस्वभाव रूप विभाग दशा में संगे करीने. पापे दृष्ट विभाग एडले पार्मे दृष्ट विभाग कहता एहवा रीते जीव ससार में फिरता अनेक मकारे कर्म विट्याना रप दुख विपाक मते भोगवे । मादे निज भोगी योगीश्वर मुमसन्न एटछे

निजभोगी कहता ए पर स्वभाव रूप विभाव

अध्यात्मगीता.

ড৫

अध्यात्मगीता. दशाना भोग धकी जीव रहित छै अने निश्रय नयनें मते निज कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण रूप ने पर्याय पर्ते मगेंट तेहनो जीव भोगी है अने योगीश्वर एटले यागीश्वर सुत्रयन करता एहती निर्मल पुद्धिना वणी योगीश्वर मुनिरान, सुपमन्न करता भली तरह चित्त जेहनो सदा काल पसन्न पणे वर्ते छै अने वर्री योगीश्वर मुनसन्न एटले योगीश्वर सुनसन्न फहर्ता श्रद निश्चय नयं करी नें जोताता मन, वचन, काया रूप पुद्गलना योगथकी जीव रहित ठे अने पोताना ज्ञान, दर्शन, चारित्र रप ने योग तेहन जोगे करी न जीव योगीश्वर छै; अने सुपसन्न कहतां तेह जोग ने विषे

Co अध्योतमातित सदाजाल जीव सुफहता भली तरह मसर्व

पणे वर्चे हैं अने पहवी रीते सुरुद्धता मली तरह मसन्न पणे वस्यों त्यारे, देव नरक तृण मणि सम भासे जेइनें मन एटले देव नेरक तृण मणि सम कहता भवनपति, व्यंतर,

ज्योतिषी, वैमानीक, नवप्रैवेयक, अनुत्तर्वे-मानना जे सुख, अने नरक कहता सात

नरक नाजे दुख, अने तुण मणि कहतां तृण ( घास , अने मणिस्तन सम कहता एँ सर्वे ऊपर तें जीवने सम भीव पणे चित्त वर्षे छे अने पहनी रीतें समभाव पण निक्त त्यारे १॥ २६॥

समतारसी तत्व साधै।

Ž٤ निश्चलानन्द अनुभव आराधे॥ तीव घन घाती निज कर्म तोडे। सन्विपड़ी छेहिनें ते विछोडे ॥२७॥ अर्थ:--तेंद्द समतारसी तल साथे एटले पहेंत्री रीते शुद्ध भासन राप जाणपण करीनें र्वेद कहता वे मुनिराज, अने समवारसी कहता समताना रसिया मर्ते होने अने एहवी रीते समता ना रसिया भतें होये, त्यारे तस सापे पटले तत्व कहता पोताना ऑत्मेतरवन अने 'सापे फहतां संपूर्ण भावे करी नीपजावे अने एइबी रीते सँपूर्ण भावे करी केम नीपनावे ? तोरे, निधलानंद अनुमव आरापे एटले नियल कहेता अचल आन्योयको जाप नहीं,

अर्चेत्रांक्षीता.

८६ अध्यासमीता. अने नद पहना आनदमपी, अनुभन आरादे, एटले अनुभव करनां एहरी रीते अनुभन्मर्था अमृतना आराप सहता ते जीन सदा कार्य

आस्वाटन पतं करे अने पहवी रीते आसा

दन मनें करे, स्वारे तीज जनवाती निज कर्म तीड एटने तीज कहता आकरा अने घनवाती कहता पोताना आत्मग्रुणनें घातना करणहार एहवा हानावणांदि चार उम्में अने निज वर्म तीडे एटने निज कहता पोताना कर्म अने

तींडे कहता तेरने भ्यान रूप अग्नियं वालींने सय करें अने पहनी रीते भ्यान रूप अग्नियं बालान सय करे, त्यारे, सिंध पिड लेहिन ते बिछोडे पटले मन्धि कहता सीम मर्पादानी अन तेहने टेड़ा कहिये एटले नारमा ग्रुण- स्थाननो छेडो फरसीयाती कर्मने विछोडे कहता विखेरे त्यारे शिष्य कहे घाती कर्मेनें केम विखेरे ? ॥ २७ ॥

अध्यातमगीता

सम्यग् रत्नत्रयी रस राच्यो चेतन राय। ज्ञानिकया चक्रेचकच्री सर्व

अपाय ॥ कारक चक्र स्वभावथी ़ साधे पूरण साध्य । कर्त्ता कारण कार्य एक थया निरावान्य ॥२८॥

**भर्थ:--सम्पर्ग रबत्रयी रस राज्यो** चेतनराय एटले सम्यम् ऋहता भली प्रकारे,

अने रत्नत्रयी कहता ज्ञान, दर्शन, चारित रूप

## टक्ष अध्यासमरीता जे सजायी, रस राज्यो चेतनराय, पट्टें चेतनराय कहता चेतन महाराज रूप जे राजा, अने रस कहता तेहता रसने विग्रे, अने राज्यो कहता पक्तवपणे चर्चों अने एहर्गी रिते एकत्रपणे वर्चों त्यारे, हान क्रिया चके चक्द्री सा अपाय एट्टे हान क्रिया चके कहता हान क्रिया चके

कमें रूप अपाय कहतां जे येरी जीवने अनादि फालना शतुभूत धईने लागा हता, तेहने पक्च्री कहता च्यो बालीन क्षय करे, अने पहनी रीते चूरी बालीन क्षय केम करे हैं तीक, फारक कर समावादि साथ पास साध्य

फारक चक्र स्वभावधी साधे पूरण साध्य पटले कारक चक्र कहना कर्चा ? कारण ? कार्य ३ सपदान ४ अपादान ६ अने अधि-

अध्यातमगीताः Č. करण ६ ए पटकारक रूप जे चक्र तेणे करीते, साथे पूर्ण माप्य एटले सापे पूर्ण साध्य फहता ने जीउ पोतानु कार्य प्रत साथ कहता सम्प्रण नीपनावे. त्यारे शिष्य कहे-ए पट्ट कारक रूप चक्रे करीने पोतानो कार्य मतें केम सामे ी त्यारे ग्रुट कहे-कर्त्ता जीव ? अने कारण रूप समकित गुण २ अने कार्य करवो ठै केवल हान रूप ३ अने अपाटान कहतां क्षमे रूप अशुद्धताना आवर्ण टलता जाप ४ अने सपदान कहता गुणश्रेणी रूप

नर्प व अन समदान कहता शुणत्रपा रप निर्मेत्रता सपन्नती ( मगदती ) जाय ६ अने आवार महता ए केनठ ज्ञान रप कार्यमें, छोपे (छकारक) आधारभूत नाणना ६ एणी सिते परकारक रूप चक्रे करी ते नीव पोतानो

अध्यात्मगीता. 45 कार्य मते नीपजारे अने एहवी रीत पर् कारक रूप चक्रे करी पोतानो कार्य पते नी पजावे. त्यारे कत्ती कारण चाय एक थया निरापाध्य एटछे फर्चा चेतन, अने कारण ज्ञानादि ग्रण, अने कार्य कहता' अनेक' शेष पदार्थ जाणवा, देखवा रूप अने एक थपा कहता ए जण एकतावणे विराधास्य कहती अवाबा रहित नीपजे. एटले एहवी रीते अवाघा रहित केम नीवजे १॥ २८॥ 🗥

स्वग्रण आयुधथकी कर्म चूरे।

असच्यात गुणी निर्जरा तेह पूरे ॥

टले आवरणधी ग्रण विकाशे।

साधना शक्ति तिम २ प्रकाशे ॥ २९ ॥ पर्ध:-- स्वगुण आयु यथकी कर्म चूरे

अध्यातमगीता

पटले पर्मने केम चुरे ? तोके, स्त्रगुण आयु षधकी, एटल स्यगुण कहनां पोताना ज्ञानादि गुण रप, आयुव कहता जे हथियार, तणे

करीने कर्म चुं अने एहबी रीते कर्म में चुरे , त्यारे असम्पात गुणी निर्जरा तेह पूरे , एटछे अस⊂यात गुणी कहना ते जीव समय पहत्री रीते निर्जरा करे, त्यारे, तेह पूरे

समय अमरूयात गुणा निर्नरा पते वरे, अने

पटले तेह कहता ते जीय, अने पूरे कहतां

पोताने स्वगुणे करी आत्माने पूरे, अने

८८ अंध्यासमिति पहरी रीते आत्माने केम धूरे ? सो के, टर्ड आपरणे सुणितिकासे एटले टले आवरणे

कहनां जिम जिम कमें रूप पुहलना आगरण टळता जाय, अने गुर्ण विकावे कहता तिम तिमं आत्मग्रुण विकरार कहतां मगट पणे थता जाय स्पारे तिस्प पहें ? आत्मग्रुण केम विकस्वर थाय ? स्यारे गुरु कहे-सूर्य आडा वादला खाने, स्यारे, सूर्यनी

कति मते द्याय, अने बादला जिम जिम पनने जोरे विखरता जाय, तिम तिम मूर्वनी मकाश मते पामती जाय, तिम हाँ। ए आत्म गुणने कर्भ रूप बादळा आहा त्यारे आत्मानी गुण रूप क्रांति मते पिण अतसने मिपे आत्माने गुणरूप षपा सिं साधनं रीत कहता, आत्मनी क.हेल्बता भोकुन्वादि पचमक्ति ते अनाढि काळनी पर अनुजाट पणे अवर्ली प्रणमी

हती; तिहायकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुनाड रूप साथन पणे प्रणमावी त्यारे शिष्य कहे, ए पाच शक्ति स्वरूप अनुनाह

अध्यात्मगीता

ल्प साधन पणे केम मणमी १ त्यारे गुरु पहे—आत्मानी कचूनता रूप के शक्ति ते अनादि काळनी परकर्तापणे अवछी मणमी हती, तिहां यत्री निरागीने पोताना स्वरूप कर्ताम्प साप्तनपणे मणमात्री.१अने आत्मानी मोरसुद्रतता रूप ने शक्ति ते अनादि काळनी

ं ती, तिहा थकी निवासीने पोनाना

प्रगट्यो आत्म धर्म थया सबी सा-धन रीत । वाधक भाव ब्रहणता भागी जांगी नीत ॥ उदय उदी-

रणा ते पिण पूर्व निर्जरा काज । अनिम सन्धि वधकता निरस आत्मराज ॥ २० ॥ अर्थः—पटले पदवी रीते आत्मानी, इक्ति मते जागी त्यारे, मगट्या आत्म, धर्म

यमाँ सिव सापन रीत एटले मगट्या आत्म वर्षे, कहता वर्मस्प आवरणने अभारे, अनव एणस्प आत्मिक धर्म मते मगटे अने एहर्रा रीवे अनत गुणस्प आत्मिक धर्म मते स्म मगटे ? तोके, यया सिव साधन रीत, एटले प्रया-सिव साधनं रीत कहता, आस्मनी कर्लन्दता भोक्तृत्वाटि पचराक्ति ते अनादि काल्मी पर अनुजाड पणे अवली प्रणमी हती; तिहायकी निवारीने पोताना स्त्ररप अनुजाइ, रूप माधन पणे प्रणमाची त्यारे विष्य, कहे, ए पाच वक्ति स्वरूप अनुजाड

अध्यातमगीता

स्प साथन पणे केम प्रणमी ? त्यारे गुरु करे,—आत्मानी कचूलता रूप जे जिक्त ते ज्ञादि काळनी परकर्त्तापणे अवळी प्रणमी हती, तिहां थकी निवादीने पोताना स्वरूप कर्याच्य साप्रनपणे प्रणमावी २ अने आत्मानी भोगतुरुतता रूप जे जिक्त ते अनादि काळनी पर प्रह्माद्यदि विभाव दशाना भोगने विपे

भणमी हती, तिहा यकी निवारीने पोताना

49 अध्योदसंगीता स्वमार्व मोगीपण मणमार्वी र अने ऑत्मार्नी

रक्षकत्वा रप जे गाँकि ते अनाई कॉर्लेनी पर पुद्रलादि विभाग दशाना रक्षक पणे मणमी इती, तिहा थनी निवारीने पोतांना

स्वभाव रक्षकपणे मणमावी ३ अने आर्त्मानी व्यापकरना रूप ने शक्ति ते अनांदि कीलनी पर स्वभाव रूप निभाव दशाने विषे व्यापी रही इती, तिहां थकीं निवारिने वोतीनी

स्वभाव व्यापक पण वर्णमाबी ४ अने आत्मानी ब्राहरूता रूप जे शक्ति ते अनार्दि

फालनी पर ग्राहकपणे अवली मणमी हती, ेल थरी निवासीन पोताना स्वभाव ग्राहर े प्रणमारी ५ एइरी रीते ए पाच शक्तिं

अनादि फाँछनी पर अनुयाईपणे अवसी

अध्योतमंगीतां ९३ प्रणभी हती, तिहा थकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुवाई रूप साधन पणे प्रणमात्री, अने एहवी रीते स्वरूप अनुवाई रूप सापन पणे प्रणमी, त्यारे, बायक भाव ग्रहणता भागी जागी नीत एटले पाधक भाव कहता अनादि कालनो ए पर स्वभाव रप विभाग दशानि हारे, जीवने प्राधक भाग रूप ग्रहण-पणो हतो, ते भाग्यो कहता टल्यो. अने एइवी रीते नामक भाव टल्यो त्यारे, जागी नीत, एटले जागी नीत कहता पर ग्रहण रूप अनित्यपणी टल्यो, अने स्वरूप ग्रहण रूप नित्यतापणो मगठ्यो, त्यारे, उदय उदी-रणा ते पिण पूर्व निर्जरा काज एटले उदय कहता स्थिति पाके उदय भावने जोगे करी

अध्यातमगीता ९६ कहता तिवारे, अने कुनय बहता ए धृटा नयरप अनित्य मार्गनी चालणहार क्रण होय ? एम इहा ए देशपति पहना असरयान मदेश रूप जे देश, अने ते देशने विपे शानादि अनत गुण रूप रूक्ष्मी रही है. तेहनी पति कहता थणी, पहनो जे चतन महाराजा, जब थयो नित्यर्गा एटले जब पहता जिनारे, अने थयो निन्यरगी कहता ए पर स्त्रभाव रूप अनित्व मार्ग मुझीने, पोताना स्वरूप में रमण करवा रूप नित्य मार्ग मंते पकडचो अने एइवी रीते नित्य मार्ग मर्ते पकडचो, त्यारे, तदा इत्य थाये इनय चाल सगी पटले तटा कपता तिवारे अने क्रुनय कहता ए कृदा (सोटा) नय

90 रप अनित्य मार्ग प्रतें कैम चली <sup>?</sup> एटले ज मार्गे पोर्ते चाले ते मार्गनो पर ने पिण उपदेश मते करे एटले एहरी रीते श्रद्ध

अध्यातमगीता

मार्गनो परने उपदेश प्रते कोण करे ? तोके, यदा आत्मा आत्म भाने रमाव्यो एटले यदा कहतां जिवारे, अने आत्म भारे रमान्यो। कहता जेणे पाताना आत्माने आत्मभाउने

विषे रमान्यों कहता रमाड्या ते करे अने एहर्रा रीते आत्मभावने विषे रमाड्यो त्यारे तडा वाधक भाव दुरे गमाच्यो एटले तडा कहतां तित्रारे, अने पायक भाग कहता अ-नादि कालनो ए पर स्वभावरूप विभाव दशा निहारे जीउने बाधक भावरूप ग्रहणपणी हता

ते दूरे गमान्यो, एउछे दूर गमान्यो कहता

९८ तेहनो नाग मने करयो अने पानी रीते पाथक भावना नाग मर्न कम करची? ॥३२॥

सहिज क्षमा ग्रुण शक्तिथी छेचो कोध सुभट्ट। मार्टव भावप्रभा-वयी मेचो मान मरह ॥ माया

आर्जव योगे लोभते निस्पृह भाप । मोह महा भट ध्वसे ध्वस्यो सर्व

विभाव ॥ ३२ ॥

अर्थ'—सहिन समा गुण शक्तिथी छैपी कोब सु भट एटले सहिज क्षमा गुण कहती

अकृतिम भार रप जे क्षमा गुण, अने शक्तियी

अध्यासमीता ९९ कहता ए अकृतिम भाव रूप शक्तिये करीने. हेचो कोच छमह एडले ठेचो कोच छमह कहता ए मोह राजानो क्रोप रूपी जे छभट तेहने छेयो महता निमदन मर्ते करयो १ मार्द्य भाग मभाज्या भेद्यो मान मरहः पटले माईव भाव कहता ग्रदता भाव रूप जे नरमास गुण, अने प्रभावशी कहता वेढने प्रभावे करीने भेद्यो मान मरह एटले मान मरह कहना ए मान नपी सभट मर्ते भेयो कहता ठेचा तेहने उनमेली (उसंदी) नाष्यो अने मरह प्रदेश पर्दा गीते मान रपी स भटनो मरोड पते गेट की में ? माया आ-र्जव योगे लोनते निस्पृह भाव, एटले माया कदता माया रूप जे कपट. अने आर्जव

अध्यातमगीता कहता सरळ स्वभाव पणो, अने जोगै कहता

कहता ए निर्लोभ रूप निस्पृही भाव धकी

8 मोह महा भट्ट ध्वसे भ्वन्यो सर्वे विभाव एटळे मोह महा कहता मोह रूप महा भट्ट कहता जे सुभट, पहनी जे शरवीर ते सर्वे अवगुणने विषे राजा समान तेहने जसे फहता भासे पटले हटसेली नारें पहनी रीते मोइने दुर करव करीने ध्वस्यो सर्व विभाव एटले ध्वस्यो सर्व विभाव कहता एह विभाव दशा रूप जे परस्वभाव, एडवी रीते सर्वे अपाय कहतां जे पाव जीवने अनादि

200

तैइने जोगे करीने दूर पते करचो ३ लोभने निस्पद्व भाव एटले लोभते निस्पद्व भाव

लोभनो नाश मन करचो

कालना शत्रभूत थईने लागा इता, तेहने भ्वम्ये कहता ध्वस्यो, एटले नाश मेते करची, अने पहची रीते क्रोधादिकनो नाश मतें कैम करघो ?॥ ३२ ॥ दाछ:---इम स्वभाविक थयो आत्म वीर । भोगवे आत्म सपद सुधीर ॥ जेह उदया गता प्रकृति वलगी ।

अध्यात्मगीता.

१०१

अञ्चापक थको खेरवे तेह अलगी ॥ ३३ ॥ अर्थ-एम स्वमाविक थयो आत्म वीर एटले आत्म कहता ने आत्मा, अने

वीर कहता जे सूरवीर महा पराक्रमी अनत

१०२ अध्यारमगीता यलनो धर्णी कर्म शतुनो जीतगहारी अने एम स्वभाविक ययो पहता ए पर स्वभाव

रीते पोताना स्वभावन विषे मणस्यो त्यारे भोगने आत्म सपद सधीर एरले आत्म मपद कहता ज्ञानादि अनत चत्रप्रय रूप पोतानी आम सपदा मने भोगवे कहता विलमे अने सु फहता भर्टी तरह अने बीर कहता अधीर पणी मुक्तींन निर्भय धकी भोगवे अने जेह उदयागदा मक्रति पलगी एटले जे उद्यागता फहता उदय भारते जांगे, मछति चलगी फहतां के आत्म

रप विभाव दशाने विषे मणस्यो हती, तिहाँ थकी मति निवारीने स्वभाविक कहता पोताना स्त्रभावने विष मणस्वो अने पहती

पुरले अञ्चापक धको कहता अलिस पणे न्यारो रही जे कर्म रूप महति उटय आरो ते भोगपीने सेस्वे एणी रीते अलगी कहता हरे करीने आत्म गुण निरापर्ध मतें करे

त्यारे शिष्य कहे-आत्म गुण केम निरावर्ण पर्ते करे<sup>?</sup>॥ ३३॥

धर्म ध्यान इकतानमे ध्यावे अरिहा

सिङ।ते परिणतथी प्रगटी तात्विक

सहज समृद्धि ॥ स्य स्वरूपएकत्वे 🛚

तस्मय गुण पर्याय । ध्यानैध्याती

## अध्यारमगीताः

निरमोहीने विकल्प जाय ॥ ३४ ॥ अर्थ:--धर्म ध्यान इकतानेम ध्यारे अरिहा सिद्ध एटले धर्म ध्यान करने पोतानो आभिक धर्म सत्तागतने विषे अन्त खों है, ते धमेंने ओलखी मतीत करी तेर ध्यानने तिथे मर्वो स्थारे लिट्य करें - पर्री रात ध्यानने तिथे तेम मर्वते ? तीके पक्रवानी फहता शुद्ध शुक्र ध्यान रूपानीत प्रणाम श पुरुत पूर्ण, ध्यात्र अदिहा सिद्ध प्रान्त अरिहा सिद्ध कहतां अरिहत तथा मिद्रन

गरिताना आत्माने समृतुत्य पणे सर्वित गुणे पोताना आत्माने समृतृत्य पणे सर्वित गिणी, अने प्याने कहता पृद्वी रीते निर्ण गता पणे भोल्स्सीने तेहना ध्यानने विषे माँ अने पहती रीते ध्यानने विषे मार्ग अध्यात्मगीता. १०५

त्यारे ते परिणितथी मगटी तत्विक सहज समृद्ध एटले ते परिणितथी कहतां एडबी निर्मल श्रद्ध आत्मानी मणति धर्मी अने प्रगरी कहतां नीपजी त्यारे शिष्य कहे-इय नीपनी ? तोके, तत्विक सहज समृद्ध एटछे तत्वक कहतौ तदस्पपणे जेहबी सत्ताचे हती तेहवी. अने सहज कहतां ए अक्रतिम भाव रूप सपदा प्रतं, अने सम कहतां सम्पूर्ण अने रिद्ध कहता पोतानी शानादि अनत चत्रप्रय रूप लक्ष्मी मते मगटे अने एडवी रीते पोतानी छक्ष्मी मर्ते केम भगटे ? तोके. स्य स्यरूप एकत्वे तन्मय गुण परर्याय. एटले स्य स्वरूप कहता पोताना आत्मिक स्वरूपने विष, अने एकत्व कहतां

305

अध्यादमगोताः

पणे वर्ते अने पहनी रीते पवन्त्रपणे के

वस्या ? तो वः, तन्मय गुण पर्णाय घटले

तन्यय कहता तलाठीन रुप, अने गुण पर्या

विकल्प जाय एटडे ध्याने कहता तेहन

ध्यानने विषे अने भ्याना कहना एहती री

पक्त पणे कें अने पहनी रीते पक

परले निर्मोही बहता ते जीन मोह रहि थाय, अने एहती रीते मोह रहित थाय त्याँ

सर्वे निरुत्प दुरे जाय एटले दुरे जाउ एह नैहनो नाश परे पाम अने पहनी रीते ना . वेमं प्रामे ? ॥ ३४ ॥

पणे बच्यों त्यारे, निर्मोदाने विकल्प जाय

महता पहनी रीने पोताना गुग परयांपन

चिननने विषे, ध्याने ध्याता निर्मीही

अध्यातमगीता

यदा निर्विकल्पी थयो शुद्ध ब्रह्म । तदा अनुभवे गुड आनद शर्मा ॥ भेद रत त्रयी तीक्ष्णताये । अभेद

रले त्रयी में समाये ॥ ३५ ॥ अर्थ - एटले यदा , निर्दिक्ति थयो

श्रद्ध ब्रह्म पटने यदा फंडता जिनारे अने निर्मित्रहर्पी थयो कहता एडगी रोते चलाचल

परणाम रूप विकटप छ रहित जीन धानै अने पहनी रीते निकल्प मुरहित जीन वारे

त्यारे, शुद्ध ब्रह्म एटले शुद्ध ब्रह्म फहता ते

जीय शुद्ध पूर्ण झहा रूप निर्मलानन्द एहवी

पोनानो पद पर्ने मगट करे. अने पहुनी

रेंग्ट अध्यारमगीता रीते पोतानो पद मते भगट करे स्पारे, तटा अनुभने शुद्ध आनन्द धर्म एटले तदा पहता तिरारे अने अनुभने पहता भोगने. त्यारे चिष्प पहे—भ्यू भोगने र तोके, शुद्ध आनद गर्मम पटले शुद्ध पहता निर्मल, विभान

दशा रूप उपाधि यमे रहित, अने आनट फहता एहत्री रीते आनन्दमयी, अने शम्मे फहता एहत्री पीतानो मूल घर मते भागने अने एहत्री रीते पातानो मूल घर मते केम भागवे भेंद्र रजन्मी तीक्ष्णताये, अमेद रजन्मीमें समाये पटले मेट फहती

अने एहवा रीते पाताना मूळ घर मते केम भोगवे । भेद रजनती तीक्ष्णताये, अभेद रजनत्यों में समाये पटळे मेट फहतो खुदी ? अने रस्तनत्यों फहता हान, टर्झन, गर्मदन रूप जे रस्त प्रधा, अने तीक्ष्णता ं तेक्षेत्र त्रिपे तीव्रता रूप एकाव्रतापणे रप खपयोग मतं बस्यों त्यारे, अभेद रत्न त्रयीमे समाय एटले भेट रत्नत्रयी इती ते एक समय एकता रप अभेटता पणे मणमी

अने एहवी रांते अभेद रुप एकता पणे प्रणमी त्यारे जाणवा, देखवा, रमण करता रुप एक समय उपयोग वर्खों ? अने पहती रीवे जाणवा देखारा, वस्तु करता हुए एक

रीते जाणता देखवा, रमण करवा रूप एक समय उपयोग नेम तत्यों <sup>१</sup>॥ ३५॥

चालः— दर्शन ज्ञान चरण ग्रुण सम्यग्

एक एकना हेत । स्व स्व हेतु थया सम काले ते अभेटता खेत ॥ पूर्ण स्वजाती समाधि घनघाती दल छित्र। क्षायक भावे प्रगटे आरम धर्म जिमल्ल ॥ ३६॥ अर्थ —वर्गन ज्ञान चर्ण गुण

अध्यातमगौता

\$\$0

सम्यग एक एकना हेन प्रते सम्यग मान, प्रदेश भल प्रशास-सम्यग् ग्राम मम्यग दर्गन अन सम्यग चारित "ए जे गुण, अने एक एकना हेन कहता दर्शन के ते जीवने विशेष उपयोग रूप गुण छ प्रते दर्शन तथा ग्राम ए चे ने निर्ध स्थितता रूप एका अता पण उपयोग वर्ष ते चारित जांणारी

माटे ए त्रणे परस्पर एक एकना हेतु,कहतां

अध्यानमगीता

जाणा एटले माहोमाहि ७ क बीजाना हेत्

रूप कारण केम थया ? तोके स्त्र स्त्र हेत थया सम काले ते अभेदता खेत एटले स्व स्व इतु थया कहना आप आपणा हेतु हप, अने धया सम काले फहतां एक

समयमे ज्ञान, दर्शन, चारित रूप ने रत्नित्रयी ते एकता पणे प्रणमे; अने एहवी रीते एकता पणे केम प्रणमें ? तो के तेह अमेन्ता खेत एटले तेह पहता विमन, अने अभेट कहता

एहवी रीते अमेदात्म पण, अने रीत कहतां

स्व क्षेत्रने विषे जाणवा अने एहती रीते स्व

स्वजाति समावि धनवाती दल छिन्न. एटले

क्षेत्रने विषे केम प्रणम्या ? ताके पूरण

११२

यनघानी दल जिल्ल बहतां घाती कर्मे रूप

वन कहता जे समृह तेहना दर्लायां आत्म

भदेशने विषे लाग्यों हता तैरने छिन्न वहनां हेदी नाले अने पहवी भीते देशी नामया स्यारे पूर्ण स्वजाति समाधि पटने पूर्ण कहतां सपूर्ण अने स्व कहता पोतानी. अने जाति कहता झानादि अनत गुण एक राशि रप जाति मतें मगटे, अने समाधि कहतीं तेहने विष सदा काल समाधि प्रते वर्ते अने पहनी रीते समाधि मर्ते क्य वर्ते ? तोक क्षायिक भावे प्रगट्या आत्म धर्म त्रिभिन्न पटले आत्म धर्म कहता पातानी सत्तागतने विषे जनती आत्मिर धर्म गक्ति पणे रही। े व्यक्ति पणे क्षायिक भावे प्रगट्यों

विभिन्न कहता पहनी रीते अभेदान्म पणे प्रगट करी छोकालोकना भासकम्यका विचरे, अने पहुर्व रीते लोकालोकना

अध्यानमगीता.

भामकस्थका विचरे त्यारे ॥ ३६ ॥

पछ योग रोधिथयो ते अयोगी। भाव सेलेसता अचल अभगी॥

पच लघु अक्षरे कार्य कारी । भवोपयही कर्म सतति विडारी

॥ ३७ ॥

अर्थ - पर्रे योग रोधि ययो ते अयोगी. एटले योग रोवि कहतां पठ तेरमा

११४ अध्यास्त्रभीता गुणस्थानने छेडले समे योगना राध प्रम्य माटपा एटले सुस्म किया अमतिपाति सुह व्यानना त्रीजो पायो भ्यावतो ते जीः

चडदमे गुणस्थान चड निहा मथम पाटरने मनो यांग राम, पर्छा बादरनो बचन योंग रोने, पर्छा पादरना पाय योग राम, पर्छ मुक्तम मना यांग रोम, पर्छा मुक्तम रच योग रोम, पर्छा सुक्तम पाय योग राम

एहबी रीत मुख्य पाउरे रूप योगमी रो। कर्रा थयो ते अयोगी एटले थयो ते अयोगी वहना ते जीव चडनमे गुणस्थाने अयोगी पद प्रते पामे अने एहबी रीते अयोगी प

पते रेन पारचो ? काफ भाव से ठेमता अचा अमगी पटले भाव सलेसता कहता भावन चले नहीं पहनी स्थिरता रूप भाव, अने अभगी कहता एहवी रीते आव्यो यको ते

ते भावनो भग पतं न थाय त्यारे, पच लघु अक्षरे कार्य कारी एटले पच लघ अक्षर कहता चडदमा गुणस्थाने जीप पोहन्यो

त्यारे: अडड ऋ ऌ, ए पच लघु अक्षर स्प उचार करे, एटला काठमा कार्य कारी कहता, ते जीव पोतानो सर्व कार्य मते

भारतो भग मत न थाय अने एहवी रीते

अध्यारमगीता

नीपजारे अने एहती रीते मर्न कार्य मते कैम नीपनाने ? तोके, सर्वोपग्राही कर्म सतित विडारी, एटले भगोपप्राही कहता भवने

आश्रीने, अने कर्मनी सन्ति कहना कर्म रप

११६ अध्यात्मभीता पुद्रगलनी सत्ति वाफी रही हती तेहने विटारी वहता चूरी वालीने भय मते करी

अने एहती रीते चरी घालीने तय करी स्यारे ॥ ३७ ॥

चाल:---सम श्रेण एक समये पुहता जे

छोकाति । अफ़समाण गति निर्मल

चेतन भाव महत् ॥ चरम त्रिभाग विहीन प्रमाण जसु अवगाह। आतम प्रदेश अरूपा एउ। नद

अवाह ॥ ३८ ॥

अर्थ:--गम अर्ण एक समये प्रहता

अध्यातमाता ११७ के लोकाति पटले समग्रेणे कहेता पाउरी श्रेणे; अने एक समय कहेता एक समयने विषे पोहता जे लोकाति एटले पोहता जे लोकाति एटले पोहता जे लोकाति कहता चउटराज लोकने अते अजरामर स्थानके सिद्ध क्षेत्र कहता जे क्षेत्रने विषे अनता मिद्ध परमात्मा विराजमान

थका बर्ते ठे, ते क्षेत्रने त्रिपे पोहना पटले किया कहे केम पोहता है तोके, अफुसमाण गित निर्मेळ चेतन भाव महन पटले अफुसमाण फहता बीजा मदेश अणकर्म पटले जे इहा आकाशरूप क्षेत्रना हैदेश करस्या हता तैहीन सम्बेणीना तिहा करस्या ठे

पिण यीजा प्रदेश अणकरसे अने गति कहेता एहरी गतिये वर्तता पांडच्या अने निर्मळ

अध्यात्मगीताः ) > e मता॥ आतम गुण पूर्णतावंत सता।

निरावाध अस्रत सुखा स्वादवता

॥ ३९ ॥

अधी--निहा एक सिद्धात्मा तिहा छै

अनता पटल जिहा एक सिद्धातमा कहता

जेंगे क्षेत्रे एक सिद्ध परमात्मा छे, तेंगे क्षेत्रे

अनता सिद्ध परमात्मा भेला मिलीने रहा। छै

पिण ते सिद्ध केहवा छे ? तोके, अवधा

अग था नहीं फासमता एटले अवला कहता

पाच वरण धर्मी सिद्ध रहित छै अने अग म

में गधधकी पिण रहित छै अने बली सिद्ध

वहा है ! तोक, नहीं फामपता एटले नहीं

विद्याशिक एक फार हार हारा



अध्यातमगीता \$25 स्थानके आतिमक सूख अनुभवे है, ते सुख

ਚਾਲ:---कर्त्ता कारण कार्य निज परिणामिक भाव । ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता ग्रष्ट स्वभाव ॥ याहक, रक्षक, च्यापक, तन्मयताचे लीन, प्ररण आतम धर्म प्रकाश रसे छयछीन

ने ताल एक समय मात्र विवास आव अने

स्याद्यता कहता ए विभाविक सुखने अभाने

जने वळी सिद्ध परमातमा केहवा छै ? ॥३९॥

स्त्रभातिक सुखनी आस्त्राटन पर्ते करे हैं

118011

अध्यात्मगीता. अर्थ:---केर्त्ता कारण कार्य्य निम परि-

णामिक भाव एटले फर्चा ते सिद्धनो जीव अने कारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण मत कारण रूप नीपना है, अने कार्य कहतां ते गुणम रमण करवा रूप कार्य जाणवो अने निज परिणामिक भाव पटले

निज कहता पोतानो, अने परिणामिक भाव कहना नैगम, सग्रह नयन मते जीवनी सत्ताये परिणामिक भाग रहाँ हतो तहेंत्रों जे एवभूत नयमें मते सिद्धिं रूप कार्य मत नीपनी तहने

विषे वर्ने है अने वली सिद्ध परमातमा केहवा छै <sup>?</sup> तो के, जाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता शुद्ध स्वभाव एटले ज्ञाता कहता ज्ञाने करीने.

अने ज्ञायक कँइता अनेक होप पदार्थ पते

१२६ अध्यानमंगीता पूरण कहता सम्पूर्ण, अने आत्मधर्म कहता पोतानो अनन्त गुण रूप आत्मिक वर्म्म प्रते

अने प्रकाश कहता तहनो सचागतने पिषे प्रमाण प्रते प्रमाशो छै अने रसं लक्ष्मलीन

एटले रसे कहता तेहना रमने विषे सदाकाल लपलीनपणे वर्ते ठे एटले हिवे द्रव्य, क्षेत्र, काल. भाउम्प चार भाग करी सिद्धनी

काल, भावस्य चार भाग करी सिद्धनी स्वरूप ओल्खाने हैं॥ ४०॥

स्तरप ओल्खाने है ॥ ४० ॥

द्रव्यथी एक चेतन अलेशो। क्षेत्रथी जे असस्य प्रवेशी॥उत्पान

वस्त्री ज असल्य अ शासित्सार वस्त्री नाश भ्रुवकाल धर्म्म । शुङ उपयोग ग्रुणभाव शर्म ॥४१॥ अर्थ:—उग्पर्धा एक चेतन अलेसी. एटले द्रव्यथकी मिळने एक चेतन किंद्रेये एटले चेतन कहता शुद्ध बानादि चेतना रूप गुणे करीने सहित मांट चेतन कहिये अने

अलेसी ऋरता ऋणनील कापोतादि छ

अध्यारमगीताः

१२७

लेक्याधर्का सिद्ध रहित है माटे अलेकी कहिये क्षेत्रधी ने अमस्य प्रदेशी पटले क्षेत्र थर्की सिद्धने स्वक्षेत्र रूप असंत्यात प्रदेशी कहिये उत्पात नाग धुन काल नर्म एटर्न काल थर्की मिडने उपात कहता अभिनव पर्णाय नर्रा जाणवा-देखवापणाना समय २ उपकरी

ना जाणवा-डख्यापणाना समय २ उपज्ञा थातो जाय अने नाग कहना पूर्व पर्यायना जाणवा-देख्यापणानो समय २ ड्यय कहता नाज थातो जाय अने युव कहना सिद्धने

१२८ अध्यातमगीता हानात्रि अनन्त गुण पगट्या है; ते सदाकाल धुवना ध्रव पणे शास्त्रता वर्ते छे अने धर्म कहतां एहवी रीते सिद्धने झान, त्र्ज्ञन, चारित्र आदि अनन गुण रूप धर्म मगट्यो छे, तेहने त्रिपे सदाकाल पर्व्यायनी उत्पात न्यय थड रह्यों छे अने बली सिद्ध कडवा छे? तो क, श्रद्ध उपयोग गुण भाव शर्म पटले भाव यकी सिद्ध परमात्मान गुण भाव कहता पो-ताना ज्ञानादि जनस्त गुण भाव रप प्रमञ्जा छे, तेह रप शर्म कहता जे घर, अने शुद्ध जपयोग कहता तेह धरने बिप सदाकाल निरंतरपणे सिद्ध परमात्मा, शुद्ध कहता निर्मल जपयोगनत यका वर्ते छे एणी शते द्रव्य, -क्षेत्र काल, भावे करी सिद्ध परमास्मानो

स्तर्य जागवो. अने वर्जी सिद्ध परमात्मी फेह्ना छे ? ॥ ४१ ॥ चालः— सादि अनंत अविनाशी अप्रयासी परिणाम । उपादान ग्रुण तेहिज

कारण कारय धाम ॥ शुद्ध निक्षेप

अध्यातमंगीता

चतुष्टय जुनो रत्तो पूर्णानट। केवल नाणी जाणे तेहना ग्रणनो छंद ॥१२॥ अर्थ:—सादि अनन्त अविनाशी अर्थ यासी परिणान ऐटले वर्ळा सिद्ध केहवा छे?

के, सादि अनन्त. एटके सादि अनन्त फहर्ता

130 अध्यात्मगीता एक सिद्ध आश्रय जे सिद्धि वर्षा तेहनी जादि छै ते आदि में मिद्धि वर्षा पिण तेहनो पाछो फरि अत नधी जे फलाणे दिन सिद्ध पाछ। ससार में आउसे (अर्थात नहीं आने ) तेहनें सादि अनन्त भागी कहिये अने वर्ला सिद्ध केहवा है ? के. अविनाशी एटळे अविनाशी बहुता ए मिद्धि पद निपनी छै, पिण फिरि पाछी विनाश पणी नधी-अने वली सिद्ध केहवा है ? के अप्रयासी परिणाम 'एटले अपयासी कहता सिद्ध मयास विना अनतो आत्मिक सुख मते भोगवे छै अने परिणाम कहता सिद्ध परमातमा सद फाल निरतर पणे पोताना परिणामिक भावन - प्रिपे रहा वर्ते छे उपादान गुण तेहिंग अध्यारमगीता १६१
कारण कार्षे थाम पटले बली सिद्ध केहवा
छे ! के उपादान फहता पोतानो आस्मा; अने
गुण वेहिन कारण कहता पोताना हानादि
अनन्त गुण कारण रूप मगट्या छे. अने
कार्ष कहता अनेक क्षेप पटार्थ जाणवा—
देखा, रूप पर्यायनो उत्पाद न्यय समय २
होय रखो छे अने एहवी रीते थाम कहतां

यर, एरेडे पोताना आत्मस्वरपर्ने विषे निवास प्रते करचो छै, पटेडे ए अणे एफ समय एकता पणे अणमे छै शुद्ध निलेष चतुष्टप खुनो रचो प्रणानन्द एटेडे वर्टी सिद्ध बेहरा छै १ तोक शुद्ध निलेष चतुष्टप खुनो रचो. पटेडे शुद्ध कहता निर्मेड, अने निलेष चतुष्टप फहेता चार निलेपे करी १३२ अध्याहमगीताः ने, जुनो फहतां जुक्त प्रते वर्चे है,

वर्ते है । १ ॥

असख्यात मदेशने विषे ज्ञानादि अनन्त व्य छती पर्याप वस्त्र रूप अगटची छै

धापना रूप क्षेत्र अत्रगाही रहा छै ॥ २ ॥ अने द्रव्य सिद्ध फहना श्रुद्ध निर्मेल

शरीर ममाणे आप मदेशनो घन करी

मध्येथी त्रीजो भाग घटाहीने वे भागना

अने थापना सिद्ध कहता देहमान

चार निश्तेपा कहे है पटले नाम सिद्ध करती सिद्ध ऐसी नाम प्रणे काल एक रूप शाश्वती

स्यारे शिष्य कहे चार निरीपे करीने सिद्ध नो स्वरूप केम जाणिये ? त्यारे सह तद्यित (तद्व व्यतिरिक्त) शरीर आश्रये

इति तद्वित शरीर आश्रये द्रव्य जाणयो ॥३॥ अने भाषयको सिद्धनो स्वरूप कहताँ सामर्थ पर्व्याय भवर्तना रूप अनन्तो धर्भ मगट्यो ठै: तेणे करीने सदा काल नव

नवाह्मपनी वर्त्तना रूप पर्यापनी उत्पात व्यप समय समय अनन्त अनन्ती होय रहा डै, तेणे करीने सिद्ध परमात्मा अनंती छुल भो-गये डे ॥ ४ ॥ एणी रीते ए चार निक्षेपे करीने सिद्ध

परमात्मा रचो कहता सदा काल तेहते विषे रक्त मतं वर्ते ठे अने पूर्णानद कहता पहवी रीते सम्पूर्ण आत्मिक सुखनो आनद मतं भोगये ठे कैमल नाणी जाणे तेहना गुणनो छन्द, पटले केवल नाणी कहतां केवली

अध्यारभगीता भगवान, अने जाणे कहता पहची रीते सि

द्धनो स्तरूप प्रत्यक्ष पण जाणे देखे, अने गुणनो छन्द प्रहता ए सिद्ध परमात्माने अनन गुण रूप समृद्द पन पगट्यो है, तेहने

३ हे इ

विषे अनन्तो उस भोगत है ते देवली भग वाननेज गम्य है, पग छदमस्त मुनीना जाण्यामां न आने ॥ ४२ ॥

दाल ---पहवी गुड़ सिद्धता करण ईहा।

इडिय मुख धकी जे निरीहा।

अर्थ:-- एहवी शुद्ध सिद्धता करण ईहा,

पुरुगली भावना जे असुपी । ते सनि ग्रह परमार्थ रगी ॥ ४३ ॥

अध्यारमगीताः 234 एटले एडवी कहता आगल प्रखाणी तैहरी. अने शुद्ध महता निर्भल, अने सिद्धना कहता एडवी रीते सिद्ध परमात्माना सम्पदा मतः ते करण ईहा एटले करण ईहा कहता एहंगी सिद्धि रूप सम्पदा प्रगट करवाना जे मनिने ईहा (इन्छा) पत नर्ते ते सनि वेहवा छै ? तो के इदिय सुख कहेता पचन्द्रीयना त्रेवीस तिपय रूप प्रदूतकीक जे सुख, अने निरीहा कहता तेहनी इहा रूप पण्छा थकी रहित

थका उतें छै अने वली ए मुनि केहवा छै तो के पुद्लीक भावना ने असगी एटले पुद्लीक भाव कहता पोताना स्वरूप थकी भिन्न कहतां जुटो एहती सुभासुभ विभान दशा रूप के पुद्लीक भाव, अने के फहता \$8\$ ते ग्रीन, अने असगी फरतां तेहनी वछा रप

सगयकी रहित न्याग मते वर्ते है से सुनि श्रद्ध परमार्थ रंगी एटले ते मनिराज श्रद कहेतां निर्मल बुद्धिना धणी. अने परमार्थ

कहता साध्य एक साधन अनेक, एकी रीते सत्तागतना धर्मने साथे. पहती रीते परम कहतां उत्क्रष्टो अर्थ साध्याने रुगी कहतां

जेहनो चित्त मतें रगाणो है अने एहबी रीतें चित्त मतें रगाणी त्यारे ? ॥ ४३ ॥

स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि समकित तेह । आत्मधर्मनो भासन निर्मल

~ ी जेह ।: आरमरमणी चरणी

अध्यारमगीता ध्यानी आत्मलीन । आत्मधर्म रम्यो तेणे भव्य सदा सख पीन

अर्थ:-स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि सप-किन तेह एटले चली ए मुनि केहवा छै ?

11 88 11

तोक स्यादाद कहता अनेकता नयनी अपे-क्षाये स्याद्वाद रूप नित्य अनित्यादि आठ पक्षे करीने: आत्मसत्ता रुचि कहतां एइवी रीते पोतानी आत्मसत्ताने ओलसीने तेहने

मगट करवानी रुचि मत वर्ते अने एडवी रीते आत्मसत्ता प्रयट करवानी रुचि पर्ते चर्ति त्यारे समित्रत तेह एटले तेह फहता

ते मुनिरान श्रुद्ध भासन रूप सम्यक्तन भावे"

१६८ अध्यास्मगीता करीने सहित जाणमा, अने पहबी रीते सम्यक्ष भागे करीने सहित होय त्यारे

सम्यक्ष भाव करान साहत हाय त्यार आत्मधर्मनो मासन निर्मल ज्ञानो<sub>,</sub> केह ए<sup>डले</sup> आत्मबर्मना मासन कहतां श्रद्ध निश्चय नये करी जोतानो पोनानी आत्मसत्ताने विष

ज्ञानादि अनन्त गुण रूप वर्ष रह्यों छे, तेहनों भारतन बहता मतीत मतें मगटे अने एहबी रीते मतीत मतें मगटी स्यारे निर्मल ज्ञानी जिह एटले जेह कहता ते मुनि, अने निर्मल

भार प्रत पह कहता ते साम, अने निनल भानी फहता नानावर्णादि कर्म रूप आर्थणने अभाने, निर्मल जाणपणा रूप ज्ञान तेहने मगढे अने एहवी नीवे निर्मण जाणपणा रूप

ज्ञान मगट्यो स्यारे, आत्मरमणा चरणा े आत्मलीन एटले आत्मरमणी फहत अध्यातमगीता. - १३९
ते म्रुनि सदा फाल निरतरपंगे पोताना आत्म
स्वरूपने विषे रमण मन करें अने एहमी गीत्ने
रमण मत करची त्यारे, चरणी एटलें चनणी
फहता ए शुद्ध चारिजने विषे ने जपयोग
तेहनो जाणजो अने एहबी रीते शुद्ध चारिजने

विषे उपयोग उत्से त्यारे ध्यानी आत्मकीन पटके ध्यानी फहता पोताना आत्म सम्हपना ध्यानने निषे, अने लीन कहता तेहने विषे सटा काळ तलालीन पणे उर्ते अने एह्झी रीते तलालीन पणे उर्तो त्यारे, - आत्मुत्रभू रम्पो तेणे भन्य सटा सुखपीन एटळे अत्नि-धर्म कहता शुद्ध निश्चय नये पोतानी आत्म-

सत्ताने तिपे ज्ञानादि अनन्त गुण रर्प धर्म रह्यो है, ते धर्मने ओलखी मनीन फर्राः

अध्यातसमीता अहो भव्य । अहो उत्तम ! तेहना ध्यानन विषे सदाकाल रम्यो कहता रमण पर्त कर्यो अने पहनी रीते रमण करता थका सदी **अलपीन एटले सदा ग्रलपीन कहता ते** जीवने सदाकाल पीन कहता पुष्ट सुख भवें जाणारो त्यारे शिष्य कहे एहवी रीते पुष्ट सरानी माप्ति केम नीपजे ? ॥ ४४ ॥ अहो भन्य तुम्हें ओलसो जैन धर्म । जिणे पामिये शुद्ध अध्यातम मर्भ ॥ अल्प काले टले दुए कर्म । पामिये सोय आनन्द शर्मे ॥ ४५॥

अर्थ:-अहो भव्य हम्हे ओलली

₹80

अध्यातमंगीता जैन धर्म एटले अहो भव्य ! अहो उत्तम ! अहो सुलभवोधी जीवो ! तुम्हे ओछखो जैन धर्म जिन कहतां वीतराग, राग द्वेप थकी रहित एहवा जे सामान्य केवली तेहने निषे राजा समान, एहवा जिनेश्वर देव, तिगडाने निषे बेसीने वस्तुधर्म जेहवी अतरम सत्तागते रहा है तेहवी जे मकाक्यो, ते धर्मने ओलसी मतीत कर्यो थकी. जेणे पामिये शृद्ध

मतात क्या थका. जण पामिय शुद्ध अध्यातम मर्म एटले शुद्ध कहतां निर्मल विभाव देशा हुए अध्यातम मर्म एटले शुद्ध कहतां निर्मल विभाव देशा रूप ज्यापि धकी रहित, एहवो अध्यात्मनो मर्म कहता अतरग जाणपणा रूप हाने करी स्वस्य भासनताल्य मर्म कहता प्रतीतमतें मर्गटी अने एहवीरीने स्वस्य भासनताल्य मर्मी मर्गटी स्वारि स्वारि अस्य काले टले द्वर्ण कर्म.

पटले अल्प कहता थोडा कालमे, अने दुष्ट कहता आकरा आमग्रुणने घातना करणहार एहवा ज्ञानावर्णादि जे कर्म टले कहता नाश मतें पामे अने एहवी रीत कर्मनी नाश मतें थाय त्यारे पामिये सीय आनन्द शर्म एटले

स्व कहता पोतानो आत्मिक छुखनो आनट कहतां एहवा आनद नित्यानद परम ग्रुख मते, अने शर्म कहता जेहनो स्व स्थान मते

घर मतें केम पामिये ?॥ ४५॥ नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवा-

जिहा असता सिद्ध परमात्मा वसे छै, पहनी स्त्रस्थान कहता घर मतं पामे. त्यारे शिष्य फहे-जिहा अनता सिद्ध परमात्मा वसे छै ते

अध्यात्मगीता १४३ जीव । स्व पर विवेचन करतां थाये छाभ सदीव ॥ निश्चे ने व्यवहारे

विचरे जे मुनिराज । भवसागरना तारण निर्भय तेह जहाज ॥ ४६॥ अर्थः—नय निष्ठेप प्रवाण जाण जीवा-

जीव एडले नय कहता नैगमादि स्रोत नये फरी, अने निक्षेप कहता नामादि चार निक्षेप करी, जाणे जीवाजीव एटले जाणे जीवाजीव कहतां जीव अजीव रूप नव

तत्व' पर्द इंड्यनो स्वरूप मर्ते जाणे तेहने साधु शावकपणो जाणवो त्यारे शिष्य

साधु श्रावकपणी जाणवी त्यारे क्रिप्य फहे-नैगमादि सात नये करी, अने नामादि चार निक्षेपे करी जीव अमीव रूप नवः तत्व

श्रद्यातमगीता **{88**} पटद्रव्यनी स्वरूप किम जाणिये ? त्यारे हिवै मथम ग्रह क्रमा करि. सात नये नव तत्वनी स्वरूप पर्ते ओलखावे है पटले नगम नयने मते सर्वे तत्व छै, जे फारण भी तत्वने चाहे छे १ स्यारे संगढ नयना मनवास्त्रो सर्वनो सग्रह फरी बोल्यो (यह )-एक तत्व एटले जेहने मन मान्यों ते तत्व, बीजा सर्वे अतत्व जाणवा २ पटके व्यवहार नयना मतवाले बाह्य स्व रूप देखीने भेद वेंहचवा मांद्या एटले प नयना मत्राली दीसता गुण देखे ते माने, माट व तत्व-एटले एक जीव तत्व ? अने बोजो अजीव तत्व २ एटले मयम जीवना षे भेद-एक सफल कर्म सय करी लोकने

ब्रध्यास्मगीता १४५ अते विराजभान ने सिंछ, अने वाकीना वीजा संसारी ते ससारीना ने भेद-एक अयोगी अने बाकी बीजा सयोगी एटले चौदमा ग्रणस्थानना जीव ते अयोगी, वासी बीजा सयोगी ते सयोगीना ने भेट-एक केवली. बाफी बीजा छन्नस्थ पटले तैरमा गुणस्थानना जीय ते केवलो अने याकी बीजा छग्नस्थ पटले छद्मस्थना ने भेद-एक शीणमोही अने वाकी बीजा उपसनमोही एटले बारमा गुण-स्थानना जात्र ते क्षीणमोही अने वाकी त्रीजा उरासतमोही ते उपसतमोहीना व भेद-प्रक अक्रपाई बीजा सक्षपाई एटले अम्यारमा गुणस्थानना जीं। ते अकपाई, अने बाकी वीना सक्तपाई ते सक्तपाईना वे भेद, एक

अध्यातमगीताः मक्ष्मकपाई अने वाकी वीजा वाटरकपाई एटले दशमा गुणस्थानना जीव ते सुक्ष्मकपाई

पाईना वे भेद एक श्रेणीपतिपन्न, अने चीजा श्रेणीरहित एटले आठमा नवमा ग्रुणस्थानना जीत्र ते त्रेणीपतिपत्र अने बाकी बोजा श्रेणी र-हित ते नेणीरहितना ने भेद एक अममादी अन वाकी बीजा सर्वे प्रमादी एटले सातमा गुण स्थानना जीव ते अवसादी, अने पाकी बीन सर्वे ममादी ते ममादीना व भेद-एक सर्व विरति अने वीजा देशविरति ते देशविरतिना भेद-एक विति परिणाम अने बीजा अविधि परिणाम, ते अवित्तिना वे भट-एक अविधि समिक्ति अने बीजा मिध्यात्वी ते मिश्य

\$88

अने वाकी बीजा चाटरकपाई ते चादरक-

अध्यातमगीता १५७
स्वीना वे भेद-एफ भव्य, त्रीजा अभव्य ते
भव्यना वे भेद-एफ गर्वाभेदी अने वीजा
जीत्र गर्वा अभेदी एटलें एणी रीते व्यवहार
नयना मत्रालो जेहनो देखे तेहना भेद वेंहचे
वली जीवना ये भेट-एफर्स १ अने वीजा
थावर २ एटले थात्रर कहता पृथ्वी १ अप
२ तेंड ३ वाय ४ अने वनस्पति ५ ते सक्स

अने वादर करता १० (टश) भेट अने पर्ट्याप्ती अने अपर्ट्याप्ती करता २० भेद जा-णवा अने मत्येक बनस्पति पर्ट्याप्ती अने

अपर्ग्याप्ती, एणी रांते एकेन्द्री यावरना २२ भेद जाणवा हिये जसनो स्वरूप कहे ठे एटले ज

सना ४ भेद-देवता १ नारकी २ तिर्यन ३

185

अने मनुष्य. ४ ते मध्ये देवताना ९९ भेद पर्च्याप्ता अने अपर्याप्ता धईने १९८ भेर

जाणवा नारवीना सात परयासा, अपरयासा र्य ने १४ भेट अने तिर्येच जीव, गर्भज, समुन्डिम एणी रीते पर्श्यामा अने अपर्याप्त

र्याने २६ भट \* मनुष्यना १०१ भेद पर्याप्ता अने अपर्याप्ता घडेने २०२ अने

१०१ समुस्डिम, एणी सीते ३०३ भेद इम

सर्वे त्रस थायरना वर्डने व्यवहार नयने मत \* नेद्री १ ते दी र चौरित्रीना ३ पर्याता अपर्याप्ता वरा ६ भट अन पणड ही तिर्यवना २०

मैद, भन्वर १ थङचा २ खेचा ३ उस्परि ४ मुनवरि ६ ना पर्यासा अपर्यासा, गर्भन अन

एड्डिएन करन सर्व २६ भेद जाणवा.

जीवना ५६३ भेंद्र जाणवा ॥ १ ॥ हिषे अजीवना भेद येदचे छे (देखांढे छे) एटले अजीवना २ भेद-एक रूपी अने षीजा अरूपी एटले अरूपी कहना घर्मास्ति-काय स्क्रन्य (खन्न) १ देश २ अने खेंडा

श्रद्धारमंगीता.

186

२ अने मदेश ३ आफ्तास्तकाय स्फट्य (खय) १ देश २ अने मटेश ३. अने अद्वा कहतां काल. सर्वे धर्रने १० भेट जाणवा. १पे धर्मास्निकाय प्रवयकी १ क्षेत्रयकी २

३. अवर्गास्तिकाय स्कन्ध (खा) १ देश

ह्षे धर्मास्तिकाय व्रव्यको १ क्षेत्रयको २ कालयको ३ भावयको ४ नेगुणधर्का ५ एणी रीते अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय, सपा फाल सर्चे यहेने २० भेद जाणवा. अने आगला १० भेद माही मेलता अरूपीना सर्वे

१५० यईने ३० भेद जाणवा ॥ २ ॥ हिषे रूपी अजीवनो स्वरूप कह है पटले रूपी पहेता (स्पर्श) फरसना ८ गन्धना > रसना ५ वर्णना ५ सस्थानना ५

एणी रीते २५ भेद ते म'ये पाच रसना १०० पाच वर्णना २०० पाच सस्थानना १०० अने आठ स्पर्ध अने वे गत्र ए दशना २३० पटले सर्वे धईने रुपीना भेद ५३० कहिये एणी रीते ध्यवहार नयने मते अजीवना रूपी अरुपीना थईने ५६० भेट जाणवा ॥ ३॥ एणी रीने व्यवहार नयने मतवाले जीव अजीव रूप वे तत्त्वनी वहचण करी देखांडी वली शिष्य कहे-रिजु सूत्र नयसे प्रते फ़री तत्त्वनो स्तरूप केम जाणिये? त्यारे

अध्याहमगीता 222 गुरु कहे-कोई जीव शुभाशुभ परिणामे करी पुण्य पाप रूप आश्रपना दलीया वाथे तेहने

अजीव कहिये एट ठेए चार नय मे ए छ

तस्व जाणवा ॥ ४ ॥ प्रती शिष्य ऋहे-शब्द नयने मने करी तत्वनो स्वरूप कम जाणिये ? त्यारे गुरु

महे- शब्द नयने मते चोधे गुणस्थाने सम-किती जीय, पाचने गुणस्थाने देशविरती जीव, छंडे सानवें ग्रुणस्थाने सर्वत्रिरती जीव, अन्त-

रण सत्तागत ना भासन रूप सवर भाव में वर्तत्ता समय ? महा निर्नरा पते करे छे॥५॥ वली विष्य करे-समिभरद नयने पते

ग्रुर फहे-ने ए नयना मतत्रालो श्रेणी भावने

करी तत्वनो स्वरूप किम माणिये <sup>1</sup> त्यारे

अध्यात्मगीता बंदे छे, माटे नवमा दशमा गुणस्यानयी मादी यानत् तेरमा चौदमा गुणस्थान पर्यंत क्षेत्रली

१५२

मतें करे छै ८ तेहने भव शरीर आश्रये द्रव्य मोस पद कहिये ॥ ६ ॥ ॥ ९ ॥ अने एवभून नयने मते सकल कर्म सयकरी लोकने अती निराजमान सादिअन्-तमे भागे वर्चना एहवा सिद्ध परमात्मा तेइने भाव मोक्ष पद कहिये ॥ ७ ॥ ९ ॥ एणी रीते साते नये करी तत्वनो स्वरूप जाणवी हिवे नामादि ४ निक्षेपे क्री पट् द्रव्यनी स्त्ररूप ओलखाने है एटने नामजीव बहुता

नैगम नयने मते गये काले जीनतो हतो आगामी काले जीवसे अने वर्चमान काले

भगरान पिण सवरभारमे वर्चता महानिजरा

अध्यात्मगीता पिण जीने हैं एहरी रीते तर्णे काल एक रूप शास्त्रतो वर्ते तेहने नामजीव कहिये ॥१॥ अने स्थापनाञीव कहता जीव पहवा अक्षर लिखीने वापवा, ते सग्रह नयने मते असरभाव स्थापना रूप जीव जाणगो. अने माचा नीवाणमा जीव ते सग्रह नयने मते सद्भाव स्थापना रूप जीव जाणवो ॥ २ ॥ अने द्रव्यजीव कहता रिज व्यवहार नयने मते एकेडी थकी पचेडी पर्यंत पहिले गुणस्थाने अनाउपयोगे मिय्पात्व भावे वर्ते तैहने द्रव्यजीव कहिये ( अग्रवञ्रोगो हत्त ) ए अनुयोग द्वार सूत्रनो वचन छै॥ ३॥ अने भावजींव फहतां शब्द नयने मते

चौषा गुणस्थान सं माढी, यात्रत् छठा सातमा

(4 p अध्यारमशीता गुणस्थान पर्यंत जीव अजीवनी ओल-लाण, स्व परनी वैहचण करी जीव स्वरूपना जपयोगमा समिकत भारे वर्चे तेहने भाव-जीन कहिये ( बनओगोभान) ए अनुयोग द्वारनी साख छै॥ ।।। पणी रीते चार निक्षे पामे पाचे नये फरी जीवनी स्वरूप जाणवी हिवे नामथकी धर्मास्तिकाय ऐसी नाम ? अने स्थापना थका धमास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप धर्मास्तिकाय जाणत्रो २ अने इब्यथकी धर्मास्तिकाय इब्य असल्यात मदेसी ३ अने भावपकी धर्मा-त्तिकाय द्रव्य चल्लण सहाय रूप जाणवी ४ हिने नामयकी अधर्मास्तिकाय ऐसी नाम १ अने स्थापना यकी अधर्मास्तिकाय >

रितकाय द्रव्य असम्व्यात प्रदक्षी ३ अने भावपकी अवर्षास्तिकाय द्रव्य स्थिर सहाय रप जाणवो ४ हिने नाम थकी आक्रांस्तिकाय एसो नाम १ अने स्थापना धकी आकास्तिकाय

भीता अक्षर लिला। ते स्थापना रूप आका-स्तिकाय जाणते २ जने दृष्ट्य थकी आका-स्तिकाय दृष्य अनन्न मदेशी ३. अने भाव-यकी आकास्तिकाय दृष्य अवगाहना रूप जाणवी ४

जाणवो ४ हिंदे नामधकी कालहन्य एसी नाम १ अने स्थापना धकी कालहन्य एसी अक्षर बिखरा, ते स्यापना रूप काल जाणवीर अने इच्य थर्मी फालनो एक समय लोकमे सरा फाल शासतो वर्चे छै३ अने भाव पकी काल द्रव्य नवी पुराणा वर्तना रूप जाणवी ४ हिवे भावथरी प्रदुगलास्तिकाय ऐसी नाम १ अने स्थापना यकी प्रवृगलास्तिकाय ऐसा अक्षर छिखवा, ते स्थापना रूप पुद्रा-लास्तिकाय जाणवी २ अने द्रव्यथकी पुद् गल इन्यना अनन्ता परमाणुता लोकमे सदा काल शास्त्रता वर्स छै ३ अने भाव धकी

सम्पारमगीता

१५६

गल इन्यना अनन्ता परमाणुवा लोकमे सद्दा फाल शास्त्रता बर्च छे ३ अने भाव धर्की ध्रद्गाल द्रव्य गल्यण पूरण मिल्ला विन्तरण रूप जाणवो ४ ॥ ६ ॥ पणी रोते जीव अजीव रूप पृद् इन्य मे चार चार निक्षेपा जाणवा अध्यास्त्रगीता. १५७ हिवे नम तस्य नो स्वरूप नय रूप चार निक्षेप करी ओलखाउँ ठै तिहा मधम जीम अजीम रूप पट द्वव्य नो स्वरूप पढ़ां

हिंबे उटय भाव रूप प्रण्य में निक्षेपा

उतारे छे एटले नाम पुण्य कहतां नैगम नयने मते गये काले पुण्य एहवो नाम वर्ततो हतो अने आवते काल पिण पुण्य एहवो नाम वर्तस्य अने वर्तमान वाले पिण ते नाम

वर्ते छे एहरी रीते नैंगम नयमें मते त्रणे काल एक रूप सादत्रतो त्रतें, तेहनें नाम पुण्य कहिये १ अने स्थापना पुण्य कहता पुण्य ऐसा असर किलीने वापता ते संबह नयनें मते असदभाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो; अने कमें सत्ताना प्रकृति रूप दुर्लाया जीतनी

## १५८ अध्यास्मगीताः सत्तापे लागा छे, ते सग्रह नयने मने सब्भाव स्यापना रूप पुण्य जाणनो २ अने द्रव्यपुण्य

फहता उदय भाव ने जोगे व्यवहार नयने मते ते दलीयानो उदय थयो ते भव श्रीर आक्षय उदय भाव रूप द्रव्य पुण्य जाणती ॥ ॥ अने भाव पुण्य फहतां रिजु स्तृ नयने मते मन, वचन, कायाये करी व्यवहार नयने

मते जपर धर्मा पुण्य रूप दलीवानो भोग वणो ते भार रूप पुण्य जाणरो हिने पुण्य रूप धरणीनो करवो, वे जपर निक्षेपा रूपाय है पुरुष्टे नाम पुण् कहतो पुण्य पहरो नाम ते नैगम नयने म प्रणेकाल एक रूप पुणे चर्चे है है अं

अध्यात्मगीता स्यापना पुण्य कहता पुण्य ऐसा अक्षर लिखीनें थापवा, ते संग्रह नयनें मते असद-भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो अने कोई जीव पुण्य रूप करणी करे छै एहती मृतिं स्थापवी, ते सद्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो २ अने द्रव्यपुष्य ऋता ऊपर थकी अरुचि भारे अणा उपयोगे व्यवहार नयने मते पुण्य रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तदु-वित शरीर आश्रय द्रव्य पुण्य जाणवो ३

अने भाव पुणय कहता रिज् सूत्र नयने पते मन, प्रचन, कायाये करी एक चित्ते व्यवहार नयने मते ऊपर धकी पुण्य रूप करणीनो

फरतो ते सर्वे भाव प्रण्य जाणवी ४

हिये उटय भाव रूप पापमा निक्षेपा

लगा है एटले नाम यही पाप महर्ती पाप एमी नाम ते नेगम नयने मते जरी काल एक रूप पणे वसे छै ? अने स्थापना पाप बहुता पाप अक्षर लिखीने स्थापमा ते सग्रह नपने यने असद भाव स्थापना पाप जाणवी अने कर्म सत्ताना महति स्व दलीया, जीवनी सत्ताये लागा है ते सगह नयने यते सहभाव म्थापना रूप पाप जाणवो २ अने द्रव्य पाप कहतां उदय भारते जोगे ध्यनहार नयने मते ते दलीयांनो उदय थयो ते सर्वे भत्र शरीर आश्रय उदय भाव रूप द्रव्य पाय जाणवी रै अने मात्र पाप कहता रिजु सूत्र नयने मते मन, पचन कायाय करी व्यवहार नयने मते ऊपर थकी पाप रूप दलीयानी भीगवणी ते सर्वे भाव

अध्यातमगीता

180

**\$8**\$ अध्यात्मगीता रूप पाप जाणत्रो ४ हिवे पाप रूप करणीनो करवो ते ऊपर निक्षेपा लगावे है एटले नाम पाप कहता पाप ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते त्रणे काल

एक रूप पणे वर्ते है ? अने स्थापना पाप कहता पाप एहवा अक्षर लिखीने थापवा, ते

सग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो अने कोई जीव पाप रुप करणी करे 3 एइवी मूर्ति स्थापनी ते सदुभाव

स्थापना रूप पाप जाणवो २ अने

द्रव्य पाप कहता ऊपर यकी अरुचिभावे अणाउपयोगे व्यवहार नयने मते पाप रूप

करणीनो करवो, ते सर्वे तद्वित (तद्व्य-

तिरिक्त ) शरीर आश्रय द्रव्य पाप जाण्यो

115 अध्यात्मगीता ३ अने भावपाप कहतां रिज्ञ सूत्र नयने मते मन, वचन रुप, कामाये यरी एकचिते व्यव-हार नयने मन उपस्थकी पाप रूप करणीनी करतो, ते सर्वे भारपाप जाणती ४ हिने आश्रम में निक्षेपा स्मावे छै एटळे नामआश्रव कहता आश्रव ऐसी नाम, ते नैगम नयनें मते त्रणे काल एक रूप पणे वर्त्त छे १ अने स्थापनाआ-श्रन कहता आश्रन एहना अक्षर छिखीने स्यापना, ते सग्रह नयने मते असङ्भाव स्यापना रूप आश्रव जाणगो, अने आध्रव

रूप मूर्ति स्थापनाने सग्रह नयने मते सन् भाग-स्थापना रूप आश्रव जाणनो २ अने इन्यआश्रव महता बेतालीस मकार रूप अध्यातमगीता १६६
आश्रव में घडनाले करी व्यवहार नयने मते
धुभाश्रम आश्रव रूप दलीयानी ग्रहण करवो
ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय, द्रव्यआश्रय
फहिये ३ अने भावआश्रय कहतां रिजु
व्यवहार नयने मते मन, यचन, कायाये करी
उदयभागने जीगे तै दलियानो भोगवणो,

तेहनं उदयमाव रूपभाव आश्रव कहिये थे हिये संबर में निक्षेपा उतारे छै पटले नामसंवर कहता जे संवर ऐसो नाम, 'ते नैगम नपने मते त्रणे काल एक रूप जाणत्रो १ अने स्थापनासवर कहता जे सबर ऐसा असर लिखीने स्थापना, ते सब्बह नपने मते

असद्भाव स्थानना रूप सवर जाणवो अने सवर रूप भृति स्यापवी, ते सग्नह नयने मते 488 अध्यारमगीता. सदमान स्थापना रूप सनर जाणनी २.

अने द्रव्यसवर कहता जे व्यवहार नयने मते उपरथको अरुचि भावे लोक देखाइवा रूप पोपापदिक्रमणा सामायक आदे अनेक प्रकारे

सवरनी करणी करवी, ते सर्वे तद्वित शरी-रआश्रव दृब्वसचर द्वया रूप जागवो ३ अने भावसवर कहता जे रिज सूत्र नपने पते पन, बचन, कायाये करी यथानहत्ति रूप करण-

ना परिणामे पोसा पहिष्यणा व्रत पचक्खाण आडे व्यवहार नयने मते उत्परथकी सवर रूप फरणानो करतो ४

पटले ए इपार नवना इपार निक्षेपा यथापद्यत्ति करण रूप सपर जागवी

विक्ष नाम धकी सबर फहतां के सबर

अध्यात्मारीता. पेसो नाम, ते नैगम नययं मते जाणवो १. अने स्थापना थकी संबर कहता जे सबर ऐसा अक्षर लिखोनें स्थापता, ते सग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रूप सबर जाणवी. अने सत्रर रूप मूर्ति स्थापवी, ते सप्रद नयने मते सद्भाव स्थापना रूप सवर जाणवी २. अने द्रव्यसनर कहता ने रिज सूत्र नयने

मते मन, वचन, काषाये करी वत पचक्वाण रूप उपस्पक्ती व्यवहार नयने मते सबर रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तहिवत शरीर आश्रय ब्रव्स सबर जाणवे हे अने भाव सबर कहता ने झब्द नयने मने जीव अनीव करी, स्वस्ता पर सचानी वेहचण करी

स्यिरता रूप परिणामे आगल द्रव्य निर्ह्मेपा

अध्यात्मागीता म ये रिज़ ब्याहार नये सार रूप करणी फही, ते परतां थका महा निर्जरा मते वरे ते सर्वे भाव सबर जाणवी एणी रीने सबर में पाच नय में चार निक्षेपा नागवा ४ हिरे निर्जराथे निक्षेपा उतारे छै एटले नाम थर्की निर्जरा कहता जे निर्जरा पसो नाम, ते नैगम नयने मते प्रणे काठ एक रप पणे जाणवो १ अने स्थापना थकी निर्वरा कहता जे निर्नेरा एमा अंतर लिखवा, ते

सम्रह नयने मने स्थापना रूप निर्नरा जाणगी २ अने द्रव्यनिर्वरा फहता जे व्यवहार नयने मते रिज्ञ सूजना उपयोग सहित मिध्यात्व भावे अकाम निर्जरा फर्मी, ते सर्वे तद्वित्

श्रीर आश्रय द्रव्यक्तिता

चदय थयो, ते सर्वे तद्वित शरीर आश्रय इब्बवध जाणवो ३ अने भाव थकी बध कहता जे रिज सूत्र नयने मते मिथ्यात्व अर्ज कपाय योग रूप सत्तावन ५७ वध हेत प्रमुख जीवना परिणाम, एटले तैहनी

चिकामे, वली पाछो फर्म रूप दलीयानो षध पांडे माटे रिज्ञ सूत्र नयने मते तेहने भाववध कहिये ४ एणी रीते बधमें चार

नयमा चार निक्षेपा जाणवा ष्टिवे मोक्षनीःकर्म अवस्थामे निपेक्षा

उतारे छे एटके नाम थकी मोक्ष कहतां ने मोक्ष ऐसो नाम १ स्थापना थकी

अध्यारमगीसा मोक्ष बहुतां जे मोक्ष रूप मूर्ति स्थापनी अधना माक्ष ऐसा अक्षर लिखना २ अने द्रायमोस

₹७0

कहता जे समभिरद नयने मते शृद्धशृत्रध्यान रुपातीत परिणाम रूप शपक श्रेणीये अज्ञान रप राग द्वेपने मोहनी कर्मनी कन्ची धप वारमे गुणस्थाने, अने माल ज्ञान पार्म्या,

पहता नेत्रली भगवानने भन शरीर आश्रय द्रव्यमोक्ष पट फहिये ३ अने भावमोक्ष कहता जे एवभूत नयने मने अष्ट नर्भने क्षये, अष्ट राण सम्पन्न लोकने अते विराजमान पहरा सिन्द परात्माने भावमोक्ष पद जाणको ४

एणी रीने जीव अजीव रव पट द्रव्य, नव तत्वमे नय सपुत्तः निक्षवा जाणकः

अने मपाणे कहतां मत्यक्ष अने परीक्ष

अध्यात्मगीताः રંહર્શ ए वे प्रमाणे करीने जेणे नत्र तत्व, पट् इन्पनी स्वरूप मते जाण्यो ठे अने एइवी रीते जीव अजीव रूप नग तत्व पट द्रव्यनो स्वरूप नय निक्षेप प्रमाणे करीने जाण्यो त्यारे स्त्र पर विनेचन करता थाये लाभ सटैन एटले स्न पर विवेचन करता कहता जीव अजीवनों स्टब्स भिन्न २ प्रकारे जाणीन घेहचे स्यारे शिष्य कहे-जीव अजीवनी स्व-रुप भिन्न २ मकारे करी किम जाणे ? त्यारे गर कह-नीत छे ते ज्ञानादि चेतनाम्य गुण फरीने सहित निश्रय नये करीने सत्ताये

सिद्धसमान सटा काल शाश्यती वर्ते है अने व्यवहार नये करी जीवने प्रण्य पाप रेप थमाथम पखनो भोक्ता जाणवी, अने अजीव फहता पाचडव्य + चेतनारहित अजीवरूप जडम्बभाव (ते ) न जाणे सुराने, न जाणे

अध्यातमगीता.

105

द खने त्यारे शिष्य फरे-ए तो सामान्य मकारे अर्थ बची पित्र विदेश रीते स्वपरनी बेह्चणस्य जीवनो स्वस्य क्रिय जाणिये ? त्यारे गुरू बह-एगोइ एटले एगोइ फहता हु एक छु, म्हारी कोई नथी ?

सांसियो अप्पा एटले सांसियो अप्पा पदता म्हारो जीप शास्त्रती है २

नाण दंशण संयुक्ती एटले नाण दशण संयुक्ती कहती हूं प्रांत दशेणे करीने सहित

+ घर्मास्तिराय १ अधर्मास्तिराय २ भाराक्तिराय ३ ध्रहास्तिनाय ४ ओरवान ५.

अध्यातमगौता रं७३ सो सविवाहिरा भाषा, ते सर्वे सयोग लक्षणा एटले सो सविताहिरा भावा कहता ने म्हारा स्वरूप थकी वाद्य वस्तु कहता जै अलगी ते सर्वे संयोगे मिली है; अने नियोग जाशे, तेहमा म्हारे ज्यो विगाट थाशे ? ४ अने सयोग मुला जीपाण एटले सयोग मूला जीवाणं कहता ए सयोगी वस्तुने विषे जीव प्रश्लाणो एटले पत्ता दुःख परम्परा एट रे पत्ता दु:ख कहता ते जीत दु:खनी पर-म्परा प्रते पामे ५ माटे, तमह सयोग सनन पटले तमहै सयोग सम्बन्ध कहना ए सयोगी वस्तु महारा स्वरूप थकी भिन्न कहता जुदी छे-ए शरीरादि प्रन कलन परिनार ममुख ६.

रैण्ड अध्यारमगीसा इ सर्वे निकल्प सुरहित छ म्हारी स्वरप न्यारी है १९ देहातीतोऽह. एटले देहातीतोऽह कहता आ देहरूप ने शरीर तेह थकी हु रहिन छ २० अने अज्ञान राग द्वेप रूप जे आश्रव ते स्हारो स्वरूप नहीं, हु एण सो न्यारो अनत ज्ञानमयी, अनत दर्शनमयी, अनत चारित्रमयी, अनत वीर्यमयी ए म्हारो स्वरूप छे २२

थद पटले थद कडतां हु कर्म रूपमलमु रहिन छ २३ बद पटले बुद कहतां हु ज्ञानस्वरूपी ह रह

अध्यारमगीता १७७ अविनाजी एट रे अविनाजी कहतां म्हारो कोई काले नाशपणो नर्था २५ अजग एउले अजरा कहता ह जरा स्र रहित छ २६ अनाहि एटडे अनादि कहतां म्हारी आदि नर्ध २७ अनत एउछे अनत फहता म्हारी कोई काले अन कहता छेडो पिण नयी २८

अतय पटले अतय कहता म्हारी कोई फाले सय नधी २९ अक्षर एटले अक्षर कहना ह कोई

काले खरू नहीं ३० अचल एटले अचल कहता है कार्ड

काळे स्वस्प सुं चळू नही ३१

अध्यातमगीता 196 अरुख एटले अरूल कहता म्हारी **स्टरप केम सू कल्यो जाय नहीं ३२** अमल एटले अमल कहता हू कर्म रूप मलसू रहित न्यारी छ ३३ अगम एटले अगम कहतां म्हारी

मीयने तम नधी ३४ अनामी पटले अनामी फहतो हू नाम सू रहित न्यारो छ ३५

अरुपी पटले अरुपी कहता हु प निभाव दशाना रूप सु रित्त छु ३६

अकर्मी पटले अस्पी यहता हु कर् रप उपाति सु गहित हु ३७

अवधम एटले अवधक कहतां हु क

अध्यात्मगीता इप बान छ रहित, म्हारी रोल न्यारी 1 th 36 अणुदीय एउले अणुदीय कदतां हु र्मंबदय भाव स रहित छ ३९ अयोगी पटले अयोगी कहतां हूं मन, ह्यचन, कायाना योग स न्यारी उ ४० अभोगी परले अभोगी महता हु शुभा-१भ रुपिभाव दशाना भोग सु रहितछु ४१ अरोगी पटले अरोगी कहता ह कर्म हप रोग सुन्यारो छ ४२ अमेदी एटले अमेदी कहता हु कोईनी भेषो भेदाऊ नही ४३ अपेटी एटले अवेदी कहता हु झण पेद

इ न्यारो छ ४४.

100 अध्यात्मारीकर अंदेरी एटले अंदेरी फहतां हु कोईनी छेन्घो छेदाऊ नहा ४५ अरादी एनल अरोनी महना हु स्वस् रमण में रोंड पामु नहा ४० असरबाई एटले असरबाई कहता म्हारे कोइ सलाई भृत (साक्षीभृत) नगी हु म्हारे पराक्रमे करी सहित छु पिण महारा अवला ( उच्टा ) परिणमन यकी बन्नाणी ७४ छ अने हु सबलो ( सुल्टो ) मणमीस त्यारे दुटीश विण मने कोई वाघरा छोडवा सामर्थेपान् नथी ४८ भलेशी एटले अलेशी कहता हु छ इ लेब्बाधी रहित न्यारी छ अने लेब्बास्य त्

मुहल है, अने म्हारी रूप ते ज्ञानानद छै ४९ अशरीरी ऐंटले अशरीरी कहता हु शरीर रूप जड सु रहित शुद्ध, चिदानंद, पूर्ण ब्रह्म छ ५०

१८१

अध्यातमगीता

अभाषी एटले अभाषी कहता है भाषा रप पुद्गस सु रहित पूरण देव छ ए भापा रप ते पुर्गल ठे ५१

अनाहारी एटले अनाहारी कहता हु

च्यार# आहार रूप पुदूगलना भोग से रहित, अने पर्याय रूप मांगनो निलासी

छ ५२

अन्याताध एटके अन्याता महतां हुं

\*असण १ पाण २ खादिम् ३ स्वादिम् ४.

याधापिदा रूप दुःरा सु रहित-अर्नन मुसँ विलासी छ ५३ अनअवगाही एटले अनअपगाही फहर्न म्हारी स्वरूप कोई द्रव्य अवगाहि सर्वे अगुरलपु पटले अगुरु कहता मीटे नहीं अने अलख कहता छोटो पण नयी वली भारे नहीं, हलवी नहीं ५५ अवरिणामी एटले अवरिणामी फहत है मन रूप परिणाम हा रहित छ ५६. अनेन्द्री एटले अने द्री कहती हु इं

रूप निकार सु रहित-स्थारी, इच्छायी सु ५७ • अमाणी पटले अमाणी करता हु द

अध्यातमगीता.

142

अयोनी एटले अयोनी कहतां हु चो-ासी लाख जीवायोनी रूप परिश्रमणपणा प्र रहित, निश्चय देव छ ५९

अर्ससारी एटले अससारी कहता हु बार गति रूप ससार स रहित; पूरण आत्माराम छु ६०

अमर. एटले अमर कहता हु जन्म, गरा, मरण रप दुःख सु रहित छु ६? अपर एटले अपर कहता हू सर्व

परम्परा सु रहित, म्हारो खेळ न्यारो छै ६२ अन्यापी एटले अन्यापी कहता ए

विभाग रूप जटपणा स रहित, ह म्हारा

स्तरूप में सडाकाल व्यापी रही। छ ६३ अनास्ति एट रे अनास्ति कहतां महाएँ कोई काले नास्तिपणी नथी हू महारा स्र इच्यादिके करीने सदाकाल अस्तिपगित्र वर्त छ ६४ अरूप एटले अरूप कहती हु कोईनी कपायो कपू नहीं एम अनतवीर्य क्ये निकती अविरोध एटले अविरोध कहतां हु क रूप शश्चनो रोध्यो रुधाऊ नहीं, सदा कान निर्टेप फर्म रूप मल स रहित स्यारी, ड म्हारे परिणामिक भावे रह्यो वर्ते छु ६६

अनाश्रव एटले अनाश्रव फहता है धमाग्रम विभाव दशा रूप आश्रव स्र रहिं।

अध्यासमगीता

\$ < 8

अध्यात्मगीता ादा काल न्यारी वर्त छ जेम डकने संयोगे फटिकने कलक लागे पिण मूल स्त्रभाने रोतातो स्फटिक ग्रह निर्मलो है, तेम ह हारे स्त्रभावे निर्लेष रहारे वर्तु छ ६७ अलख प्टले अलख कहता म्हारो खर्ष छदमस्तने छरया मे न आने ६८. अशोक एटले अशोक कहता हू जन्म, गरा, मरण भय रूप शोक सताप स रहित सदा काल निरोगी, अमर रूप वर्तू छु ६९ अलोक पटले अलोक कहता हु लोकिक मार्ग सु रहित, म्हारी खेठ न्यारी वर्ते छे ७० छोकालोकज्ञायक एट ठे लोकालोकनायक **फहता हु हाने करीने छोकाछोकना स्वस्प** 

एक समयमे जाणवा सामर्थवान् छ ७१.

## १८६ अध्यासमीता. शुद्ध पटले निर्मल, कर्मरप मण्डा रहित हु ७२ चिदानट एटले चिट्ट क्हूने ह जान अने मद कहता आनद पारित रही

तेण करीन हु सहित वर्ते छु एहरी महाते राक्ष्य सदा माछ शाभवी छै. ७३. एहवी शैते,एम येहचण करती याये लाग सदैव एटछे—याये लाग सदैव कहता एही शैते अतरम भासन रूप येहचण करती यही ते जीउने सदैन यहता सदा याछ निरतरपण छाभ मते नीयन एटजे एहवी सीते सदा

काल लाभ मते क्षेम नीपने ? तीके निवेते व्यवहारे विचरे ने मुनिराय पटले निवेते व्यवहारे कहता जीव अभीव रूप पट हुव्य तत्वनी स्वरूप निवेय व्यवहार मर्वे त्यारे शिष्प कहें—निश्रय व्यवहार नये जीव अजीव रूप पट द्रव्य नत्र तत्वनो स्तरूम किम जाणिये ? त्यारे गुरु कहे—निश्रय नय करी सर्वे जीव सत्ताये एक रूप सरीखा सिद्धसमान शाखता है, अने व्यवहार नये

जाणपणा रूप अतर्ग मतीत करवी, ते धकी

लाभ मते नीपजे

नीव शुभ परिणामे करी पुण्य रूप आश्र-बना दलीया वाघे तेहने अजीव कहिये रे ते निश्चय नये करी छोडवा योग्य अने व्यवहार नये करी आदरवा योग्य बली कोई जीव अध्रभ परिणामे, करी

र्रो जीवनी अनेक भाति देवता, नारकी, विर्यंच, मनुष्य रूप जाणवी अने कोई

१८८ अध्यारमगीता पाप आश्रवना दलीया बीधे तहने अजीव

हिंगे सबरनो स्वरूप कहे छै पटले व्यवहार नये करी सवरनो स्थरूप कहता, निवृत्ति मवृत्ति रूप चारित्र जाणवीं, अने निश्चय नये करी सबर कहतां जे पोताना'

हिन निर्भरानी स्वरूप कहे छै पटलें व्यवहार नये करी निर्जराना वार भेद जाणवा अने निश्चय नये निर्जरानी स्वरूप कहता सर्व मकारे इच्छानो रोघ करि पोताना स्वरूपमे समता भाव वर्त्तेवो.

कहिये ते निश्रय नये करी छाडवा योग्य अने व्यवहार नये करी छाडवा योग्ध

स्वरूपों स्मण करतो

अभ्यारमगीता १८९ हिनै मोक्षनी:कर्णवस्थानां स्वन्त्य कहे

चवदचे गुणस्थानं केप्रशीनं कहिये अने निथय नये मोक्षपद कहता जे सकल कर्म क्षयकरी लोकने अते दिरानमान षह्या सिद्ध परमात्माने जाणवो षणी रीते नयतत्वनो स्वस्प निथय व्यवहार करी थाग्वो

छै पटले व्यवहार नये करी मोल तैरमे

हिन पर द्रन्यनो स्वरूप निश्चय न्यव-हार नय रूप ओल्साने छे विहा प्रथम जीवनो स्वरूप आगल क्यो ते प्रमाणे जाणनो १ हिर्गे पर्मान्तिकाय २ अन्मास्ति-कायनो स्वरूप कहे छे एटले निश्चय नयशकी धर्म अर्थम लोकन्यापी स्वन्न असस्त्यात प्रदेश

रूप शासवो छै; अने व्यवहार नयकरी देश

190 मदेश अने अगुर लघु जाणवा ३ हिवे आफास्तिमायनी स्वक्ष कहे हैं, पटले निश्व यथकी आकास्त्रिकायनी खच लोकालोकः व्यापी अनन्त मदेशी शाखता छे, अने व्यव हार नय फरी देश मदेश अने अगुरुलपु जाणवा ४ हिवे कालनो स्वरूप कहे छैं ण्दले निवय थकी कालनी एक समय लोक्मे सदामाल शाधतो वर्ते हे अने व्यव-हार नय करी काल उत्पात, ब्यय रूप पल-

टण स्त्रभावे जाणवा ५ हिवे पुद्गलनी स्तरूप कहे छै पटले

निश्चय नये करा पुरुलना अनुना परमाण छोक में मदाकाठ शायता वर्षे ठे अने ष्पनहार नये करी पुष्तलना स्वय सर्वे अध्यात्मगीता १९१ अञ्चाश्वता जाणमा ६ एणी रीते निश्चय न्यवनास्यक्ती पटद्रन्य

नत्र तत्व नो स्त्रस्य जाणतो ए परमार्थ अने पहनी रीते निश्चय व्यवहार रूप जाण पॅणे करी साध्यस्य निश्चय दृष्टि अन्तर ने विषे राखी: अने निटिंत पटिंत आदि बाह्य

व्यवहार रूप क्रिया करता यका अने निचरे जे मुनिराज, एटले विचरे कहता रीते स्वाद् बाद् रूप जाणपणे करी भव्य प्राणीने हेत उपदेश करता येक निचरे, जे कहना ते

जपदश करना यस रियर, जे कहना ते मुनिरान अने बली ते मुनि केहरा छै? भवसागरना सारण निभेग तेहि जहान एटले भवसागर कहता ससार रूप सागर कहताँ

ने समुद्र तेइने विषे भगवा भगवा अनुना

१९२ अध्यातमगीताः कालचक वही गया पिण हजी जीप काठा

मते न पाम्या, पहनो अपागामार जे सस्ट्र तहने निपयी तारनानं ए मुनि केंद्रमा छे ? निभय जहाज पृथ्छे निभय जहाज पहता। प्रदेश मुनीनी सेना अस्ति कर जासनी

एहवा मुर्नानी सेना भक्ति रूप आसना नासना ज जीन करे छै, तेजीन ससार समुद्र मे श्रमता, निर्भय कहता भन्न भ्रमण रूप भय टालवाने निर्भय जहान मते पास्ची एटछे जहान होय तो पोते तरे अने जहानने आश्रम

तेहने पिण तारे माटे एहवा जहानरूप मुनि-राज ससार रूप समुद्र पोते तरे, अने भव्य माणीने पिण तारे अने बळी ए मुनि केहवा छे ?॥ ४६॥ अध्यात्मगीता १९३

वस्त तत्वै रम्या ते निमंथ । तत्व अभ्यास तिहां साधु पथ ॥ तिणे

गीतार्थ चरणे रहीजे। श्रद्ध सि-द्धांत रस तो छहोजे ॥ ४७ ॥

अर्थ:--वस्त तत्व रम्या ते निग्रथ एटले वस्त तस्व कहता पोवाना आत्मानो बस्त धर्म सत्तागतने विषे अनन्तो रहाो छे.

ते धर्मने ओलखी, प्रतीत करी, अने रम्या करता तेहना भ्यानने विषे प्रवर्त्या अने प्रली

ए मनि केहवा छे? तो के निग्रथ एटळे

निग्रथ कहता, चौदर अभ्यतर, नत्र विध

पाचनी गरो तजे मुनिराज एटले चीटह

## अध्यारमगीता अभ्यतर फहता त्रण त्रेद, अने हासादिक

पर, एक मिश्याच ए दश, अने को मदिक चार कपाय, ए चाँदह मनारे अभ्यन्तर, अने धन, ग्रान्य, क्षेत्र, वयू, ऋषु, सोवन, द्वय, चडपय, क्रुप्य ए नव प्रकार बाह्य परिग्रहना अने आगले चौटह मकारे क्यो ने भभ्यतर परिग्रह जाणना एणी रीते वाय अभ्यतर थडने त्रवीश प्रकारे परिग्रह रूप गर्धाने भट पहता है तेहने माधु सुनि-राज महिय अने वली साधु कोने कहिये ? ना के, तत्व अभ्यामे तिहा साध पथ पटले तन्य बहता पोताना आत्मतन्त्रने निपजाययो। अने अभ्यासे कहता तेहना अभ्यासने पिष सन्भाकाल निरतर पणे जेहनो उपयोग परी

वर्चे तिहा साधुपथ जाणना तेणे गीतार्थ चरणे रहीने पटले तैणे कहता ते कारण माटे गीतार्थे मुनि के चरणे रहिजे अन एहवा गीतार्थ मुनिना चम्ण कमण सेवा थकी ब्यू नीपजे ? नो क ग्रह सिद्धात रस ता छहिने

अध्यात्मगीता

ण्टले शुद्ध कहता निर्मल यथार्थ नि सदेह पणे सिद्धान्त कहना एडवा आगम सबवा या झान रस प्रते चाखीजे अने वली ए मुनि केटवा है ? ॥ ४७ ॥

श्रुत अभ्यासी चोमासी वासी

र्लीवडी ठाम । शासनरागी सौ-भागी श्रावकना वहु धाम ॥ खर-तर गच्छ पाठक श्री दीपचद सुप-

आतमराय ॥ ४८ ॥

१९६

अर्थ -- एटले श्रुतअभ्यासी कहना श्रुत शानने अभ्यासे करीने यथार्थ स्त्रसत्ता. परसत्ताना भासन रूप उपदेश कर्ता, अने चौमासी वासी स्ट्रांबरी हाम एटले स्ट्रांबरी

ग्रामने निपे चौमासो मते वसीने ए प्रथनी रचना मते करी एटले लीवडी ग्राम फेहवो छे <sup>१</sup> सोक, शासनरागी सीभागी श्रावकना

बहु घाम एटले शासनरागी कहती जिन-शासन ना रागी, जिनशासनना जबोत ना करणहार, जिनशासननी उन्नति कहता महि माना वधारणहार, एहवा सोभागी सिरदार, यथार्थ भारत रूप आत्मउपयोगी व्यवहार क्रिया रूप आचारना प्रतिपालक, जिनशासन

अध्यात्मगीता १९७

दीपात्रक, देव गुरु भक्तिकारक, एइग श्रावक पुण्य मभावक, ज्ञानचर्चारक एइवा श्रावकना वह कहता घणा, अने वाम कहतां वसवाना घर मते जाणगा श्री स्मरतर-

गन्छ पाटक श्रीदीपचद सुपसाय प्रटेखें व्यक्तर गन्छ भभ्ये खपाव्याय श्रीदीपचद गुरुने पसाय कहता प्रसादे करीने, देवच्छ निज हपे गायो आत्मराय पटळे तेहनो शिष्य

देवचन्द्र सुनीये, निज कहता पोताने हपें करीने, गायो कहता सम्तन्यो, अने आत्मराय कहता आत्मराजानो यथार्थ पणे आत्मिक

स्वरूप मर्ते वखाण्यो ॥ ४८ ॥

अध्या मगीता

आरम ग्रुण रमण करवा अभ्यासे। शुद्ध सत्तारसीने उछासे । देवचद्रे

रचो अध्यातम-गीता। आत्म-रमणी मुणी सु प्रतीता ॥ १९ ॥

अर्थ -आमगुण रमण करता अभ्यास एटले भारमगुण यहता आ माना झानादि अनत गुणने विषे भव्य जावने रमण करवा

अभ्यासे, एटले तेहने त्रिपे रमण करवा ऋप

अभ्यासने अर्थे, अने शब्द मत्तारसीने उहासे एटले शुद्ध कहता निर्मेल अने मतारसी वहता आत्मसत्ताना रसिया, एहवा साधु मुनिरान तेहने बछासे देवचदै रची आत्मगीता पहले

100

अध्या मगीना १९९ देवच्द्र गणी गीतार्थ मुनीये आत्मगीता कहता

आत्मगीत रूप शिक्षाय मते, रचि कहता रचना मते करी ते रचना केहने अर्थे करी ? तोके, आत्मरमणी मुनि मु मतीता एटले आत्मरमणी

महता जेणे पोताना आत्मस्यस्थने त्रिपे समा भते करचो ठे, पहता मुणी कहता जे मुनि अने मुक्तहता भर्छा तरह, मतीता कहता तेहने स्वरूपनी परतीत करनाने नास्ते

श्री मारवाड मन्ये श्री पार्छा नगरे श्राविका बाई लाइने सीखराने अर्थे हेतु उप-देशने माटे सबत् १८८२ ना अपाड वर्दी २ गुरुवारे ए यथनी वालावबीव स्प रचना पते कर्ता॥ ८९॥

सर्वेगामा जे सरदार । तेहना गुण ऋहता

